

यषियां केहरलचलंकवारी नृकटिमुवंकवा
 री आपननमयंकपेदपंकवारीपंषियां बांहनपृ
 नालवारीचालमोमरालवारीकेहरीउमालवा
 रीकिरतकालषियां कीरवारीमारीपरकेसर
 कीषोरवारीमोरवारीवेशरमरोरवारीअंषियां
 ॥ गीतमालोरबोरो ॥ आप्नियेवांकीचमरोक
 लो ॥ कहिउपमाउरलशोपमाकहि। बलेअनन
 यहीयेविचारमालोपमउपमेउपमाननुं। धुंधार नि
 रणरमनोपमभर। १। रंजप्रतीपअनेरूपकसुं।
 ओजषलेपरणमउलेष। संव्रतज्ञांतमंदेहमपक
 सुधावरणहेतलषज्ञांतविशेष। २। बिकपरज
 अतकेतवविषयुं अगदअपकृतवकप्रकार।
 उत्प्रेक्षावेचलरूपकदृश। अक्रमवलमबंधउच

राशिनेष्कमोऽत्यन्तातिहितनल। अतिसय
उक्ततयातविधएह विपसा मुनवनउतरवृद्ध।
सनाये किपरयेष्यमनेह। जलजोगदीपक
मालातिण। दीपकवृत्तगिणदृश्याय। निम
नमालानिरेणुं नलवितरेकसहिततयाय
वनोक्तिवृत्तवरणीजे प्रकृतेऽन्तरिक्षे
प्रकाश। अपरकृतपरयेयाऽप्यंशु। नतनद
प्रकृततमकृतेऽप्यंशु। ५ परयायेहिमाजने
५५७। व्याजकृतिआदेपदवाण वरणवि
रोक्षनामविनावनउक्तविशेषवृत्तमन्त्राण
७। अमकअयोगतनेहविषमयम। अपरवि
चित्रअधिकअधिकार। अलषअनोमलंक
त। ओपेयमकेकविद्यायातसुधाराणकारन

मात्तरेकावलीक्रमप्रगटैसास्मदापरमायापर
ब्रह्मभुवतंसमुचयवेवाकारकदीपकमरलक
हयिष्युज्वेसमाधुप्रतनीकहृद। काव्यारथ
पतैर्विमलकथ्य। काव्यलिङ्गार्थान्तरनामकं
लवणैकिं सुरेश्वरशास्त्रजोक्तं लवणजि
तं प्रहृष्टं लवणं विषं हवेदेव ह्येव। वरण्य
वंप्रभुं प्रवेष्टवजं वं चनां मुगलं कृतवम्
रतं लवणं जितं हं गुणैर्लवणं डोरं जे अतद
गुणैर्लवणं प्रवेष्टवजं लवणं मोनहृदमउ
नमो लवणं विषं अत्रुपा। १२। गुणैर्लवणं प्र
पहितां हं गुणव्याजोक्तं गूढं कृतं वेष विनू
ताकृतं कविजुगत्तवर्णं लोकोक्तं विनू
कतिलेखं १३। अथ कमुनावउक्तिनावकवम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नीयमसुं वेधेतालं कृतवरं ॥ १४५ ॥ जातं अमुं
कप्रयिधं अमितजित विपरीतालं कृतं स मुत्र तं
। मुनिधं माहृतजगत्सिरोहे । कवितां ध्य
प्रकाशकृतं ॥ १४६ ॥ जुगता जुगता अजुगता जुग
ती प्रेमजमकबेका अमुप्रां प्राधितलां रा पुन
रुक्तं वरुणा वक्रं उक्तं मन्त्रं मेवास्म ॥ १४७ ॥ वरु
पदनेग श्लेषवक्रो गतिः । उक्तिवक्रपद श्लेषः
नेग । मुधवक्रोक्ति का कं मुणजै । प्रतब्रमृतो
पमवक्रै प्रमंग ॥ १४८ ॥ हेदृष्टं तं अयमविकलपद
दृष्टि मिथ्याध्ववत्तलजिमान । बहरांतरमुजा ।
नका बिऊं कै ऐकानं कोतरहे आं न ॥ १४९ ॥ वय
तयमभ्युगतांगतवयतो । प्रश्नोत्तर इधकार

प्रमाण आकृते स्त्री लवरण मय उपमा। निगुण सा।
सातने दुजोण १५ रम मय कर उन मान कंत म
च। सु न उपमान प्रत्यक्ष ममा ज। सब द अने अर
या पु त मो है। मंजव अक्षपल अइन ममा ज। २०।
सब द अर म सु अलंकार मज। नि ले आय के
मा व सुणे ते म ह म ट प्रकारां ती नां। मंकर मार
पकार सुणे। २१। आचार जांच नां उपजाया अ
लंकार अति पां न उजा म। बांका च म नाम द
ण विंश मु। एक लंगीत कहै अजीया म २२ इति
श्री कवि बांका च म कृत उलंकार ना नि नाम मा
ल मं हण। कन देवो सु म्पि सु मर व क पुर ह।
पि जो न रूप र ह च दे ल ग ल म्पे मां ग न म ब्र जु ग
आ न १ हे प स्वा के नो र म ज य ते ती म रे अं क

प्रतीपातंकार- जलज-

गोरी तेरे हृदय पर बिबन ही पान तट कं थो सुध
संगम रिउने हनुप न हतिय स्वान प्रभान कट
तजन तउ घर तग्रह त फिरो पीढे पिब तां न भो
चातक सुत ही मिषाव ही अन्य नीर मत लेहु
अपनें ऊठ के यहु धरम एक मेध सो नेहु
चुगत वकोर अंगार अति नम्र मकरण को
अंगः छे नम्र त हर मिस्वदुं तब देखें गै चंद
प नवराव सो जवाडिया रहो कली लामो य
उऊ लये तिसंग कियां काला किस विध छे य
हु काला इय विध छे य वि कि यो मे बऊ उमि
त मिल सऊन विबडे तिउ स्काला निश ७।
रजब विराणे वाग की छप तोर षरषात अप
ने कबु विगरेन ही अस ही सहाज जल ॥ ८ ॥

मिश्रितियमगुदे बडे श्कलियनिकमीध्याप्य
नकरपेकातिधरी ठेनमोतिदियोवतायदसो।
नहकिन्नजेनही। रूपं पजेनरोर अंबेमेपीतर
होरही कहंमिकरमिजोर १०० हृदयपुंष्ट
सुनटा। गुनअंजनवषबांन लग्नीपीतजहांज
गिहे जोवनपोरुषजोन ११ आरम्योआरत
संनारतनसीसपटाजबगुजरातगरीवनरु
धीरपांर कहंपटनाकरयुगंद्यरिसारपेधं
विशुरेविराजेबारहीरनकेहरपर थागतबन
जीबिबैबैहरबरकेठोरनोरुउठ आइकितप
दिकेदरपर एकपगनीतरयु एकदेहउ
धरे एककस्कंज एककरेह किंवारपर १२
होरितरजनकी कम्महरी यय १३

नीतो ह्याही तें व णे गम्हर काल ही कि रे हो
तर त इ के तरे ले त मा ल ती वं प्रे ली कं ज वं प क
रे ते की धूर को वि षि यो रे संग सां स न व जा व
त ह तो जा न कै अ के ली मो ह कै श्री व न अ यो
सूर ए रे ए मी र तो ह नै क ह न आवे पी र पै व
के क ई व न ते हि य र क र त झ र ॥ १ ॥ व र य त मे
ह ने ह म र य त फ र य त अ ग र जै से ज र त ज
वा मो हे क हे प य त क र क ले दी के क द म न पं म
धु प न का नौ आ प म ह त मे वा मो हे उ क्ते ए ह व
इ म ज ता य दी जो मो ह न कौ ब्र ज यो यु वा श्री ।
न यो अ ग न अ वा मो हे पा त की प प श्या ज
उ पा न को न प्या श्री का हू प ति त वियोग न के
प्रां न न को प्या श्री हे ॥ ४ ॥ पो ढे जु प ढे दु पा व वे

दीदुक्तं कर्मकर जोगध्याननहीधरत ररतपीय
निरंतर लहस्यसीना जमदलतिलककिं हकार
नहृकोपकित्य धमप्रजुलहिलुजनलमहियेमे
नमेगहरअबलस्त्रि१करतकिलोलकं हृक्म
ऊवन्किमेकरमोर मानुसमिनिक्मेमहृदु
कयकवारलमोर अहिलेपरिरंनरंनपर
मिंमविराजे मिंमउपस्त्रमदमदपरगिरवरत
जि गिरवरउपस्कमलकमलपरकोम्यज्योले।
कियलकपस्कीरकीरपरमृगहृज्जोले मृगउपर
विमहृधस्त्रेमेमनागतापररेहे कविगहृकहे
हिरायहृहृमनार एतोमहे हृमपतश्रीगुहृदेव
ऊं पांचदृपतिहृपरिच्यार तीनमंत्रयेमनारया मि
मयुतएकदिशारमवेइया॥लोकलोमगरे

12=

वेक=

अपमार्गवातनलीबुरीजाननपाई ^{हमैक}
 निधि^{पपर}सूर^{या}नाहता^पषं^{मि}षं^नकीअधिकाई
 चंचल^{होना}हृदिनिकैमुषं^पअवलाचलपद्मनि
 कुंमुषदाई। केमवपावयकालकिबैंअवि
 मे^{वेक}महिपतिकिवऊंराई। मोनामेशृंगारवै
 रनीरउरुषारथमेंकोमलहियामिकरुनास
 रवषानीयेंआनेदमेंहाऊंरुं^{रुं}रुं^{रुं}रुं^{रुं}मेंविराजे
 रुद्रपवित्रत्सजहांतेंग्लानमनआनियैह
 चिंतामेंनयानक^अअथाहतामेंअद्भुत^{रुं}रुं^{रुं}
 याकीअरुचितामेंमोतरसमानियै९एहयुं
 वरसहैएहीनवनावरूपइनकोविचारकरैये
 इकविजानीये॥१॥ कविस्तउरजउतंगवारी॥
 मोतनकीमंगवारीसुरतनिषंगवारीरंगवी॥

गोतोवयारकयंहाहाककं पायपयं पिलंगन
 परिछ तंमंतोस्माजेपीयातमेरमकायोचहे
 मेंतोबालेवेजनारकामस्मरि ऊं एमेऊक
 जोरपीयाचारमेरोफारमये।आजकीअंधे
 रेणकहेकेमेनरिऊं मानोजुहमारीवातबोम
 रोहमशिहाथं०पंकडुरयिं०पकहेसोसकरि
 ऊं ५५मंगनगयोतोजाटनूपतनदयावरऊंयो
 रघनेजयिरीउवेपुकारपोरीया जिबुकक
 नामनमोअदनमंवदनमो।उजावतऊरोषेऊ
 नापटदेविबोरीया।उततेंगुरजनजाजस्तनह

५.
 जापेंतेरेरथऊकोमिथजनयोहेअश्वरव
 कहतमंगमंगननदोरीया।५५

अपमार्गवातनलीचुरीजाननपाइ ह्येकल
निधिसूर^{प्र}नाहृत^{प्र}पे^{प्र}मिष^{प्र}नकी^{प्र}अधिकाइ
चंचल^{घोष}हृदिनिके^{प्र}मुष^{प्र}प^{प्र}अवलाचलपयनि
कुंमुषदाइ। केमवपावसकालकिअं^{प्र}अवि
मि^{प्र}महिपतिकिवऊराइ^{प्र}ओनामेशृंगारवमै
रबीरउरुषारथमै^{प्र}कोमलहियामिकरुनास्य
रवषांनीयें^{प्र}आनेदमेहाअं^{प्र}रुं^{प्र}मुं^{प्र}दमे^{प्र}विरोजि
रुद^{प्र}पविनत्सजहांत^{प्र}हं^{प्र}म्लानमनआनियै^{प्र}हु
चिंतोमै^{प्र}नयानक^{प्र}अथाहतामै^{प्र}अजुत^{प्र}जमा
याकी^{प्र}अरुचितामै^{प्र}कोतरसमानियै^{प्र}ए^{प्र}एही^{प्र}युं^{प्र}
वरस्यै^{प्र}एही^{प्र}नवनावदूपहनको^{प्र}विचारकरै^{प्र}ये
इकविजानीये॥१॥ कविस्तउरजउतंगवारी॥
मोतनकी^{प्र}मेगवारी^{प्र}सुरतनिषं^{प्र}मवारी^{प्र}अंगवारी

विबिंबाईकोटमारतें। धा। दृष्टिजगोरीजोरी

गुलाजअतिपेमस्मयोरीनोरीतोरीदृक्

५२० नेकेलाफलीकं

कंकीत्कनिहारतें। पिचको

५२१ लांजीजगयोसां

५२२ एकजंकरताके

५२३ जिनेमि

५२४ सुकमारज

५२५ मेंआनू

५२६ पपार

५२७ रुजप

५२८ मोने

५२९ अतिपी

दिमाविदमानतेजानअकेलीगरजफरावत।
दिषघटाहीयजातकटाअरुजोरघटापनने
रोघटावत। कपुंकरकैउबरेयजनीनिमवाअ
रतेधुखाधमकावत केसेकरोमनप्यारेविना।
अबजेवदरम्वदराहदिववत। एकवितःषेज
नलोषेजकीयेजुंजकीयेउंजमृगपस्थेहंविह
तकहुलजनीविहारीको। घनेउपचारकीये
धूमतेहेघरीघरी घायउकीयोहेमनमोहनमु
रारीको। मुनहेमयंकमुषीआजकालघरी
पउलागहेकलंकतोहिकारुदेहधारीको
अजुंझंतेरेयहनैननहंटेकआलीविजोक
वोप्रियायोकिधुंजोकवोकटारीको१ हंटाव
नचंदषेलेफागअनुरागनस्थेसूरतिसक।

[illegible]

रीसाजवारीवमेपेरीअंवीयांनमेंगा॥ नारी
चतारेकोवागिवमोवाकेहारविराजधराधर
को॥ नुजफंदकेसंगगजाकीउचागजमोह
तमिंगकरंगनकोमुलतांननुथानमुमानन
कोअरुषांननपांनधरनकोननारीविचारी
देतारीहृत्ताउनहारिनित्यारमेरीवस्को॥ नाम
गलेमिरपागजटनकीरागअलापआसाव
रीगवे॥ अंगअनेगवनूतफैउरनेगभुरं
गधरत्वगेवे॥ अंबरकोडवधंवरउठण
तोरणआनकेनादुक्तावे॥ देषयवीयह॥
गेरेकेउलहवैउचडेवरमाहकंआवे॥
जाकेधनधनधररेकेपानसापहसापगले
लपटाये॥ वैलचडेविषलमुअरोगतलथ

कहा अविदे रुं वजा ए हाथ मे वपर ओ द्या धं
वर पार ब्र वि ह्न ला ज पचा ए आगे तो रूप के
आगर हो वम लागे गी दृष्ट व भूत लग ऐं ॥५॥
जटा मधु गंग व नू तिय अंग उमा अस्वंग दिगं
भर की । इगती न वि प्र ल ग ले मूं माल विद्या
वन वा जं वा घं भर की । अरु गाल व जा य नि ह
न कौरे हर ता प हरे ज म कं कर की । जग दे व न न
मत ऐति क हं ग त को न ह्रे वि व म क र की ॥६॥
धि ग भु भुर ल म क न क त न पा ह न म व परि वा
र ध न चं ह न मि लिय गिरी अ त क म्पा श्क म्पा र
॥१॥ चं री मो ह न भैं क ह्यो को न ह्मा रे ना ग म्
व व न ह रि मो न ऊ गे तो न ह्मा कियो मु ध ला ग
मै व श्या ॥ जा दि न ते प र ह्म ग ये पि य ता दि

नतंतनबीजतहै निम्नवासुरनोरसुहायन
हृइहंआवज्यामरतीजितहै।अबजरन
कोयउपायहमेचामूरतविश्रमेंदीजतहै
उनशीतमकीउनहारमषीनंलक्षमुषदेवर
जीजतहै।अध्वअष्टतुशोपमाकोदाहण
चषफपरमविधुममवदनधनुसितीरद्वार
कीरअरुनबिंबमितकिएमेवृमनमीयु
तलषनिरु१कवितमनोहरःअथअष्ट
तुशोपमामयीयुक्तव्यतिरेक॥चषफपर
मपरपानयअक्षरआपमुषविधुमोपे।
निम्नदीहबिंबबाजइधनुमीपेचवनाव
वर्णओतिलकमरा।बटेविनघायलकरे
पेंइमराजइकीरबिनुवैचनस्वनाममोह

र वरयकतपायतालाविलंद अगजीतसुतन
 नरलोकइंदु मिश्रुवेमवकलतपबलमजेव
 परचंद्रमंद परचंद्रमंदकरहेमपाठ ओहटा
 यदीयापतसाहआठ साहुरांजोधजोधमंम
 थ कटहनेचणमिलपेकमंधु किलमोणमी
 इकमनाकीध दृशवाणपाणजमहाददीध अ
 तमालकोधदेवेअताल महमंदसाहदिय
 कतमाल पतककममदकरांषांनपेल जो
 कीयाप्याटजुजजारकेल बाजीदनांजिषग
 जलाबोल नीबटषगदंटेनारनोल धडका
 आगरोदिलीधक सैहजांपुरकाधे
 साहंधरधंकलकरमंग्राम टपध
 लमिंधनाम बाईसीमोडेमहाबाह आवीयो

दालीवोरुमहृथाह हजरीवारपायोदिलीमरे
नहेलापरक्षारीम चहलेषाटमजनयए
नदरगहृमाहपडीयोदरोजरे तदृक्वेथा
जलमीनताम बांदलमवालोअंबषाम।
केषांनवीबटेएमत्तंततारनगहारतेम
मंगपेबिमहाराजरंग उदिगयाबाजत्ररा
गनेजेमतावनिजरंनुवा जरोहलंअ
जांहरस्याल गयणममीमबिलतैगम
किफतेआवीयोवियोमूर गजवांवंचाय
मुगलगाह मादूगिदएकलदिलीमाह
जालजागीयोकमधुतीर आगियादेवेनू।
लओर अनमालतणम आबएहवं
लेनवेह जांकरीबंदगीछयजीम बां

दीया बगस दोलत अरोड इंसो गरावसां
रअंग दलस जेजे एघेरे डरंग घुण
तोफ चऊंतर फघेर डरण भांका दियो त्रास
र लडि अणतर हिनागां एलीधू ६५ वांण बंध
नां पेटे दीधू जोधरस ऊबो हवलस जाय पो
तेज देष मोहल गपाय नीसां एघोष करिअ
मल नोष जोधोण करे आणं दजोष कुरमाण
दिली पत दीधू फेर आवीया सत्र जारण अजेर
सुरतां एमीर बगस सकां म निज तेण बांन
बोरां सनाम अमरसुमीर लेवल अयाह यां
महोमे। लीयो पातयाह जिण करी सलामां
अजेम आदाव वजाई दामे अम हलीयो प
टाकरतणी हाल मिलीयो अस्य पत सोबीयो

कां
ताव
यो-

माल मिलिपातमाहबोहृदयेमाल महिप
लीपुणबिबअनेमाल४०कमलाधरबिब
तिहितकीधदेयोहुरमालजूहारदीधअनमा
लांमाहवेमिलउजाम ऊगवेधूरजअंब
पाय ऊणघटेवधूरणमेंतेजकाय विधमा
चवातकविकरवताय मेहमंदमाहसूरजमा
हसूरजजेवरोअनेमाहउणवषतषवरउ
जरातआयअनपतिअमलदीधेवठाय
मरहटांकीयोमिरविलंदमेलअहमंदवा
मंनियोउवेलसुणमाहपांनफेरेमताबनर
इंदमैवैहाजरनियाबमहिपतअमीरअंग
हीणमाणपांनदिसधरेनहकीयपांणतदते
जवाननरमिंघतायअनमालपांनजीधाउ

गय बुधलमजीधूंवीरवेत मिरविलंदबान
माऊअमेत कंमधुजअरजइमधुलोकानमे
हमंदमाहलगेआसमानआफरीवादकहि
अदाव मिरपावमाहबगमेअताव लाषांइ
बतोफांजुंदजार कंजरअसबगमेअगकदा
र जमराजहराकरेफतेफूऊ तपतरीलाज
महराजउऊ कहिपातमाहइमविदाकाधु।
उऊंरहबाहसबासदीधुतदहलेविदाऊय
धूंबतांण जलजेमउऊलेममदजांण वदेव
हकीयाकटकशूर साववांलीयणधरमहामू
रगाजीयानगारगेयणगज नीमीयाअेवा।
कीगयानाज गेमरांइमरांभुइगेउ तरवरांज
गरांदीधुतोइ लोहरा लंगरांकाटलागअंध

वरं ऊँ ह्रीं श्रीं नमः ॥ १ ॥
कृष्णगिरिदेहेनाजकेटहृदयेनदी
ताम्रशृङ्गाहवाचौगांनघासउदग
धरतजेध्याय श्रीधजां देवडांतल
चालीपकोसहेजमवजाय जालीम

प देवडांनडांतायेदवाव श्रीरौहोपरवि
विचार आबुधरधूजेगिरिधगर अरिमदति
लजमातईस सरदेजिमध्यालैप्रणश्रीय
तांलीयोराजसरबदताय जांलीयोध्याज
अरबदजाय कदमांलगिनिजरमलांम
कांधं मंदनिलरावउमेददीधचंद्रवदनत्रि
याध्याधीनवाहि मवरीकजायाताबीनमा

हि असिद्धमदेषानकरीमअपाय पातणउ
रलगेपठोणपाय जिणतामअजैलिणीया
जबाध नगइदिगकरेलडवोनिबाव षगा
तोलेबोलेविलंदषान प्रेऊलंपदताआम
मान लिषीयावतधिषीयावषअजाव अ
राकताकइयांवेगआव विलंदरांमलिषी
याववन वावीयांथय चोत्वन धुंधली
मूलधिकनयणधे परणदृष्टणमह

वितालभ्याग ८० सुनिशिधं पलकमिलगिगन
वेह मंढियो औमेदपुरअगनमेह अतिबूतगो.
लारिल अमेल नचलपजाणसरेनवल मल
तलेयावरतनदीमाहि कलकलेनीराजिमधुत
कडाहि हटतावपहलंवाजार छट परजेले
मेहजधनंणकपाट बाचरागयणवधसूरको
ट कांगरा अमारजुपुरजकीट नगधरं धूंमरंग
उनिराट धूंमरंग उंकेउं निडजंघाट बूटापरक्ष
राअतबबोह बावनावनणरा लयण बोहज
यतोपजाल अममोनजाय उहतानुजंघाध
रपडेआय मतीयाय वरअमंमतयस्याम
जिररदसउ आमो जमाय सुदधि
बंभियोअंशमधि

मकीयोकोधन लबीयोमीह दावानलदम
 लसीनदीह विलदनां अनेतदकरविचारवे
 येदिनलिषियायंमीचार जाहरांतेणुंअब
 जिहंन सुटहउअमीरमिरविलेदषांन लि
 बीयाषतत्रिबीयाजुजेगबेह तेलिबीयाकर
 करदीयातेउवाडीयाबालफुध पहलकाहि
 मूशणहंतकेवांलमाहि ऐराकबकदेव
 लअक्षर पांमणहंतयांमौ पक्षर ब्रदितो
 पबलदरनहअब्रफितरवारबाहदररिर
 रजि ऐरांनउतनहोमत अथाह मिरविज
 दषांनमिरवाशिवाहसांमहोनहजेयहेमर
 क्रोमरोतजालेसेसनार तुंतजैमांलदिलक
 रेतंग धरप्रबजीतोतनुंधीरउजीममाह

आजणो जीतवं वक झरिउ तेवं
 हयावनर दीधुतो फेलेन पावम महर अफो
 ताहरो विलेद गिर मेर तोल वल्लेग पकड बोअ
 ढनिबाव हाथीयांचडे उदुबो ह्याव सफि
 कोटनो माया जुधम ऊय अनराव लडे मजि
 भित आय पदमणी दिली परऊं एरीत मा
 जादा नूरा हण मरीत सूरमा लेंदे चोदे संचा
 विगमां धेधे पडें विचाल =
 रओट चापडे अवयम येर ओट वरकर
 रक करि जंगवा ज आव
 मांनें मवय ए जो ह्ये मुंजि तीज्जां जंजिरां पां
 ह्मि नेज हां करे दस्वे मेनेम पीज रेज
 रतो ए पेम जो अहर तिषीया एज चाव

धीयावाचीयाश्रवनिबाब करबुटाखांण।
विलेकबांण बोर्लियोजहरउहकारबांण
पिंजैविलंदरैऊनापार मारकाजोणनल।
काड्यार लागणकमंधराक्यणउग ऊन
योजोणप्रितमिंचआग कीपीयाकीयाऊण
कुंतकार दुब्बियापुंबजिमकातहर नबी
ऊणयपिपीरनांमप्रेहमेछ्मलीहरजरदु
अमंम विलतहफिलंमआनध्वजयउ
अवारऊंबोगजपीवआय गहकीयाश्रव
होलागदूरत्रहकीमात्रंबैराकदूरव
हकीयानहरधरचडेवाक नहकीयाक्रम
हरवाजिमक २० धरकरणमंनलोकेवा।
अंधिनीमरेयोकिजेकपाटनांवि धरिमेहर

तोपषां नाम्नाधीर व्यापीवैश्वरं नीगजजंजी
शक्तिफकिरेणीतीयाप्राप्य हृद्यनातिहृवा
इवांण हाथ हृद्यवपतांणतरीयतहृजाय
बोरेहं हृत्तणमिदं तु जाय मूरममिष्वेह्व
उममंध बावरीवंगाली त्वजेवंध उजक्का
ऐरांणी जे उवाप च गथाची रांणी हृद्यवप
वेहृजी मयजमं पुषकज तवाय शोभा हृद्य
हृवणी तममैरमम मरुफरांणोणनत्तांणमि
ज फरहृरांणोण अयरांणकोज वीरांणमृप
णविध्ववणंय आरांणमृपमनपुषआय
पुषमृरांणमृनीममंनजुनीजिमडलहीउह
जान पुनीअकायविबअममंन श्रेणीमज
विरतोवितद्वान जानजीकोजमृगजीमजो

करदेदीसतादसहरजोर इमहजेवेतमनुप
 अमय विषनपीउऊडी हतवध अरवकि
 कपिसदीउवार पारमकिंकहरक पवार अरव
 पपैयाफीइतम कावलीगुमेनरीचाकिलम
 डुरमांणसंणवण्णं अंत जेरववहचंणं तण्णं
 तचवचोत्तमानविकरातवुंच कलवातअण
 द्यणत्तत्तुच रेमाननिलरयीप्रमरमप्रचीत्तं
 विमारनाहटवममसारकाक्केटअत्तकमनं
 नमारकावहादरमुमलमोन पोसाकमिठह
 अरकहरगिहकंधडाकपोरमगहूर
 विवेकवाणं मूयांणवध असमांणविबेरसां
 णअंधचषमचीनीरवेधेचकामउत्तताजुपं
 विवेहेअकायरीजेणत्तरमुणरमारंग जम

हंतकरेबीजीयाजंगपीजायनबीस्कसुरहपं
न नवजायअस्थनैसाज्यांन वणजेमलंगरांबेध
सोम प्रदकरांवेधनांवेमरोडकहरीचषजुरराकहि
काक बहरीमुषजुरराउही बाज मिरविलंदऊले
तुजजारमार रुकलेइसावायतहजारआवा
तांदेवकहिवाह २ इमकियामारवांमनउबाह व
दलांकनकरांगंगवार धूपरांमंजराउजबध्मद
निजेंसोंगीतामहस्रनांम पढ गुमूतांमकरेहेअण
मदेहजांमहवोमसहंन मारवांलगांनुजआम
मांन चौगुणअमउहणावगय ओपीयासोपुणे
जोमआइ बुधसैंहस्रगुणावतमिउजातमन
लेजकांनुत्रिणमात श्रीकृष्णजेम
अममांनदिगंतोलेअक्षर

लिगार ऊपदिपदि जुध कितावार मनरीऊ आय
तो दीधुमाल नाइतां कीधुकेतां निहाल तनवर तेक
लीकलस तेम जुध सीस सतिना लेखे म सांम
रेकांम एहम्य श्रीर सोमरेकांम हनुमंत वीर बीव
रां हाय बाण सषास वैहती कजां एरो कीवनाम
सांतरा इणी करक मेल तारा कऊबक बैजां ए
तेल १५० हतर राउ घाडा अंतक दोत चूतरा मुर
डातणी नांत ऊबजे उताव फाडस हरे मक्षव
डा आगरा चषां केम तावडा अंजन नमिण ता
य षां घडा अवर ससूं न चकषाय अनपतिज
व- तीगोर वजेम तैरे सषां वोर पंथ लेम डत कैसर
आम वचूत दीधु कंथान वरेगी मिलह कीधु ज
मि आम बंधे डीज फाव आवधं वीर स जुत

पद्मास्रणाम्भलजोगहर कोधमेंकु

जोगमेंधुनिवडिडिहजेग उमु

उंशनिरमोह्यंगवीरांलमिलेधीगवेलेद

। सोलफैलदीतानरेद जोयणंमरीरंजोतजग

वरीरांभसानलाग जुंहलेनारेद्वरत

जोगेंदजालेलेजमात लांधीमृजाद

धिलहरलेत प्रांधीबंक्षवजीमावीरवेत भूड

कोधपरचंभूप जुजमंभअमिब्रह्मंभू

व पेवायापराऊरड

तामसअशामलचूपतामरावलजुभ

। राम कारणोंमेहरअमिआपकीध

उवजकमदीध ऊरीयाउरंग

नागंउपाह परलगेजंलउनीयापहाड भयमोरे

धरणकुण्डलहयधर कयप्रमेकमतरजअंध
कार तिणवारहहोदुतदुगेतोफु अणपारम
रघणमारओप उदितलांछमंगिलांअनेक
ओलांजिमंगिलांरीत एक १०० मरहेमरगेमर
नरठकार परफुधिरननीजे छवे पार के मर
मं रइकवास्कीध ह्यरीविलेवाणनदीध
जोधरांनकरीपतकजेज तोषांरषदियां
तिस्रतेज पदियांकरधरांजहरपाय इंदरा
वज्रकोहीकआय किउकारवीरवाणीक
हक हउकारबिहुंनउवाजिहक धनंष
रंकारनलंकारओह उतकारमारअण
पारलोह अहंकारअगीअनमतअमो
नषउवारउतीशिरविलंदुषोन तपधरर

म्रिमलियारतेम जेधरपीरहलियारजेम ति
 लवारुकाकोमुवितीर उद्विषागभारद्वरां
 मोर घट्य तांपारबेवारधाव नलकारक
 धिरपिचकारकव लुब्धकारपेयकबुजंज
 डंत मोटतांपारपुरजांपहेत ह हरीज्वार
 रिषगणहृयेतः वणिधोअपाररिणबेव्य
 त अमंवारचरेगमूरजंपयावतिलवारयु
 धमणिचक्रताव बाकीयावीरमधुभारव
 क नंनंनंरवजिचंफलाक रंजारदूरमि
 लंकरेय्य तिलवारयूरदेषितमाय नन
 तारणांनंजेकारवाच वृत्तकारकरतततक
 रनाचे संधारकृतअणपारयूर हरहा
 करेवरसंनकूर गलजारलियेपलचार

प्रीध पत्रधरसक्तिनरकधिरपीधमेजारजुडे
धिरदारसूध जिणवारगजां असवारजुध येग
जांसीयदेरिवपयाव घणै अज्जीमीर जांकरे
घाव २०० आपरी वार सवेअमीर बंधवांधी
किक्कामहवीर रांमायण नारथतेणरंग जा
जीयोअनाश्म विकटजंग गंतजोद अबर
ज्जुलारगंत कदमां अय्य उवरभा लकंठवं
नरैकरैग लबाहवीर नीऊरैरु धिरजिमम
अणनीर रिणफिरेचांक वैत्तरंग अरक
चाकंगैत्तल अंग लुडपडे किक्कामिल अया
यजांय पीवर मृतवाला कोकवाय बोस वि
अमाडे रंगवाय अरधंग सहितमिवष।
हाअपस्य गायणिजेममिवचित्तयहां एबा

चलोवेनयणबोण कालीदेतालि रहीम

ह्यबहरीजोगलतणेहाथ जठउमोपुरठ

चढिरीमजाय पडईमप्रतादेतेणपाय धरहैरे

जटापुलिगंगधर मैमहायंधिरसुरसुतमंफर

प्रऊलेवेगमांछंमूंपात जमनांजलकाजल

वैहेजात उलवारहवैलीतीरुआय जुआरऊदे

मैमोषजायमोहियारिषासूरंममाज रिलय

योबीयोतीरथराज हउकारगजांपरवीरहक

केरिमंभूरपबैकजाक उरिपडैयोगराधरा

आंण जनमैजज्जागरानागजांण हाथियांदाव

पगधरहकारमीरदांजंगीहवदांमंफाटधडजडे

करारीजवनधंवनटजांण किलकिलेचोटांय

धडजवनपारगजधिस्रधंरआंणइकजोग

एनजअधर ओममातेण आवेनओर गणप
तीरमावैजाणगेर २२० वलिसेलधूमोडा ५२५।
वाट घेडा नडकुटेउस्यघाट लडिपेढैकुटेब
कडाकलोह बडिपकउजैडेजमदुढबेहेहु
हीयालविढैवंगधरकाट घनियालफजरग
लंकघाट रंगवरंजोमकुयलालरंग कातर
पोमऊमेवरंग ह्दणवरंमदेमजिमउवृंतलोद
णकबूतरजिमउटंत मंतरकालजाबुरंमार
जराबंजरांऊवैपार कालैरेला लैरेजीनकैक ह
कैरेमाकैरेसूरहेक पडबुटैकुटेधवरुधरहर
सुटेजूटेकेईकिसूरधउमेलेषायातेगधर मा
यामुषबोलेमातर धिनररविउवैरधउररा
उमुगलझकरेराड नेसुसअवरवरतेण

वार हरंवरवरीयापंचहजार शुभपालचढण
 चौजीसमाच असवारहथियांतणआतव
 वादिलेसनागधस्वमीर एकमोआठवावा
 मीरधडबीयापुगजांइतांकार पेदजांहेदज
 नकोणसंगोविलंदमदकरनगयपोहउने
 नाहुरफतेपायनेचतवजायजतिनारिंदवि
 रंदावविजंदरीजीयांदीयकंमधुजांराबसा
 सलंगजांजाषांपसाव सुणफतेरीजवेइम
 दिलेसपदकरहुवारमनवारपेस आहरान

२५
 दहीगेअनमलविकरतोर दलदवणीन
 २२६० दीनकंयआमरीवाक्दीध

ऊँकं दृषणं लयाददीक्षत्वाय दुराणाय
द्यूलदृष्टिषाय दुराणाय दुराणाय दुराणाय
ज दृष्टिं लयाददीक्षत्वाय दुराणाय दुराणाय
तियां लयाददीक्षत्वाय दुराणाय दुराणाय
यण वांकादुराणाय जीप्सी अदुष्टपयणाय
गवली के दृष्टि लयाददीक्षत्वाय दुराणाय
पां पयस्य वंतगीताय सच्चिरलोकष्यांत
गवंत च दुराणाय लयाददीक्षत्वाय दुराणाय
दुराणाय दुराणाय दुराणाय दुराणाय दुराणाय
प्रकाशं युजराजकाम दुराणाय दुराणाय
गरनाम महाराजनिवाजस्य उचमल क
राजरीजकहियेकरल जपां आसीय
मजोद कायम अदुष्टपयणाय दुराणाय २७

ऊकं म दषणं लयाटदीक्षद्वाय सुरसो लया
टयूणदहउवाय सुरतां लग्रहणमौषण्यक
ज दईविंण अनाऊमरधराज जमकरे एमड
तियां लजाप मेहरां लजेम गैहरां लमाप दावम
यण वांकाऊरं म जीप्पी अजुं वृषण जंग
गवली केइहुण बकउयाव पावली केइलि
वांपमाव वंतगीताम सप्तिरलोकव्यांत नी
गवंत चतुप्तिरलोकनांत इण विधुउजमरी
हुण अपार सूरज प्रकाशरी सतमारे कीरत
प्रकाशमुजरा जकाम वृषग्रंथ विरधमिण
गरनां म महाराज निवाजम उंचमल कमि
राजरी जकहिये करल जपां आसीम
मजे ५ कायम अना वृष जुगां फे ५ २७२

अभिरुचिः यथासं

अथस गतिचित्रः सिधंनष नां लकार

करी रंन हरि क इंड दी मृग विष

न ३- र अ षह लि डुरन शिष तव तरन

रूतां वीज ज जव प्रेम सरह निख डंन- कच =

वेना- वि क र गिर सरि ग्रह ग्रह वन

ति जंघ लंक यन हन ना ष तर

रमन राका कर्क मित्रो पिय कवि एर्य

मालीयीषममाहिपोषघलेद्रुमपातीयोजिण

गुणकिमजाय अतिघण वृवैहीअजो

सुदेह मनमोहिलागीमुगध निजआय

हवास्वधुकिमवीअरे माहाराजरेक

॥माहाराजदीक्षेमने हलमहलमेहल

अगताजीरेकलो-

लक्ष्मीजांफलाषट्पद कीधैराजीकुल ३ अहारक
 रणनुंआसियो बांकीवांकीपुत्र अपडैफुलको
 आवधि गजवी एकहायस ४ वंककलवातेकहे
 उलप्रगतचित्तआन गुरुगुमानतजिचलिअधि।
 मानकंषयनमानपंकवित्तः॥ विद्याजोकहंतो
 आरवेदकूकेजाननवारैनामजोकहंतोहरिन।
 ममहयनारैहे। धामजोकहंतोकाग्रजियोजे
 निरञ्जामानसिंहगुनकेयमंदचूपनारैहे। कवि
 ताकहंतोआजआपयोारिंजावैकोनसूरबली
 श्रीतमसुंलागतकविपारैहे गुमानजूकेनंदम
 नमुनियेपरमेरीतंडलमुसमाजूकेअखरह
 रारैहे॥ तमाधुरेगोलडो॥ अनाम
 मेगरीवरोषोलो मंजुवेप्रवाप॥॥

॥ नागरकनाइपेवालाचलआइआठवातजे
 हमारीन्यारीन्यारीचितलाइये। पानदे१ गोद
 लेह२ नाकनयहिरायमोतीरुपाननकीपातर४
 ऊतास५ प्यासपाइये६। उंचैसैऊरोषनबैगारिमे
 दि७ चलो रतवंतनाहरतसेऊजाइये८। नाहिए
 कवारि१ ऐसोऊत्तरसबऊनकैकेसुहाजोति
 हारीलालऊकंतसराइये। १॥ होतीपतऊरमे
 रीहोतरीयंनारआलीकोऊएकआंबनकोमो
 रलषपावतो। फल्येफलदेषकैसंभूलतो नह
 मेंईसवारिधऊंपारतेंपरेवाजिमध्यावतो। कोकि
 लान्नमरबोलसहितोनपरायेदेसकोऊहेक
 तानंतोहोरीऊकोगावतो। आजकालउनैदेस
 अवरेरुतहोतआलीहोतीवसंततोहमारीकंत
 आवतो। १॥

॥ कालनेण कसूर ओल बियारा जा अना दा
लिह कसरी दुर आजवणे आजमावत एक
विलः ॥ सोनाको सागर किधुं मदन प्रवीन कीने वि
धिनके आगे बुध लागत महुछे देवत बिया
को पुषर हुतन एको सुधन वला की जोवन आ
गे कर बोल हुछे एहो रज रंनि बोउत को कि
लायि वांनि धन नाग प्रां नीता के तुम महुछे
वा बोकर पी वोकर जुगान जुगजी वोकर देवे
कर दस्य यहु तो धर मझा हुछे ॥ आम्हू ह
कि नीर के तेमं जन सरीर नित झिरुन की धु नि
नित ताप वो विमेष के छे ॥ नैन के कटोरे कर मां
गत ऊं छरु मी पद दन की ये ती कंठ वीध अ
परेष छे ॥ वा न पां न हान तां न मग रात ज्यो हे सु

षप्रान्दानं होय गोनिधनं आपरेषते । साग
रं कं कस्यो जाय एकदिन इतं आयुः प्रेमकीर्त
कीरी कीर्तमाश्रयी देषते ॥ श्रीशुक्लं न वं उ
श्रीगणेशाय नमः ॥ तं नामिपदपरमगुरुकि
मंतं कमलदलनैनां जगकारनकरुनारनव
गो कलजा कैशेन ॥ १ ॥ नामरूपगुणनेदजे ते
इप्रगटतं अवतोरतिनविनतत्वज्ज्वां न कव
कहियुं अतिवडबोर ॥ २ ॥ उच्चस्थितं तनयां
सकृतं जायो वाहतां मतिनलगिनंदसुमति
यथा रवतनां मकीदां प्राश ॥ गूथनतानां मकी
अमरकोसके नोय ॥ मां नवती कैमानपरमि
ले अर्थमिव आय ॥ ४ ॥ स्वस्ववत् उरपीयके
निरविआपनी जाय ताते उपज्यो मां नहिय ॥

वलीचाउरअली आउरदेविदयाल॥१॥क्षमनो
म॥सदनसज्जआणरगृहगेहविस्मसंकेतलय
नधिष्णपदआसपदआलयनिलयनिकेत॥१॥
मंदिरमंजुआयतनवसतिनिकायस्थाननुवन
२०नूपवपनांतकेगईजदवसीजाना॥१॥स्वर्णना
मः॥कांचनअर्जुनकार्श्वरदेमदिरएस्फवन
अष्टापदहाटकपुरटसातऊंनदरिस्वर्ण॥१॥जा
तरूपकलधोतधुनिचामीकरतपनीयसुक्मं
जरीदनकनकमदारजतरमनीय॥१॥जांबूनीद
२१कीनीतअरुमानकगविस्त्रिवदेतजहंत
नरनारीसबकांइकुकिकुकिडेता॥१॥रूपानमः
६रूपरजतधुनिजातिरूपवर्जुत॥१॥रूप
कीगोसारतहंनूपनुवनतेहटा॥१॥उज्वलनाम

१५॥ अथ कथं पुरुषं विसर्जयितुं शक्यं तत्र
 स्वर्गं लब्धुं तत्रैव अथाकरुण्यदायैवात एतौ न
 ताम् ॥ १६॥ नष्टं न सौ नार्धं न स्वर्गं न परमाकांति
 १७॥ कदापि परतद्विन्नो न कीदृशं नूलतद्विन्नोति
 १८॥ किरणतां ॥ १९॥ अंशुगजप्रिमयूषकरं गो
 मरीविं स्वजोतिरग्निं परसिं सिसृरकी जगम
 गजगमगोति ॥ २०॥ मोरतां ॥ २१॥ नीलकंठके की
 मरुहसिं पीसि वंदिते इति वस्तुतवाहनं अहि न
 यमसूरकलापी सोऽहं ॥ २२॥ नावतमोराणो अथा
 विविदि अतदिनरे अमनंद विनविनजह उक्र एर
 हित्त्वतीरदनेदनेदं ॥ २३॥ सिंहतां ॥ २४॥ कंठीरवह
 रं केयरीं शुंघरीं कहरियस्तं शृगपतिं क्षीपीं व्याघ्रं पु
 निं वं वातवं पलनदां ॥ २५॥ सिंहं तपोरुषं नां नकी

॥५॥ अर्कश्च उपांशुरविसदं अर्कतः सितं अचदा तं
ध्वलं न च त्वं चिं अटा करतय दायो वात ए सो ना
तां ॥ १० ॥ जह्य न सो जह्य ना स्वर्ष मा परमा को ति
॥ कहन परत बवि नो न का सुर नूल तं दि वि नां ति
॥ १५ ॥ किरण तां ॥ ११ ॥ अं शु ग न श्चि न यूप करं गो
मरी चि वस्तु जो ति रश्मि ए पर सि से सि स्तर की जग म
ग जग मग हो ति ॥ २० ॥ मोर तां ॥ १२ ॥ नील कंठ के की
वर हि सि पी सि धं दि ले ई सि वस्तु त वाहन अहि न
पी मयूर क ला पी सो ई ॥ २५ ॥ नाच त मो रा णे अटा
बि व दि

हे त व नी र द नं द नं द ॥ २५ ॥ सिंह तां ॥ १३ ॥ के त
रि के य री शुं ग री क ह रि य स्तं भृ ग प ति क्षे पी आ धुं
मि धं वा न नं प त न द ॥

सहचरिपोहचीजाय अतिसंघटनरनरनिको
वाढीनईलजाय २४ अश्वनांमा ॥ १४ ॥ वाजिवाहउ
रंगहय सिध्वेअवकेकोन तरलउरंगकीटनीर
अतिनेकनपेयेजांना २५ ॥ हस्तीनांमा ॥ १५ ॥ हस्ती
देतीक्षिरदक्षिप पय्नीवारनआज कंजरइककंन
करीहंवेरमशुंनउरसुसिधुरअनिकपनागह
रिगजसामुतमातंग इतंगयेदधूमतवरेरंजतना २६
नारंगा २७ ॥ अष्टसिध्वेनांमा ॥ १६ ॥ अणिमामहि
मगिरिमंता लघिमाप्राप्तिप्रकोम वसीकरनअ
रुईसिता २८ ॥ अष्टसिध्वेनांमा ॥ १७ ॥ एनुअष्टसिधि
कष्टकरि सिद्धिलहृतसंघार तेष्टपत्रांनुकवारि
केहासुहारनहार २९ ॥ नवनिधिकेनांमा ॥ १८ ॥ मछ
पय्नेओपय्नेओति कवपमकरमुकंठ शंखवर्च

अरुणीलक्ष्मकक्षकक्षियञ्चैकदण्ड॥ एतवनि
 भ्याजगतोमं काक्षविरलेदीष सोयाबध्नतराय
 किं तन्निपारनिनीपाशमोक्षतांनारणमुक्ति
 ध्यभूतकेनल्युनि अतुनर्नवअपवर्गनिश्रय
 सान्ध्याणिपदमलसिधिरस्वर्गाश्रयमुक्तिरुज्जुष्वा
 रयकारकी महिषेयतविनुयोगेतेनृपनांगकीपी
 रसुकिपापतपांवरलेगाशोराजातांमातृपनरे
 संशान्तस्तुअधिपतिमहिपतिनृपराजापञ्च
 न्ननांनललिबेतेमन्ताह्यनृपश्रीइन्दुकेमन्
 शकशतकशशविचपति संकटनछरुल्लत
 केकिज्जोसगद्यहमयवांमातलिद्रुतं॥५॥
 जिह्नुपुरेदरपञ्चरआमेनल्लिपुपाक
 सहिजलो ॥ ५ ॥ सुपनांतलं केहेइंद्वराकश

दिवतानांमः॥२॥दिव्यमरनिजरेविबुधसुसुम
 नसविदिवेसष्टंदारुकाविवांगतिअनिजिक
 मृतेमाभ्रदिवषदलिषाबहिमुषगीवाणिअति
 ओपक्रवणदेवता॥४॥रंजैकेहंतहंबैवेवण्णि
 पुष्पंअमृतनांमः॥२॥सोमसुधक्षपीयूषअमृत
 आम्हराजसुस्नोगअमीतहंकांकरकथा म
 तरहत्तमवलोकनृपावाकरनांमः॥२॥विष्कर
 किंकरदम्पुनिअनुवरअनुगपदतिनृस
 फिरतजहंमेनशंबविवरनीनहीजाति० दम्पी
 नांमः॥४॥नृत्पादसीकिंकरीउत्तुचुरीनरतिनुअं
 नपराजतिमनिमयअजिरमैकोरवसीकोरना
 मतनांमः॥२॥स्वांतहृदयमृत्तमथपिताआत्मा
 नसनांतममदुसोमैवेजिहरीनीतरि

किहिविषजांताह्यअंजननांमरुक्कजंज
 पाठ्यप्रुपा'नागदीपपुतसोर्'सुक'अंजनै'दुदे
 चजी ताहिनेद्विकोय'ह'एतांमा२॥नि'म'मरे
 क'अ'नि'व'जु'सो'ह'ए'द्वि'जु'येन सकचीतिनत
 कुदेविजु'जु'प'न'व'ने'के'मे'मा'ह'॥मंगलनांम॥२॥
 कज'अ'पर'स'नो'म'जु'जि'ह'ित'अ'म'ही'ना'ज'॥३॥
 ल'मा'ज'अ'क'ति'न'व'नि'मा'न'क'म'ग'ले'मा'ज'॥४॥
 नांम'॥५॥उ'स'ना'ता'वि'क'य'क'वि'अ'मु'प'रो'हित'॥
 नांम'॥६॥व'ते'ज'ग'ज'मो'ती'तु'वन'म'अ'क'सु'क'की'॥७॥
 मो'ती'नांम'॥८॥श'शि'णो'ती'मो'ती'पु'ल'क'ज'ज'ज'प्री'प'
 मु'त'नांम'॥९॥ता'हु'वे'द'न'मा'ज'ज'तु'वि'ह'ये'पु'ंद'र'भांम'
 ॥१०॥ल'द'मी'नांम'॥११॥अ'लि'द'मी'प'मा'ल'या'क'म'ता'
 च'प'क'ह'िय'सि'अ'पु'ता'सा'ह'द'रा'वि'ह'नु'व'ल'न'यो'म'

४७ जाकी नेकं करा दव वि रही सबे जाग लाय।
सौ लक्ष्मी जष जान धरि आपवसी है आय ४८
माता जो मउर अंवासा वित्री प्रयु जमयत्री मानां
म ५ जन निर्दुराक्षकं वरकी बैठी मंदन भ्रम ५०
नमस्कारनां म ५१ वंदन प्रकलति निति अनिव
दन करिता हि सकव अली आगे वली जहां
ऊवरवर आहि ५२ पेदीनां म ५३ आरि हन अ
रो हउनि निम्नि एली सो पान ५४ मनि मयसी वी वडि
सवी लवीन का हू आन ५५ पुनीनां म ५६ पुनी
उदिता कन्यका तनया तनु लोहिय सुता ५७
जष जानकी तहां गइ सीषी सो ५८ सेऊना म ५९ क
शि पुतल्य राज्या शयन भंवेशन रायनीय ६०
ध फेन भ्रम भयन परि बैठी तिय रमनीय ५४

अथ कवित्तकमाक्रमः॥ धिक् संगतवि
नगुनहि गुनहि धिक् सुनतनरिजे रिज
सधिक् विनमोज्जमोजधिक् दैतसुखिजे
षिजसुधिक् विनसाच साचधिक् धर्मन
भावे धर्मसुधिक् वित्तदयादयाधिक् ध
र्मनभावे अरिहं आवे अरिधिक् जुवि
तनसात्तही वित्तधिक् जहांत उदारमत
मतः धिक् केसवज्ञानवित्त ज्ञानसुधिक् वि
नहरे नजन॥१॥ नृदि नारनराक्रांतस्कं
धायंतवबाधति। नमेस्कंधोयबाधंतेय
थाबाधतिबाधते। नपुंसकमितिज्ञात्वा
प्रियायै प्रेषितमनः यत्तु तत्रैव रसतेहताः
पाणिनिना वेर्या॥१॥

॥ कवित्तथ्ये। चवदेविद्याशानाप्रः। बलज्ञानचा
तुरीबांनविद्याहयवाहनापरमधरमउपदेशबां
कुबलजलप्रवगाहनासिधरसायनकरनसा
धिसपतसूरगावनावरसंगीतप्रवांननृत्यवा
जित्रवजावनाव्याकरणपाठमुखवेदध्वनीजो
तिषचक्रविचारचित्तः। वैदिकविधानपरवीन
ताइतिविद्यादृश्रमार्मिता।। बतीसयोनक
धने॥ सीसगरदरजीतंबोलीरंगवालशाल
बादाईसंगतरासतेलीधोबीकंनीया। कंदो
ईकाहरकाबीकुलालकलालमालीकुंदीग
रकागदीकिसांनयबुनीया। चितेराबिधोराब
रीलधेरा। लठेरा। राजयटश्रावपरबंधताईना
रनुनीया। सोनारलोहारसिकलीकरहवाई
धिवरचमारएईबतीसपवनीया।।

कमलतामः॥ शुभनकसमप्रयुक्तनि/ बुष्पफ
लपितामः॥ कलदुगिंडकरवरलिये बविसे
बिलतिनामः॥ पातकीयातामः॥ उपवहनिउप
क्षानुनि गंडकमोदउबीर मृडलउसीसपुत्र
वंगिके बेदीमानगनीरपुपुषतामः॥ आस्पा
लनआतनवेदनवक्रउंमबविनोनपुपुषकव
इकेजातयोजेदुपनिपुषपोन॥ पुकेमनमः॥
केममिरेकहचिकरकचकंडललदिनुसुगर
उस्कीललितलतादजतुचंदहिगइदिरा॥ पन
लनमः॥ गुंनलललरसुअलिकमधिहवेदीव
नीजराईमनुनागमंतिनालतेबाहिरप्रगदीछा
इपुदेउईतामः॥ वांमधककं वितकडिल
देदीनोहं॥ निगीरप्रनक्रातजलजसपरपंष

सवारतेजोरा। ५०। चक्रटीनांमा४१। चैतना चक्रटी
कटिल जोहमतरकरनाल१२ वक्तकालवीतेत
नक बोलीबालरयाला५१। नेत्रतोमा॥ लोचनअ
बुकचकंदग नेत्रद्वपआधीन कऊरिभरीते
वयन१। जनु जावक जोनेमीन ५२। कर्णनांमा४॥ १५
तिश्रवण१। निशदृष्टकोन४। पुनीबविनीरकम
उकषीजनुद्वपविच सुजीसुमिमुखतीरा५३।
विनमीनांमा४१। विनिशकंनगीमीनहासत्पाधा
ती४। कोम वेसरमुंउरकीजुलटमांनुऊविनमी॥
कोम॥ ५४। अधरनांमा॥ ४१॥ विनत्तु३५। निरक्ष
वटअधरमधुररु४॥ ४॥ लिषतलिषककेहा
यकी किलकउषकेजारी५५। हंतनांमा४॥ ५५
नदेतद्विजदरदरदपयोद्वमकरंतेगनीज ओप

रजनुकमलमे शीतलविजुउवीज्जु ६६ छिनु
सुप्तांमनीलमिचकविजुक ४ असिता
मनुंरयालेअंबकी पुंरुषरि
मंनोदुशदृह्यमतितामपपधिवलसिधं
दिजअंगितं निरुमयुराचायगुरुजीव ७ मने
दृह्यमतिशक्तिरेउदितनीबोरी श्रीत् ६८ कं
नामः ५१ गलमलकंधरं ग्रीवउति कंठकपोती ।
पांन ६ पीकलीकजलंकलमलत सबलविकीक्री
आंत ६५ हाथतामः पररुहबाज्जुजपांन करप
कबजकंधरतकपोल वरुअरविंदविठायजनु ।
शिवत ६६ अमिल ७० कचतामः ५२ उरंजपयोध
रकंचजस्तु उरमंन ५३ बिअंन कंचतसंउट
देवता सजितपाइमंन ७१ आवलीनामः ५४ रेजी

अवलीओजिततिरोमपंक्तिधृष्टार

उततेकलमजत वर

७३

दकानामप्परनाकांवा

जाले बुधवलि४जनुम

ल ७२ तरकनामः ५५

ध्वननिषंग

जुरग ७४ दूपरनाम ५७

कोटिमंजीर दूपुरपम

करतअधीर ७५

कुलपर अंशकवाय

पजनु ६

लखअहिवलि ६

नषातिअनषात ३

आरमितामः ६७ पतिविंबी आदरहितं मुकरं स्फ
करं तैलेन नैनं मेपियफलकलविनारिहारिपुन
६८ ७७ वीनातामः ६९ तं वीवीणं वल्लिकीं वृद्धं वि
पंची ६९ आहिजं वजावतसहचरी वृद्धो वरजत
ताहि ७५ सूवानाम ६९ रक्तं चंचलं ककीरं पुनि सु
वा ४ पठतपियनांम तिहिं जिहिरा म एय हं देत पुर
मीनांम ७७ पुसनांम ६९ पुसंति रोहितं अंतरितं गू
डं दूहं नीलीय दुल्लुं कं अंजनमहि पुकि म वि देषी
रुविधितीय ७९ जलनांम ६९ अंलुं कं मलं कीला
जं जलं पयं पुं करवतं वारि अणं अमृतं जीवंतं
वृत्तं धनं रत्नं कसं पां पारि ७९ मेघं पुष्पं विषं वृक्षं पुष्प
कं कं वृक्षं रत्नं तोयं उदकं पायं मं वरं शं लिलं अं प
कं पीतं पुनि मीया ७९ पांती २५ नयनं पवारिकं अं

जनहंतोकीय प्रगटनइपियकीसषीनिपटससंकि
तहीय ७४ नयनाम ६५ मेरयोधुअतंकनयनीउ
द्विजुनिवांर ७ वधुरीररतीरहवरी गरुडिंकरके
पास ७ चर्तनाम ६६ वरनवलनगतिवंतुनिअंति
पाद ७ पदपाद ७ पदवदनकरिकंवरिके वापीअनपुष
आइ ७ हुलनाम ६७ पीतागौरीकावेनीरजनीपी
नाम हुलदी ७ अनामिलतेज्यं युधैषीयतेहनाम ६८
कोधनाम ६९ कोषेयकोधअमषरुट रोषमयुतम
हिय बोह ७ नरीलपियुंदरी ररीरहवरीकोय ७
अमयनाम ६९ आमंजुयमयअनेहवयअनिमि
षवेलाकालवनीवेर ७ सखितनवितेस्वकबोले
वाल ७ नायकववनकुसलनाम ७० होमअ
नामयनइतव शिवसंयुषकल्यानं ७ कितनील

तिकतुऊयलहे सुबतिकंवरसुजांन॥६॥ अषीवचन
नामकेनाम॥१॥ संज्ञाओकरंगोत्रं पुनिं होमधामउवना
मधध्यमीवस्यजिहिंदरसबलिजोमवधूरनकोम॥७॥
स्वीतांम॥१॥ स्वीतांरीचनितोवधु'ललिनायुवती'नाम॥८॥
बुजांबाजांअंगेता'प्रमैरा'कोतांबा'म॥९॥ तयेनी'रमैनी'सु
हरी' श्रीमंतनी'ज'मोय'तिय'॥१०॥ तेसी'तिऊं'लोकमें'स्वी
विरंचनकोय॥११॥ जलानांम॥१२॥ अजकमलजबेधसपित
कता'रात'धृति'होय'स्व'ष्टा'च'उर'नन'डु'ष'ण'भिष'ण'डु'हित
॥१३॥ पुत'सोय॥१४॥ लै'लै'अत'अब'व'वि'नि'कौ'जि'ती'ऊ'ली'ज
गमांऊ'तो'हिर'विविध'नानि'उत'ब'ऊ'र'पो'के'ग'इ'बां'ऊ'॥१५॥
सुंदरतांम॥१६॥ स'अ'म'स'स'म'ब'धु'र'रु'विर'को'तै'क'म'न'क
मनीय'र'प'स'प'स'ल'ने'व'वै'र'द'श'नी'ये'र'मै'नी'य'॥१७॥ तै'ये
इ'उ'ह'र'ऊं'वरि'ना'गर'ना'ग'धूर'पी'य'जो'हर'वी'वि'धितान

वज्रकशान्ततनवीयः सुविष्टरतांमप्यधर्मवृत्तसं
अज्ञातरिषु कोतैयज्जंकरावृत्तियुद्धिष्टरसमा
ऊंवरतेरेसोतननावरुद्धिनांमप्यधर्मवृत्तसं
एहृष्टयु आयतयुद्धिनांमप्यधर्मवृत्तसं
रतबलि कोकारनयहृवाजलरुद्धिनांमप्यधर्मवृत्तसं
हृद्धिनांमप्यधर्मवृत्तसं
केशगांभीवधर पार्थकपिधृजसाय १०० अर्जुन ॥
ज्यांभुधर अवधि तिहिंसम अवरनहाय ५५ उवप्रेम
अवधिसुबुधराची विरंवनकाय १०० गातामः ७७ वि
हृद्धिनांमप्यधर्मवृत्तसं
ती जगदीश्वर अष्टपदसुराष्टरिषु आयुजोर्कमं पा
पहारसुषकारे त्वां उवकीरनसरितविय किंयपुनी
पवित्रकायातामः ७५ कायकलेवरकृष्णपवउ

देह'आतमा'अंग'विग्रह'उपधन'संहरण'धांस'सरीर'पत
ग'धुव'तन'धस'मस'स्विकर'नहित'कनक'अगति'ऊ
पलेय'कोमल'सस्य'सुगंध'नहि'कोक'विउप'मादे'इ
कमल'तांम'००'पुं'मरीक'पुं'कर'कमल'जल'ज'अज
अं'ने'ज'पंक'ज'सार'स'ता'मर'ज'कुव'लय'कं'ज'र'रो
ज'दु'मकर'दी'अर'वि'दु'नि'पद्म'ऊ'से'शय'नां'उ'के'यां'पु
षत'जिन'ध'म'लीन'क'लु'देष'त'हो'बलि'जा'उ'च'द'ना
मः'००'इ'ड'स'धो'निधि'र'कं'जा'अज'जीव'हि'म'रो'म'त्रा
शी'धर'हि'म'कर'कर'नि'श'ओ'षधी'य'श'शी'सो'म'०'ऊ
सु'द'बंधु'आ'बंधु'पु'नि'रो'हि'नि'ध'व'यु'र'पे'य'उ'म'रा'जा'दि
ज'र'ज'ह'रि'जि'पृ'गा'क'आ'त्रे'य'५'च'५'२'र'क'जा'जि'म
च'दे'ते'र'ह'ति'न'त्या'री'हो'य'यो'५'व'जी'क'ति'वा'ज'उ'हि'क'हि
ब'लिकार'न'यो'५'०'कां'म'दे'व'ता'म'०'२'म'द'न'म'ने

चक्षर स्मरं मन्मथं उतिमार् मीनके उकल्प अरु द्यका
चिरविदार ११ पुष्पचापं मनसि जंगलं सखरदारनकाप
दुपतिसारतिरुतिरुतिजिम इम उहिदपतनां मश्रुमरा
तामः पृथुकरुमर विरेकं लि अनिलमलिलमुप
गवं वरीतरारं उत कीजालयसारंग मधुपं मधुतम
धुरसिक इंदोवरं मधुवीरं मरविता नकेतककुकि
तकविता ननोर मधुयनां मधुधाराधरजलधरजलद
जगजीवनजीमूत अजबलाहक मुदिर हरि कामकध
मसहृत् एनीरददीरद अंजवद वारद जलमुकनां उय
न १७ विबुरी विजरी मनो इमदे विबलिजा उदवीजली
नां मधुप सारु विबरा अकालकी तद्रित चंचला होया
दां मनी दुविता नघन वन घन विनुवन नसाय सताम
मधुप हतनां धुजनी वाहिनी वमूव रुथिनी अंन सताम

विनातनृपतिकुलुनृपविनुवैनेतसेनएकमांनतांम७७धनुको
रंमं२६थास७नि'कार्मुकंरिउसंताप'चाप२विनातहिपनवक
लुपतिवविनातहिचाप१५पियातांम७७२६७२यितांबह्वना
वियाप्रियसीहोयंपियकैतोसीप्रणयनीदुश्चोरनदेवीकोय
२६लितातांम६५अततीविसतीवह्वरीबीरुतलतावितांन'दु
अमरवेलिजिप्रमूलविनुयौदेवतिउववांप्र२१मित्रनाम६७
सुहृदमित्रवह्वनसपादयित२६प्रियशान्तंहरियेजीतम
सांकुवरिनकरअकारनमांन२२पुत्रतांम६५सूतृअपत्य
आतमज'रुततनुजतनयमृडगात७नंदकेनंदगेविंदर्ये
नकरिगर्बकीवात२२मनुष्यतांम६५मानुष्यमर्षमनुष्यनर
मांनवंमनुजप्रमात७नरजिनगितनंदनंदकोहरीइश्वरना
तांन२४तपसीतांम६२रिषनिद्वकंतापसजतिअतीमुनी
जनव्याहियोगीरतिप्रजिबिसंकरीनितहिषोजतताहि

२५ वेदनांमः ५४ आम्नायश्चतिवेदबंद धर्ममूलसबका
म निगमअगम जाको कहं सो एस्कंदरय्यामरं यषना
म २५ सेषमहाहि सर्मति धरनी धरतऽनेत सद्धसवेवतऽ
करि गुनगतत तदपित आवनअंत २७ धर्मराजनांम २६
वेकस्यतनरइं धर पउ पतिरविसुतद्वेय संजमनीपति
महिषध्वज समवर तिउन सोय २७ अंतक कालकृतांत
यम ११ जोगजातें मरपंत सो उवपिय नंगतं थरथरथ
रथरकंत २६ ऊवेदनांम २७ उर्याजिनध्वरेवश्रवनधन
६ एजविजहिय गुह्यकपति अंबक सषा राजरुनि सोय
२६ नरवाहनां कंतरऽधिप क्वाधीस ऊवेर २२ सो उवपि
य पदपरअक ऊं पावतनां हिर्नवर ३१ वरुणनांम २७ व
रुण प्रवेता पासपति अपयति जलचरऽरि आदयपति
उवपीय के धरत चरन परथीय ३२ देवीनांम २६ उमा २५

श्रीस्वामी गौरी गिरजा सोय मृदावंदिकां अंबिकां नवां न
 तानी होय २२ आर्यामिनका अंजा सर्वमंगलानां ममाया ए
 जेह आधर जग विस्तार तहे जांन २४ गणिशानाम १०० जंबो
 रं रं रं रं पुनं वै मा उरं स्कं तं मृषकवाहनं गजवदनं नपा
 ते गिरिजा तं २५ कोटि विनायक ७ जीलिषहिं महिये का
 गरकोट तोया ते रे विय पुन तन कन आये तोटि भुज नमना
 म २६ वं वं वं वं मं जननं जनिउ सति जनां १० जनमस
 सजत बहो जवे न जीयें सुंदरीयां म २७ सषी वचन वंचे के ना
 म श्या जं जिह्म के तव कटि जंबु द्वीप रत्न बिज्जि कंकप
 टीकां प्रारु ऊं वरकी केती कहत न जी जं २८ सषी वच
 न मृग के नां म २९ न हिरनं वातां युष्ट पत हस्ति कं रं रं रं
 हि मृगं शिष्ट के ये ह गलीयें कहा इतो इतरा हि २५ पाम
 नां म ३० एनं रं जिनं उः कृतं उरितं अधम जीनं मयि पंक क

मेग

का
क

लम्बकिञ्चिषकलुषतमकस्मजसमजकलवत्
पशुमहावतदवजाकोरं चकतांमताऊंऊंकपटीकहतो
हिकहाकऊंनांमधरपाषाणनांमःप्रावअस्मप्रस्तरउपा
लसिलपषांनअतिनारपाहनपांनीपरतरेजाकेतांम
धररनाउनांमइउपुपकोतेनाकाजकतरिवहिवज
जयांननांमनानवठिनकउहधिकेतेतरेअजान
धिरनांमशोणितआसुररुठुनिरुधिरअसृक्चतज
तलोहीपीवनहतनामतनरहिगातठरादयनांमकौ
एपअसृक्पुमंजननिकयास्ततुर्तादकवरिअसुर
निराचराजाउक्षीनरुव्यादअशसेरादसपातकी
मंदेषीगतिगतजलसमानीपीयमंपराटजाकीजात
दधूलनांमधूलधूलरीषहरजपांशुशकरिमंदजापह
कजरैतुकांवांखतयनकसनंद४७महादेवतांम

गंगाधरहरशूलधरशक्तिधरसंकरवांम'अवशंनुशिवनीमनव
जोगीकांमरिडतांमध्वत्रितयनअंकरविधुरअरिइशोमा
पतिद्वेयजटीपिताकीधूर्जटीरुष्टेषधूर्जसोयध्वतयंकप
दी'रूपैतैति' मृडइशाननीलकंठश्रीकंठसितकं
ठसकजकल्यांतइ३॥५७॥महादेवसेदेवबलिजाकोधरत
धियांन सोकपटीउमकहतदे कैदेकबजसयांत५१सू
तांम॥देवादेनंदविनाकरंनुदितकरनाय्करंयमिहिर
तिमिरहरमहमकरउज्जरमतिमांशु५२अध्रविरोचनमा
स्तनंविनावस्तुवयअंगअंवरमनिदिनमनितरनिमविता
सूरपतंग॥६विजनानुषगंनानुदनविवस्थानडतिवानंअ
ठमांतहृष्टेश्वरिजगचक्षुनगवान५४रविमंदलनवध
नमचषंदततमसेसार॥सोकोक्रकपटीकीयो जगज
केआधार५५वृत्तांमरमिण्यामोटांमृषाअटुतवितथ'

अलीक निरत्य ७ असें पिय संजा उबलि कयां बोली ये वि
रस्य पद समीपनां मख अंत पार्श्व अथ वक्षत तट उप समीप
या स ७ अथ सि अनादर होय जो रं हं निरंतर पास ७ चंदना
नां मख गधु माख श्री प्रंद हं रि मलय ज न ड प ही ज नंदन द क ड
इंधन करत मलया वासी नील प मीत नां मख सफरी अति मि
ष प छति मि धृ युगे मा पाची न म क र र पी अं द न व व सार
एक प मी न प र, वी र स मु द मं मी न ज्यं र ह त चंद दि ग आया
चंद हि मंदन जांत ही जल वर मां न त ता हि दु स मु द नां म र
सिंधु सरित पति श लिल पति अं नो ति किं क्पा र श्रा वानं अ
ए वि उ द धि यां गर अ व धिं अ पार ४ र ला कर १२ पुन रूप को
मोहन गिर धर लाल ति हां मि ल प्र म कि लालि यं यां न वी लि
यं बाल ५२ वान र नां म १० क पि सा धा मृ ग व जी मु प की स ल
व ग लं गूर वान र १० कर व र ना र थ र ह या वि वी ना ॥ १५१

मिरहिनजो जुगजां ५११ अनिनां म२१ पावकवक्रिदहनं
जलनधनं जयलेय शिषी उषर्धुधवाद्युस्रववीतिहोवड
सोय ७२ जातवेदं जलजो निहरि हृह ज्ञानु विवनानु अनि
विनावसंधमधुजनिजरिजिह्वं कृशा नु ७१ अनिदग्धजे
मलताफिरदलकूलहिदितवचनजदग्धजो हियवलेक
वज्रनअंकरलेत ७४ दृषनां म२२ पुग्धपुज्जमं पूकं नर
ज्ञकं टुकवदशाव पूर्यजतजानेकच मनिजेसंकपिकं
७५ पचरनाम२२ कृती कयलकोविदनि ७३ नृणां प्रवी
णनिध्यातपटुविद्यधनागरवडुर ११ जानतरयकीवत
६३ अपराधतां म२४ अहं अंगयहेजनं हितं अणुनपुजा
हियपीयकपबां हज्जराविये यो न जावीये तीय ७७ स्नेह
नां म२५ दोहदहादज्ञौ हितं अणयरागं पुरागं कितमो
तेरो प्रेम ७८ वह हेनामनिवदजाग ७९ पवर्तनां म२६ अंगना

भूतदरीहतृंगीशिपरीहियंशैजशिजोचयगोत्रहृरि
 अवजअदिउतसोयअगिररगोवर्धनवांमकरधस्योस्य
 मनिरांमतोउरतेवहृकधकीअवजोमिटीतनांमउस
 पनांमशुजगनमैपत्तगंउरगजिलगंनोगीयपहिरिय
 रीष्टपवक्षश्चकाकोदुरगरदपिआसीविषरंधरफन
 मनीविजेअयंमालचकीह्वीएषांअलिहंकेवजकाल
 क्काजीरहंजगनयमेमैरां
 मरयतांतिरविपकेजगमांहि

नंकवकांतारअल
 प्पअसुरनाम
 अयंतमायादूपीरैनदिमोजतउटअनंत१५६

संभ्रानांम३८ संभ्रानिसमुषं पित्र प्रसूक सायं काल प्रदोष
सांफुंदुपरी हैवेज अब वादिरोष करितोष ७७ विषनांम३९
रत्न हलाहल मृत्स्व विष काल कुरर अमार दुय में विरयन धो
रत्न लिच लि अबन कर अवार ७७ पृथ्यानांम३९ काजकं
चंद्रात्स हलुरि चातक सारंगना उ घन सौं द्रवेष पी हरा दना
हिन वे नै बलि जां उ ७५ मनोहरनांम३९ मंजुल मंजु मनोह
हु न मधुस्वारु कुंज मार जलित उ दार ७५ नंदको सबत्रा
जकी आभार ७६ सौमनांम३९ सौम्य वांम वर सुग्धु नि
प्रिय हृद्य औषतस्तप संहरनं द्रुकि यो र परे बलि विश्व
अमस्त ७७ धननांम३९ विण्ण स्वस्व वित्त बजराय अष
सुष औके धन एजे तो ब्रजनं द्रुको तितौ न ही तिऊ लोठु
नायका वाक्पूगनिकानाम३९ दासि दरी लज्जिका षजा ह
श्वली होई रूप जीवा का मुकी पण पयो विता सोय ७७

चारवधुजगवधुजाकहतसंभजीजाहिं२ पुं ह्यंभारकिन
 बोहहे त्याकोगनिकानां हि ७८ सषीववनपतिव्रतानां म ३५ सा
 धीसतीप्रतश्चतीसचरिवांसवाहीयपतिव्रता ६३ वनां म
 लेहेतिजगतेमेंतीय ७५ पार्वतितां म ३७ उमा ३५ पणईश्वरी
 गोरीगिरजाहोय ५५ नाचेंदिका ७५ विकानवानवानिसोव
 ४५ आर्यामेतकजा ७५ अजां सर्वमंगलानां व ३५ विवानईशि
 वनरवली १५ जपिजपिउंबलिजां ३५ कृपातां म ३५ दया
 मयाकिरपा ७५ अनुकंपा ७५ अनुकोसकरुताकरुन
 निधेरधिजनकरिते ७५ उत्तरवारतां म ४५ रिष्टकषेय ७५ पा
 न ७५ सिमंमलायुकरवाल ७५ गजतेतेतेकछ घावक
 रतकछेवाल ७५ दरात्रीनां म ४५ दिते ७५ हिपातमखिनी ७५
 मातमिआहोय ७५ निशिंस्वरीविजावरी ७५ विविजामां सोय
 २७० युषटं ७५ युषटं ७५ रदकीकैसीजां मनीजाति

जिमोहनलालैयें कतवैवीइतरातिरनीचानांमधरनिम्रक
संत्यगकुंजअधअचअजराकीषांननीचैंगारनफारि
बलनैककल्लोतोमांनरअकासनांम४३अंबरडुधकरन
नवियतअंतरिहृद्यतवासंमोमडनंतविहायसीसर
मगरवंआकासगगतज्जउमगनरधवनरहेतनकबु।
हितनरोषदेषनतेरोरूपजनुसुरतियकियेकरोषध
नषनांमधधकरज्जउननविनषननषधहिरंगनीनीना
मकबकीप्रितिहिंजुषनतहेनहीनषनेसांकांमप्युद्ध
नांमधपआयोधनरनआजिपृथ्वआहवशंकसमीक
संपरायसंगरसमरसंयुगकलहअनीकैदसुरतयुद्ध
जबपीवसुंतोहिवनैगेनांमनयनाराचनविनुकंवरी
करहकहपरनांम७सहस्रनांमध५उबअत्यजवसु।
दमंतनुनिपटऊशेदरतोरपकहिकविएतोमानसंन

राष्मिहिकहि शीरगमकरीनांमध७ चूतास्रजांमाघटी'उ
 एतिन७ पुनिहोयकजंमनुमकरी'शुक्रकरी'पकरीविद्यासे
 इ७ मागनाम७ वत्सुअधुआशरणिपय'यंवरप'हृदिवि
 हार'मग'द्वेपत'कैहे'इ७ आउरनं'दृकमार'७ द्विपनांम
 ४८ कन्या'काष्टा'ककुन'दिशि'गि'आसा'दुह्वोर'वितवने
 केहे'जीयें'ज्ये'शशिवा'हृवकोर'एनदीनांम७ शरिता'धु
 नी'वरंगिनी'तदिनी'रुदिनी'होय'श्रोता'श्रवती'निम्नगा'मगा
 दिरेफा'सो'रु'श्रोवा'तिनी'श्रोत'श्विनी'दी'पवती'जल'माल
 नदी'भूकलं'रानीर'तट'वेते'मदन'पुपाल'७ दृष्टनांम७ ५१
 श्री'विटपि'हृदिक'कव'अ'द्वि'म'पा'प्य'यो'इ'वर'हृदली
 पत्री'फली'रु'म'हो'रु'होय'१४ कल्प'त'रु'त'४४ त'त्यर
 विक'ब'केवल'पत'पीय'त'दृपि'न'ते'हि'द्व्या'क'कु'उ'प'ज
 त'नि'द्व्य'होय'५ पात'नांम७ ५२ पत्र

परकततरुपातपुत्रवआगमअमचोकिंकेपियउठित।
जौंजात१६वायुनाम५२श्वसनसहागतिमरुतहरिआश्रु
गजगतपरानअतिलफनजनगंधवहननस्वानपवमाने
१७उवतनपरिमलपरिसिजनगवनतक्षीरसमीरताऊंबऊ
सनमानकरिपरिरंनतवलवीरु१८शृनाम५४नदना
दनिश्चनसवदसपरिमुषरितरैववेवंसीमेकहत्तहे
एप्राणेश्वरआव१९उषनाम५५कदनविधुरयंकटउद
नगहनृजिनउषआहिउषजिनदेअवजाउवजिक
तवेवीअनकांहि२०नायकवाकपु२१रित्रीनाम५६निसि
निसीर्योमहानिसहोनलगी२२श्वरतधकोनवलेंअषी।
सोयरहजैहैउवपस्नात२३अषीवांकपुवजनम५७आ
अनिकलिशनिघंतिउनहजवीजुरीनाहिपरोबुरेकैश
मपरविश्यकटैरयमांहि२४लाजमान५८हीजजात्री

हृद्यन प्रकरनिकरनिकरं बहुरसं जपलचय संव
यनिचयकदंब २० वियरनिवय महि हउद्य जूथ ज्ञातगन
जातचक्र उनेत समाज बुझ स्तोम ग्राम संघात ३१ कदल
जालकला पकल कद उनेक मुहं ६३ मे उनेक वाते कही
नरतिवे की बंध २२ अतिनाम ६५ चुरा उतिशाय उतिवे लउ
लि अधिक अत्यंत नित्यंत ७५ तिसंब विनलीन ही कहिगे
मंत अमंत ये आज्ञानां महुक्य आदिशानिदेश पुनि
आज्ञा सासन योग आश्महे दुअब जाळ्यूर जहिरती
तके जोग २४ तन कनां महु दर स्त्रोक श्वर उल परं वक
मंदमता कउत दपिय हचरी तन वते पुय की कवर तना
क ३१ जूतीनां महु पदवां लपदपी वये पात हउ जरी जरा
य पनही मनही नावही आगे धरी विनाय उहु असनां म
हु सोधु म्प प्रसाद ते रचली कंवर गति मंद उज्जल जल

धरतेमनोअवनीउतस्योचंद३७सषीववनवंप्रकातांम
७७ज्योत्स्नांकोमुदिवंप्रकांमकरमरीचीनांउज्योक्रिंदसि
परमतामउमहिथेरोहसिबलेजांउउज्वीदीनांम७१रथा
मएंप्रतोतिकाचऊरिवीषिकाहियंधयहवीषीवलिजा
उंवलिजैयेलेषेनकोय३८अंधकारनांम७२अंधरजोव
जंतमिश्रतमश्वांतकऊरनीहारतिमिरंमिडोयमवज
गतकोवदनवंदउजियार४०उपवननांम७३कविमवन
उद्यानपुनिउपवनसोआरांमंधयहवंप्रवनवापुवदिवि
चलिठविकेधामंधवसंतनांम७४कयमाकरंरिचुराज
मधुसुस्नीयहंजुवमंतपमालीजगजुगवत्किरादिन
५विकलसंत४२रवगनांम७५दिजंशकंतपंखीशकन
अंरजंविहंगंविहंगंवियगपतत्रीपवरथपत्रीपतंग
तंग४२रवग३४तांतांवोलेनवलकोमलकंकवुजात

जनुउवआगममुदितुमकरतपरस्परवातध्वरंगलल
नाम७५अरुनश्रोतआरक्तुनिजोहितरातेपपातउवा
आगमआनंदतेजनुअनुगगुवात४पीपलनाम७७
चजदजपीपजगजअसनंविधिरुहअश्वत्येपीपलदे
वलपाहनेजोरिलयधरमाय४५पाटलनाम७८प्यालीपा
टजफजदूहीवांमास्यामानांमअंबवसांमभुद्धका७पां
मरकरनिमनांम४७आंवातांम७९पिकंबलनकांमांग
उतिमहिरमयमह्वारहूतरर्यजकिमरवलिनैजुरह
फलमार४८चंपातामणेवांपेयचंपकांमुरनिवहहेमउम
सुकमारयहचंपापरउवलिलियेपुष्पउपहार४९मधु
कनांम७२माधवमधुममधुश्रवामधुष्टीलंगुडकुलपरा
मधुककेकुलवलिकबुउवगंनिकुलपराहस्योनाम
७२रक्तबीजहालिमकरकंशकप्रियकहिनमार५

कलुउवदयनाकारपश्वीलीनांप

एकंशकदुजिनिबूअंवलि नाहटनछरिवि

जायपकदंबनांपनीपसलहरिप्रियबछरिमहिरा
गंधपुवाहयहकदंबदुजिलिकाकबलिचढिकुद्वेष्टमाह
पदबहेडानांपअहविनीतककपफिलयंवसककलि
वृद्धचूतावासवहिरतल०केजिनवलिपृगअहप०पु
पारीनांपदघोस्कमुषश्वाकधुनिपुंगपुपारीआहि

वारवारकैकहस्तबलि रंक्कयनतनवाहिपुत्ताजेरनांम५०
वांनरंमुषनालेरुतिनालिकेरं२युनकांमअरेनारि५ना।
रियरतीकहिकरतप्रणाम५५कौबनांम५५कोलवह्नि।
काकंपिलताकंपीकंबु३निनांउकंडुकरधतेयहुअंग
मेंकौचिनबिउबलजाउ६०पिपरनांम५५कोलाठुआभा
गधि॥तिमतंडलाछियवेहेरिपांमाकण॥श्रीं॥१कहिये
श्रीय६१यहपीपरवलिपगगहति कहतबहुतपरिभार
अवउंअतिनहिकरिऊंवरि प्रीतप्रमाणआधार६२
हरदेनांम५२अनयापण्याअमयाअमृताचेतकिमो
यकायस्था३निधुवनांशिवाश्रेयसीहोय६२यहहरीत
की१०पापरति हरतउहरकीरीगस्योउवगिरधरलालकै।
वालप्रकलशुषयोग६४युंननांम५४विश्वानागरजग।
निषजमहाउषधीनांउयहयुंवीपयूंवीशुननि॥कहतकि

चत्विजिजांउ५प्रवाजातांम५संभिरानटीनलीधमनिता
 पोतांकिपरवाजंउवेअधरनियमकहतकविपेनहिष्टलरय
 ल५६हंषनांम५स्वादीमृडकांमधुरमा'कालमोपिका'ले५७
 मांप्रवाजोगोश्रंतीचारुफला'पुनियो५८७यहस्तशा५पापत
 न्वलिरंक्कइनितनवाहिनहिगेनेसीलीवालसीनिपरर
 जीआहि५८केयरंनोम५कायसीस्कुंक्रमरुधिरदेवव
 ह्वनाताउकेयरिप५गनरपगाहति क५ति कितकिचजज
 उ५६स्वलसिथिकातांम५८हिस्नीगनिकास्यथिका'हेमपुष्य
 काजाय'पूथी५९पूथीउवनिमो'वाडीलेनवजा५७०मालनि
 नांम५६स्ममनांजातीमहिका'उशमांधाहिय'अंवष्टा
 प्रिक्वादिती'रजउत्रिकांमो५०१स्तयहमालनि५पापरति
 पुष्यमह५६जायु'कलुश्क'उवतनवायें'मिजताजा
 सुकीवायु०२ययवेलीतांम५००अवजयुं'प्रनिव'त्ररी

वारवारकैकहृतबलि रंक्कयनतनचाहि पत्ताजिरनांम५७
वांनरंमुपनाजेरं'पुनि'नाजिकैरं'सुत्रकांम'अरेनारि'पुना।
रिंयरतीकहिकरतप्रणांम५८'कौबनांम५९'कोजवद्धि।
काकंपिलता'कपीकंबु'पुनिनां'उ'कंदुक'रधतेयह'अंग
में'कौचिन'बिउबलजाउ'६०'पिंपरनांम६१'कोजा'रु'श्रा'मा
गवि'तिमते'उजा'होय'वेदे'ह'इपां'मा'क'ए'मो'दी'ए'क'हिये'
मोय'६२'यह'पी'पर'वलि'प'ग'ग'ह'ति'क'हृत'ब'ऊ'त'परि'ऊ'र'
अ'व'उं'अ'ति'न'ह'कि'रि'ऊं'वरि'प्री'त'म'प्रां'ण'आ'धार'६३'
ह'र'दे'नां'म६४'अ'न'या'प'प'या'अ'म'य'या'अ'मृ'ता'वे'त'कि'मो'
य'का'य'स्था'पु'नि'६५'नां'शि'वा'श्रे'य'सी'हो'य'६६'य'ह'ह'री'त'
की'६७'पा'पर'ति'ह'र'त'उ'ह'र'की'री'ग'मो'उ'व'गि'र'ध'र'ला'उ'के'।
वा'ज'य'क'ल'शु'ष'यो'ग'६८'युं'व'नां'म६९'वि'श्वा'ना'ग'र'ज'ग'।
नि'ष'ज'म'ह'उ'प'धी'नां'उ'य'ह'युं'वी'प'युं'वी'पु'न'नि'क'हृत'कि'

चत्विजिजांउ६५प्रवाजातांमध्यस्वपिरानतींलीधमनिक
पोतांकिपरवार्जतेवअधरनियमकहतकविपेनहिष्टजस्य
ल६६हंषतांम६६स्वादीपूडकांमधुरमाकालमोपिकाहोइउ
माप्रवाजोगोरुतनीचामरफलापुनिघोइइण्यहस्तशापपत
मवलिरेवकश्नितनचाहिनहिगेनेशीलीवालसीनिपटरनी
जीआहिइकेयरनोमधुकायमीरेकंकमरुधिरदेवव
श्चनानातकेयरिपहगनरपगाहतिकहतिकितकिचजज
उ६६स्वराष्ट्रिकातांम६६हिरनीगनिकाह्यथिकाहेमपुष्प
काजायपूथीइसूथीववनिसेवादीलेतवजाइ७०मालनि
तांम६६स्वमनांजातीमहिकाउशमगंधाहियअं
प्रिक्वादिनीराजशुत्रिकांमो६०२ ॥ १६५ ॥
पुष्पहृदहेजायुकतुश्कतुवतनवाययोमिजताना
सुकीवापु०२रायवेजीतांम३००अवजय

राजध्वनिकां आहि २ उमहिदैषिहृत्तलीज्जति बलिहं व
 कश्चनचाहि ७२ संजीवनीनां मंजीवाजीवनिमधुश्रवाजीवं
 तीधुनितां उयहं मंजीवनिधपापरति तोसीहं बलिजा ३७४ मा
 धीनां मं २ मा धीकं दलतलजित २ पगनिपरति बळनां तिया
 की कलियन मेकळु उवदसननिकीकांति ७५ बंधकनां मं २
 बंधुजीवबंधकं उनिजपाकहतहेजाहि २ ७५ हरकलतं कं
 लसें निमिस्सले तोचाहि ७६ पुंजा नां मं ४ का कचुं वकां कल्ल
 ला पुंजा २ करति प्रनां मं मुषकं स्यां मता मनुं यहे ले तिस्यां
 मको नां मं ७७ पजूरनां मं पता जषजूरी टण्डु मा २ के तकि
 पं करत पाइ उवआंग मआनं हते हृत्तली अंगन मा २ ७८
 लवंगनां मं ७९ देवकुशुमश्री संल्लु पुनि जापक जाको नां उ
 यतल वंगकी वे लियह पगनिपरति बलिजा ३७२ इलाय
 ची नां मं ७ वं ५ कन्यका निष्कुटा त्रिकुटि वाजिका वे लिध

इतं एलाबलिपापं रत्त शहरं कमुषमेक्षि ८० माधवीनां म
अलिउत्तव अतिपुष्पुनिहृज्जक वसंतीज्ज ३ यह माधव
उववास जिम्वनवनवासंतीज्ज ८१ नागरवेलिनां म २ तां ह
ज्जिहिवध्वरो विजापां नकीवेलिधम्मस्स ज्जिहिवहस्स ते ल
लिरंवेक मुखमेक्षि ८२ चडनां म १० जटीकपट्टी रं रु फल
वृक्षपट्टुति नमो भूय हवंसी वट्टे विवलिम्वरसुको च
विगेध ७२ सरोवरनां म ११ हृदयकारिकायां स्मृतं म स्मृति
लहमाग ७३ यह देवकुवलिमां न सरस्वत्यो तव ७४ उरग ८४
यमुनानां म १२ यम ७५ नृजीर विजायमी ७६ क्षार्यामाप ७७ अप
यह यमुनाय वसमुद्रि र आवत सुम परताप ८५ त रंग न
म ७८ ने गतरंग कलोल उनि वी वी च म ७९ नाइ लहरि इलाय
पसारिजनु यमुना परिस्रति पाइ ८० तटनां म १४ कुलं वृदि
न उपकं व पुनि तीरोध ८१ माय ८२ गिग ८३ गिग वलि जा व

वलिः अथपित्रपासः वेतकं जनां प्रवृत्तुं जसीत वि
उत्तरणी अत्र उष्णवानीरप्यहवेतसकीकं जवलि जहं
वेतेव जवीरः कोकिलाः परिचृतकोकि जरः कृदगपि
कधुनितं हारः पुंजं पजत्रुपीय आरति निरपितो देरतवलिः
कुजः इंदीयः अग्रे अकपतिकरनगुन इंदियः रज्जु रसपा
यमिले परस्परं हाउं जेने परमप्रेमके नाइ इंदीयः करं हनां प्र
सारं नमधुमुनिपुष्परसः कृष्णः गारमः रसः ज्ञानं नहा
रजनः सुनिपहेयः इंदीयः मालानः नास्वकस्तजउ

॥६॥ जो दृश्य वी सपवासन एस तलेय हज्जार न जा पमंगेगी के
 द्विअर बषर बअसंष प्रथी पति लेने की वाहजोगी सुरग पा
 ताल को राज दियोऽधिकी दृष्टाऽतिआग जोगी सुंदर एक
 संतोष विना सव तेरी तो नृप न केयो हिन गेगी रछ्ये चपल वि
 सगत विपुलः सकल शुष अचल विचारत हारत नर नुवर
 वतः जतन जिय धर मन धरत को हमांन म दमिहुः लोहल
 पछो जल जवौ वै पावै परतन पारः पार परिवार तु जावे विष
 विज विषय तज त्यक्त कर धर्म आंन हिर देखे जि न रय
 गाय पारय परय कहे उत्तम दुरणी दुरो १ गग काफि होरी
 बालन एक तु करे आं तोर हणानां ही चाँने दियो गहरी ना
 व डुरांनी सांश्या उतारे वेडा पारवे आं न्वा र क्यो वे उव जाग
 पुग्रा फर मोत निवानिका फरे
 इअम ऊर पा भर रे आं वा ०

लविचतेरांघररे आं० वा० इति पदो॥ नैनतेरे मतवारे श्री०
अंषीया विचडंजनको हतकारे ने० १ चितवन नैनवानकर
मारत छुमत हेमतवारे ड० नै० कर डंजनपियको हितरे जन
षंजनधनुषयवारे ड० नै० क हत हूपय हलेरी यजनळं गन
तं गुनिजनमारे ड० नै० इति पदो॥ हिरिनर कोरी एमं वे जत
नेमकमार हो० तालतं ब्रराय क करीरे वाजत मृदंग सुनंग
दफन केरी जां करीरे लेर जा देव संग हो० १ कं क मने सर के व
डोरे किरु करी यन सर पिचकारी मारी नरीरे बांटे रुदय म
कार हो० २ राध गोरी सुंदरीरे फागर मत सुषकर लेववी इरु
वात डीरे राजमती नरतार हो० ३ कूली के तकी माजतीरे अं
वक देवर माल व संतर मी घर आंवीयारे फलिया मनोरथ मा
ल हो० ४ वात्स्युणि वसुदेवतीरे यजी यमगा इस्मिर जां न जोनी
जा देव प्रयारे उ अं मे न घर दार हो० ५ प सुदेवी पाबा वल्यारे

गोमीराजुनर...
हो०५...
हृषिकेश...
गा॥हि विवर्तनीयुष्मन्त्राय...
रकोभापदशा...
हीफर...
सुराण...
गंएपावाठस्थानीक...
रथविप्रलोकितेदनतां...
रकेतीरविराजेचंद्रायाम्...
यदीतिजस्वामी...
देवननामी...
नयेभिकांगी...

मतेकहीन ग्यानवन्तानिरपहोह एकलपक्षलहलीन १५५
परमन कंकरतप श्रवतसुनन कुंवेन रिदयतपेचमपि
जलकं मुषादेषन कुतेन रजेजे सांइजीवले केउं देहीदा
२ रहीजायंग उरमाओ विरहाविया कोनार काफिमिंतीरी
विनहर मनमहाराज होरी कुनं गुंजेग सै वि० सातयषी
मिन्तहारी वेले माकुं आवन जाज होरी ० वि० गीरी नोगी मि
लर होरी फगु वाउ नावन काज होरी ० वि० चग मृदंग उपेग
वजावत मांऊर होत अवाज होरी ० वि० मीरां के पत्तु गि
रधर नागर बां० प्रहृत्ती जाज होरी ० वि० इति पद उतः सां
वर से कहिया मारी सां० का गुण मां सपती घर नां होरी मि
कलक द्यंरी विनपिया फग मी हो जरे है तन मन जे स्योरी
कहो कं सें विजे गीरी सां० श्री अनिवाय चरण ग्रह जीने क
र विनती करनारी ० स्त्री चक्र कृपा परी मोप प्रीत पाब ली थोरी

पहिले कजे हंगे जो कतुचिते महेन की तुवना मगन गाय
पीकी निवह गं रैन गज्जु वात करे कज ववे की वात वदा
कहे ॥ १ ॥ उगइ च उरांतली कां गज्जु वहाथा करे आ
तयो पदे पुंरु मेष्टन ॥ काव्यो ॥ गविचंद्र मशीन चास्त्रि मर
गउं नल्लु सने चैरावे पणतसरः प्रियस्र स्वप्रयिण जो के कि
ज. मानो नयस्वी विन्नहारण जेने गंत व्यमे वाधुता युक्ता युक्त
विद्वत्ता यदि तवे अहाय दसे जजे ॥ काविधवा ज्ञास्त्र
के जिन गति विधा रयति नववावने न नगस्य पीडा वरुना
भगान नाता तता तान न नान ता ना ॥ यनस्य नितां गदि उात्रि
रावरा दिने गद्या तना श्रुयानने मृतस्य को दस्यति पिदस्र
तथा तिजो क. सस्मि जो मके तेने ॥ कांता कता तदस्थाने
ने ववे ह्य ॥ माधर्म हृदमतिंग ने पश्यै काथ्य पद पुं वने

॥ छप्पयः ॥ जगत्प्रहितकरजाव अपजश्रीता
 दउवे उत्तरीजिणरोकरेसु वितऊवे। तिलेनेयेवे।
 वितहितकरेनवा ८ षं च ऊवीरोयरपी तां प्रकरे
 नतार उपजवितरावेतरपी संप्रयप्रिततप्रतराय
 रव माचमिलतरययरयरी चउरवचनइणवि
 धवजे सुणतं अमृतरयवरयरी। जगत्तणक
 यदंतजवरकरजिणनेलेवे कहेउरमुणउरजा
 बफिरउरहिदेवे बारबारकरवा ८ कहेसोईजिबेक
 हियां तांप्रयकरतिणवारवचननहवाहररहियां।
 यरप्रहितफिकराजरैवे पंचप्रापयमप्रापनेंब्र
 हेकबीजोवेकवीविनां अकलनरधापने २ उहा। ज
 मोवधायकजुरतनहि जमांघरवविनजाय आप्रप

कंगेन जहां जसां वधै नगमाय ॥१॥ यजन दरपन
मुखकों डरजन देखै जाय जो पुन मूरत आपनी ॥
जै सी जहाँ लषाय ॥२॥ कवितः सुनिरे विट प्रभु
ति हारे ह मराय दोह मै तौ सो नारा वी विदाय दे तज
हर कके तौ विलस ॥ सो चौक लूज हं जै है तहां तहां ह
नोज सगाइ है सुरन चहै गेन रसिरन चहै गे कहु
सुख व अती तहा थ दथन विकाइ है दे स मै र है गे
पर दे स मै र है गे का कने स मै र है गे तो पै रा वरे क
हाय है ॥१॥ संग रै स दुली ॥ बे ली एन बे ली नात्र
बे ली दिखा ती आ ती आनंद वटा ती है ॥ मंद मु स का ती
हर का ती सर सा ती चित ना ह पुष चा ह लाल चित कों
पुरा ती है ॥ विरह की का ती मंद मा ती उ फ ना ती वा म

पट उधरा तीया कौ लाती दिख लाती है नैन न च-
लाती दर साती कलानाथ क कौ छे म सर साती अ-
ली गली चली जाती है ॥ २ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ यवेश्यो ॥ उम हिव नाई ईष्टियुन की व व ल त
उम हिकं र त व य क रिये तो न ज हें । उम ही कहत नें
पुण्य सुत विनागत नं हि उम ही कहत बंधन का गल श
थे । उम ही कहत का मारा ध ध ध ध की ति ने जे उम ही
कहत का मा ध प्र कृते फल हे नि प ट नि रं जन हू य
रे न ग ऊ र ता पे उम ही ऊं मा थ ले म मा व द्रां ज न
लिये ॥ श्री नमः ॥ अस्त्री बो डो सुत की ल हे पो ह रा म
त प रि वार रं म च र ण अ ह न्ना ध र्या मो ह के ल गे किं वार
५ उ नियां मे दो य ची ज हे म ह री अ म मा या । जिण प
र मे य र हू जि या । तिण से नुं पा या २ द्रा ति व दि २७
२०००२

॥३॥ चतुराईकीचोजकें लषेनकोजटांक
जैयेंमृगकेयोगमें आसीधेहीमेवांक १ करतें
जतीऊयप्रकी मालामालाकार अमृततत
सुगंधकोरुचिरचुंगारिंजवार २ षट्स्वस्वा
माननृप दरअनषट्प्रतिपार षट्ताषाध
रागको छेष्टरितरिंजवार ३ नवषंजकीरत
माननृप विलस्रीनवनिधिछेष्ट नवतायन
कीमहिरमौ छेनवकोटीनाथ ४

॥र्द्धण॥र्द्धतमः॥घटो जन्मस्थानं मृगं परिज
नोत्तर्ज्वसन् वनेचांवास्कंदद्विकमस
नमेवंविधिगुणः॥अगस्त्यः पाथोधिं यदि
कृतिकरां नो जकहरे कीया सिद्धिस्तत्रेव
सति मंहातो नोपकरणे २ विपक्षः श्रीकं
नो जडतनुरमायाशिशिरः वसंतस्सामं
तो मलयमरुदायोधनुरथः तथापि त्रैलोक्यं
जयति मदतो देहरहीतः कीया सिद्धिः २

रथांचैकंचक्रं तु जगदमिता सप्तद्वरग
निरालंबो मार्गं चरणरहितः सारथिर
पि रवियंतेवंतां प्रतिदिनवसारस्पन्त-
तसा क्रीयासिद्धिः २ अजेतव्यालेका च
रागतरणी योनजलधि विपद्दयोल्लेखो
रंगतुवसहायश्चक्रपयः तथाप्येकोरा
मः सकलमहन्प्रादसकुलं क्रीयासिद्धि
सत्वे वसतिमहतां नोपकरणे ४ ॥ श्री ॥

॥ कवेत ॥ कबहो मनजानकी नाथ जैपै कबहो
मनज्वानिकी जोर जतावे कबहो मनशील ज्यंतोष
धरे कबहो मनबोझ अशील ऊँ धावे कबहो युग है
अपनें मुपतो कबहो अनधन अनोकर वावे मनके
कहये मतवाल मनमान आंष करे जितनें फुरजा
वे १ चंद में वकोर जे में मोर हित इंद्र में चंदन में वि
याल जे में सात हित बाल रु में उह पर में विरंगी कर
गने हुना दह में बाघ में विवादी जे में वेद छिज बाल
में नीर रु में प्रीत जे में अमली अफीन लीन कमल में द
न जे में रूपण मनमाल में बूँद में तंत तान गोरष
जे मोक्षान ए मोक्षर ध्यान ज मुकरुण
नव आउ कोइ चारु ।

गोमहटा नवव्याकोइकोउदंतीतकियां नवव्या
कोइओहविराडुपटा आइदोनकहेउतटासुतटा
जरुनांनवव्यागुरुनामरटा॥ नवव्याकोइमेतरजं
तरयेनवव्याकोइअंतरतंत्रअटा नवव्याकोइआक
एविदपध्रुआंनवव्याकोइनाकणनारनटा आइदी
नकहेउतटा॥२॥ नवव्याकोइमुंमुंमुंमननननवव्या
कोइलांबीपक्षायजटा नवव्याकोइतीरथवृतकीम
नवव्याकोइजायजपुनांकितटा आइदोन॥३॥ कहो
कोनवव्यामुषमृनगृहेकहेकोनवव्यावेकवाधवरा
कहेकोनवव्यारमकारमियाअयकोनवव्याधरबार
बुटा आइदोन॥४॥ जहकहाजोलेनहकोनेछुर्कजार
कहाजोनेवेदजगको आपोनीकहाजोलेज्ञोनकीवा
तनीलकहाजोलेपापलगकी मूरषकहाजोनेमुंद

रकी गत जेम्प्र कह जांने वेत सगा की बीर बल जणे सु
लया ह्य क बर ग धी कह जांने नीर गेग को ॥१॥ ज।
ली करि जग दान वाक ठो करंग न विच की नी रहती दां।
गन बार मुल कम ब करती उजाह ॥२॥ कवितः ॥
पर जष्ट की हो मेरु मज बूती क्ष को ध्या ह्य कम मुष्ट
रि न वा ह्य कम नीन को रि न को कर र्यारा ग रूप को
रिं की र्यारंग पर ती त जे र्यारंग प पा ल क है नीन को
थं न पा ति म्ना हो को हो मि पाई को पि बा न हो र ए मि
गत का क्ष मां क कां न न मु नीन को हा य ब्य वं गु न
हो को वृ ट्मो दे वों त म् उ त गो वा द रे म् गा ह्य क
गु नीन को ॥३॥ गु रू म् रो है मि ष्म यो बु द्ध कां न
यो लोक त्रि मा म् रो है पुं र ध यो ह्जे म् बे यं यो

गामहटा नवव्याकोइकोइईतीतकियां नवव्या
कोइओषचिराहुपरा सोइछनकहेउलटासुलटा
जरुनामव्यागुरुनामहटा१ नवव्याकोइमेतरखं
तरयेनवव्याकोइअंतरतंत्रअटा नवव्याकोइआक
एविहपधृष्टानवव्याकोइनाकणनारनटा सोइदी
नकहेउलटा०१२। नवव्याकोइपुंरुमुंरुमनयानवव्या
कोइलांबीपेक्षायजटा नवव्याकोइतीरथवृतकीय
नवव्याकोइजायजपुनाकितटा सोइछन०१३। कहो।
कोनवव्यापुषधूनगहेकहेकोनवव्यावेकवाहवरा
कहेकोनवव्यारमकारमियाऊयकोनवव्याधरबार
हुटा सोइछन०१४। जहकहाजालेनहकोनेछुंनार
कहाजालेवेहजगको अगपानीकहाजालेज्ञानकीवा
तनीलकहाजालेपापलगाकी पूरषकहाजालेसुंद

रकीगतनेमकहाजानेवेतसगकी वीरवत्तजणें
 लयाहृश्चकबरगधीकहाजानेनीरगेणकी ॥१॥ न।
 तीकरिजगवानठाकठोकटांगनविचकीनी रहतीटां।
 गनबार मुलकमबकरंतीउजाग ॥२॥ कवितः ॥
 परजक्षतीकीहीमेरुमजबूतीक्षकीथाहकममुद्र
 रिनचाहकमुनीनकी रिनकीकरइयारागमृपकी
 रिजेइयारंगपरतीतजेइयानृपपालकईनीनकी ॥ ३ ॥
 थंनपातिम्राहकीहीप्रिपाईकीपिबानहारएमि
 गतकाक्षमांककांननसुनीनकी हायव्यवंगुन
 हीकोट्टमोदवीतमउचगेबाहरेसगाहक
 गुनीनकी ॥४॥ गुरुसरहैप्रिष्यो बुध्वान
 योलेक त्रिमासरहैपुंरधयो इजेमवेमयो
 क ॥५॥

॥ कुंदलियो ॥ पाएच छ्छाए कह प्रहृतन बढो
कुल श्रान्त चषो गज मीस तो जुअ वीत ज्यो न मू
ल जुण टुककारण ललचो हे नोक बुक हे कीअम
कुल मकरेआ हमो आवि कोहे कवी जे कछ अकहा
होय विरुद्ध चण ए नीच नत जे मना वम हत पद
बी को पाए ॥ १५ ॥ उहो गहरहे न गढ पति रहे रहे न
षत कज हान रह दोय रह श्री मान नृप ने कीवा
। दीनिदान ॥ २५ ॥ मीर बो ॥ ज्योरी वहती वार ज्यो
अप्यण न जाणिया हाथ धम्ये कुल दार का मां
जतरियां पबे ॥ ३॥ ॥ सवै दियो ॥ २॥ वीरये नीर मि
ज्यो जब आय के देगुन आपस मों न के स्यो हो
पाप धस्यो षलु वार के तां इजा स्यो न ही पिण आ

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ निवेदनं नमस्कृत्य
प्रणम्य भगवते नमः ॥ १ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हैं ऐसों जे सैं: बाह्रें बंबूल खल जां बदे
लजाये हों। नाथ न रहे नाथ एह नीति
अनाथ ही है: ज्यों नही हों महे सहाये
असाये हों। दास न रहे दास हो तो हों
हे निरनाथ जे ~~थ~~: विरह विवारी जे गो
आपने रहिये हों। ॥ २१ ॥

विजेमिंहवगतिमः अजतज्जयवत गजव
मरुतदेमिंघमालः गंगवाधो घजर्वध । न
मेधोसुपःरावूराउम्लङ्घुनरोः वारममल
रोध न्नपतीमोठामरो ज्जदण्डं रापुन
पुडुडुआमप्यांतराः कुकुनुउमिंहल्लेः
वमहिपतमानुमुगले

॥ श्रीजगत्वल्लभाय नमः ॥ अथ मुनिसाधोशंसा
 कृतकर्मण्यल्लतीश्रीलिख्यते ॥ मेरे मन मूढ काहे विक
 लविहल होत चुबलुज चिंता मन तेरी चित हरि है।
 धार्ये। धर अंबर विसंनर कहवत है मोझे दीन दु
 बल। केसैं के विसरि है अमर एमर एविड
 पजोधरावत है नीड पड़ेन कन कौं केसैं जांत
 रि है वारन की वार कबू करी नहि वार सौं केसैं
 के अवार है हमारी वार करि है एगिर कुं उवाय
 ब्रज गोप कूं वचायल ए अनल तै उवा स्यो पुन।
 बालक मंजारी को गज की गज सुं न ग्राह तै बुना
 यल योराव्यो वृत्त ने मधर्म पंन वं की नारी को राखे
 गज घंटा लल बालक विहंगम के रा

यमैत्रीषमब्रंमचारीको त्रिविधतापहुरीनिजसंत
नमुषकारीमोहितान्नरोसो नारीअपेयेगिरधारी
को २ कवलानिवायनिजरासनकीधुरेआया
ताकेविषवायविषनषामीरांबाईहैं कसवक
वलनैनसंतनकरनचैनसनतेननएनूपमंजन
कुंताईहैं, इंद्रकुकोहसोमानमुदोमाकंदयोहां
नैनक्तजाननाननामदेवजकीबाईहैं नंदके
कनार्निजजनमुषदाईबलंदवजूबे
हमारैसताईहैं ३ जैसैषगवालककुं
रातलंलाषायहनीचराषपनवसुतस
जंयोप्रीबतकुमाताकेउदरमजराषे
अमदीनोतिजलनकु पारयकेस्वार

३

धीनएहेप्रभुअषाजनजोनकौजितायौहेभार
 थहुं पावकप्रजारीतिहाराषीहेमंजारीकेसोदै
 श्रीनातराषीनाथमोउयेछनाथहुं ४ लीनैह
 अगारब्रजबासनकैहेतसेतीधनाजूकीधेनीह
 नबाहीनिपजाईहे श्रीषनकोपनःद्रौपदीकीज
 जराषीअसरणसरणकीतदेदमैगाईहे नहु
 तवचायौब्रजकरपरगिरक्षतौमैतानरनक
 तुमहुंनीमकराईहे करनहोअवारनवहुं
 येपुकारमेरीमोपरब्रजराजजराजकीकी
 आईहे ५ दीनबंधप्यानिहरेरणहुहुहुहुहु
 अयेतौअनेकब्रह्मथनैकहुये नेनेनेने
 वारेराजाबंधतेनिवारेनग्य

मोक्षमश्रुहिये नामाकबीरजीधगनकाऔरकीरता
रेचिरवाधुद्रोपदीकोजगतजमलहिये वेरीमांफ
बारमेरीबवारवारएहेनाथकरुणातिधांनमेरीह
थगहिये दसवैयोरुमौआगरतौनेकगुहार
सुनीतबदीनदयालकीरीतपरीकी दोरतहेतजके
तिजधांसमुवातसुनैजननीरपरीकी मेरीअवेर
बिजंबनयोसुकहतकसीरकरीहेहरीकी धाय
अवेरसुनीजबदेरकरीनहीविरसुदेरकरीकी
तादिनदेरसुनेततकालमलयकैकाजकुंआय
परेहे संतनहेतअनंतअपारसुआपसबैअव
तारधरेहे मेरीगुहारसुनोनहिकानसुकांनकहे
तपरेहे पोरहेवदपातमैतांतकेबीरे

नएकिजराजकरेहे पं. कवितः॥ तबतौ न कनय
 हायकाजवृजराजकेअरुंविदास्योमतधरीनचितं
 मांमाकी बालदररलाएवाजुलाहेंकेदयालकय
 गऊहीजीवाइऔरबाइबांननांमाकीःयंतनकोप
 नग्यालंगनराधाबालयेतीविपतहरीसंपतइंम
 तदेमुतांमाकी एहेबलवीरउंमजोपदीकोवधो
 चीरहरंतकरूनपीरअबमोहूंयेनिकामाकीए
 जोपदीकीलाजकाजधारिकातैदौरआएचीरहूं
 बंधायटेकराबीअतमीलकी पुत्रहेतनारायण
 नामलेतंततकालकाटेजमजालगतनईअजा
 मेलकी मूचीएकचावलकीषातहीनिहालकरे।
 कैसीदयानईउनबांननकुचीलकी मेरौहीक

रोमबीलंतेतहोकहावकीलंतबतौकरीनडील।
टेरसुंनपीलकी ॥ एहेजडरायहमकैहृतहेसुंन।
यसोऽबनीकैचितधारकैनेकनरीआयहे मेतौ
पस्योऊंगेलताकीकियेहीवनैगीटेलयवकुंवसा
यहरमोसैनवसायहे दयावंतकहियततौदया
कहकाजराषीमोसेअंतदीनतीनलोकमैनपाय
हे देषतकंधेस्योःविपतचिऊंओरमोहिकरिये
ग्रहायकिधुंलोकनहसायहे ॥ जगनकेस्वामी
तरजांमीकहावतहोकरतनांहिमैरीपीरएते
कैपरसुहांमावजीवनकूबिनकमांहिराज
कियेऽरकहारहेहरमोसेएकटूकैपरमोपैपरी
हेजीरउंमदेषतहेविनांपीरएहेघनस्योमधान

ब्रथावेतसूकैपर करियेसहायदेकैवेगहाय
यकरोपीनैकहाहेतहेजुओंअरकैचूकैपर१२
हमैबुमैवनीगाढीअतहीबहुसबाणीताकौक
हेकोनयोनिवारोअबनावरौटेरतहंनोरसा
फताकीपरवानकबूजांनोहेअेसोजोबकैहे
कोऊबावरौमैतोमाहादीनहुंमनाथकहिये
दीननकेनांमसोप्रमानअबकरोकपूनचावा
रौविडदकंविचारकेभुरारमेरीलाजराषोमे
रीलाजषोयहेतौजैहैबदरावरौ१३जदबऊ
तनईतौरुजातकियैगईसुनोनैककांनदेकै
जोहैबाततंतकीकरोगेसहायकबैडषितन
यौऊंअतमोपैजडरायहायनईहैडदंतकी।

अ१ हो अकों रजोर किये कलचा हत हो नंद के कि
शोर लाज राखो कूं न संत का ? हेरत कूं वेर वेर नौ
रसां फ मेरी अहो हर उन्हे पबर है कहुं ब संत
की १४ वेद औ पुरां न मै करे है वषां न औ सौ संत
जुग कै वीच धूपै हलाद रुकें तू वे हो वा पुर कै वी
च नीच कुल की न को न करी नील नी कै हथ प्र
नू न बे बो र कू वे हो त्रेता कै अंत उं म प्रो प दी की
लाज राषी पं न व कै काज दल कै र व पै कू वे हो अ
ब कल काल मै जू करी न य हथ मेरी नौ लोग चुं
कहे गे वे स बै ही ब्रह्म वे हो १५ ब्रह्मा म हिय मे स
नारद गणेश रटै नरु न कै काज हर आप दे ह्वा
री है मंगल कर न उष उं द कै हर न पुन पोष न नर न

जैसे रहे नर नारी है विरद नक्त वच्छ लसो वे दक्ष
पुरा न कहै जा न तहं ता कै अब षो वै की विचारी
हैं धार का के वासी न ए जा त हो मे वासी अब मेरी
होत हसी तामै हसी ए उहारी है १५ का रू कै तो
होत कर बेत ही निपाय द्यौ का रू घर प्रीत का
ज बाल द प वाई है का रू कै म जर ऊ य बा न रु
ब बाय द र्श नाई हो य नृ प त हं आ र सी दिषाई
है का रू कै दया ल हो य दालि द विनार द्यौ का
रू होत सा ह ऊ य हं नी य कराई है करत हो म
जा कै सो देव त हं आ षे म ब ह म हं तो हर उ मे
बाले वत लाई है १७ कं य रू कै कं ध तो स्यौ कै र
व कै वं य बो स्यौ गोपिन कै द ध चो स्यौ वने वट

पारेहे डंरागे पियां कुंबोरी कुबज्या सों प्रीत जोरी दो
नदेत बल बोस्यो चोर वीर वारेहे कारु कुलीन की सा
य करी श्रुंती नाहि वेस्या की रयी धव्या धनै से संतत रि
हे जुरा यंध्ये ती हरे कारिका पधरित बका के काज
मारे हर और के विगारेहे १६ कहान यौ जा पै पु मा
घर का के राज न एंगे कल के वासी वासी बाब के
पि वइया हे कबु मच कबू वारा हन रं मिं धन एक
बहु बावन आबे स्वांसी न वइया हे दिन के चरइ
या गुंज माल के धरइया पुन वंसी के वजइया प्रज
वन्कि रहइया हे देरन कुं प्रातरात पूबत न मेरी ता
त जानी हम वात न गुलात के प्रवइया हे १८ गोतम
की नारी ता की वात बकु विस्तारी जद्य पिउ धारी है पै

बिदर उधार के सुसासन जे पदी के बजावी च
के म अचे त बैला जरी पलई लाज कुंगमाय के
नयो बल हीन औ आधीन अंत दीन बीन ज बैग
जराज काज आपु खे प्रधाय के दीन के दयाल
नूता मै तो मने हनो हिक रत हो म हाय पेनी के
तन ताय के २० कब कौ डकारन कुं सुनत ना
हिए को बार ए हो नंद लाल उम के अैं प्रत पाल हो
के हंत हे दयाल पै दयान क बूदे धियत मै रीम
त अै सी आबे नी के पल्लु पाल हो धास्यो है नर सि
घरूप त बतौ पै हलां द काज अब तौ नं सो ज क
बुचली बह चाल हो नास्यो तेल कां न नव से हो
जाय कां न न मै सेष से न लेटे कि धुं पै वे धौ पताल

हे २२ वेरवेरटेरटेरजीनरुसिषलपरीहेरतन
मेरीऔरऔरयेअनिमांनीहे कपननएहेकिधु
मोतगहिरहेहोकांनहृप्याऊनआवैसौभौकह
मनमांनीहे कैयैकैउदारउमहोतहोपुरारअ
तगोपनकेयारबाबद्वरुकेदानीहे बकेबके
थकीवांनीकबऊनचेतआनीजांनहमजांनब
फकरतअनाकांनीहे २२ कुरुबराकसाईजा
७कीरमुखनाईकोलीबीपाऔचमारकीनरु
मननाईहे गुजरगवानकौसांगलेविहारका
ताकीतौपुरांनमैकथाऊयासागाईहे गन
काऔरनीलनीकृतारीयोप्रसिधजगदासीकौ
षवासासीऔसीचउराईहे नीचकैनिवाजा

वैकी तुं म कूं तौ वां न परी मेरी जात उंच प्रभू काहे
कूं वनाई हे २२ स्वया २२ याः॥ हरने निर मोहि
न देखे कहुं इ क अंग की प्रीत कहें न न ए गोपि
न कूं मिल गो कल मै मथुरा अ क दूर कै संग गए
पय पाय बहे नंदरांनी कि ए नय कं झ कै नंद ववा
यल ए और न अं ब क ह कारि हो जिन वै ती करी
तिन के न न ए २४ खुदा मा कूं संपत पी ब्रह्म चुक
टी न रचा बल पै ले ही लीने याग के पात पचा ली के
षा ए त बै रिष जो जन दीने नदीने कं झ की दासी
कौ चंदन ले पटरांनी करी बकु मान करी नै कारि
जया जग मै ज डुराय अ कोर कियां विन कोन के

कीने २५ कवित्तश्रया॥ उंमहोदयालप्रतपालरि
वपालजगमैरुंआधीनदीनअैयैवेतआंनियो
उंमकरतारओआधारनिराधारनकैमैरुंनिरा
धारताओउंचमनआंनियो उंमजगदीशजग
नायकसहयकहोमैरुंबलहीनबीननिहचै
करजांनियो जैसीसदकरियोतैसेरावरेविर
दनाथमैरुंअैसीकरोजिनइहेअरजमांनियो ।
२६ कारुकेआधारसेवाविणजवोपारकोहै
कारुकेआधारपितवित्तषेतगंमको कारुके
आधारविद्याबुधबलबाहिकोहै कारुकेआ
धारहथीघोडेधनधंमको कारुकेआधारपान्

दृष्टवेत्रपालकोहैंकारूकैआधारराजजोबन
मदकांसकोमैरुंनिराधारमेरीहरहीकरोगेसा
रेमेरैतौआधारएककेवलहरनांसकोरुंके
ऊकरैयेवाकेऊराषतहेलेवादेवाकेऊथित
वासीताकेषेतहीकाहेलाहेकेतेकमेवासीके
तेदांनरूकेआसीकेतेमांनतांनबीचकेविदर
सीलाहेकेतेमहसूरकेतेसबैगुननरघूरधी
रकेतेअतवांकारिनषेतमैअरीलाहेमैतौअ
तकरताकेउदिमनएकमूलजमोमतवारौका
रौहमारैउसीलाहेरुंकेऊप्रेमलक्षणरू
मैविचरुणहैनीकीनांतयेवाकरैजांनैविधुगां
नकीकेईततबोधयेती

आधै नित जोग गत जानै रोध पांन की केइ तन
वायना सुवायना तन जु यहै करै है उपासना
गले म शिव ज्ञान की मै तौ रुं अज्ञान ता के का
रु सौं पिबान न ही कोऊ कबू जानो रुं तौ जा
नुना धजान की २९ केऊ आन धारण म मा
ध विषै लीन रहै मिला वै प्रमात मायौ आतम
विचारी कौ केते कस कांम मंत्र जंत्र आतौ ज्यो
मज पै केते लोन पांन के गने म सुषकारी कौ
केते न ह कांम नित अजपा कौ जाप जपै केते जै
जै संकर धतूरा कौ आहारी कौ तारो अनता
रो एक आस रोति हारो मोय कोऊ कबु धारो मै
तौ धस्यो गिर धारी कौ ३० केऊ कस वादी के

तारे तार्यो नागकारी है अधमा अधम हुमतिन
की उधार रही अधम कुं उधारे अबवारी हुमा
री है ३२ अंबरी कनार दपहि जा दधुअन का
दिक वाअसु कदेव रुटत नितनां मकुं जि
हं जिहं नीर परी तिहं तिहं होर आए वाहन कुं
बाध एअंतन कै कां मकुं के ती वेर वप धारे
पतत उधारे के ते के तन कुं तारे और तारी का
मी वां मकुं पतत उधार न विर दचित धारो हर
जा पे के ते तारे तारो मोरु ये गुलां मकुं ३३ का
ल ही को देस मुर देस बीच तारे उमतिन के तो
नां मठां मपर गट गिना एहो मीरां बाई कर मां पर

मरां प्रदूषो जी जै मल और कूबरा पर अथर
आए हो और कूअने ककी प्रतंग पारषी ताहि
हेत नां मन कवच लजगत् मै कहए हो तारे
कोइ तारे अब तार बैसं हरे हर मान न ज धाम
काह गाम कूं भिक्षा ए हो २४ स्वयं रे रे ओ ॥
करुण निध को न युं एो दीन ती नां यं युं एं प्र
जु कै सैं सैं रे गौ दीन दयाल दया करियै जुग
इ कर हो तो पजा उधरे गौ मो से क हत के को
म कं पा निध या जग मै कहो को न करै गौ ता ते
अनाथ को हाथ गृहो रु घनाथ विनां डब को न
हरे गौ २५ कवितः ॥ दीन के दयाल हो तो मो से

आरको नदीन कपा न कटाव प्रचून कपिरीया क
श र क रित्त पा ज हु तो मे र ही न क्त जा व करि वी
स फ ट ह र मो प प स्या सो करे अ य र न स र न औ
र द्या नि ध क ह व न न तो नां म औ प्र मां न करे मे
री या नि या करे त जियै विर प के करि वी य ह
यं म री प ह को न न्या व न जो ना करे न ह करे २५
कर न प्र प रा व मो र सो फ नित को र को र अ त ही
क तो र म न आ र को न कां म ह आ वुर अधी रा
ता म वी र ज ध र त नां ह कं व नी च बो ली ब ह्म आ
बी आ ठा जा म ह्म अ र चान जा नें क टू च र वा न
ब्रू न त ह्म क बृ ह्म त प्री त सून तें त ह र नां म ह्म म

वैतकशीरखलवीरमेरीबिमाकरोकहैमाधो
 रांमप्रभूतिहारौगुलामक्षं २७ उहः॥याकरु
 णाबतीसकौं पढैखुंऐनरनार ताकैसबड
 षडंढकौं काटैकरुतपुरार २८ इतिश्रीसुन
 सीमाधोरांमकृतकरुणाबतीसीसंक्षणां २९
 ॥अथस्वेतांबरमूलचंद्रकृतकरुणाप्रकाश
 लिष्यते॥दीपकगणानचषुदियै हरैअगणान
 अंधार उरपदपंकजचंद्रियै चरणसरण
 चितधार १ सजुंसरसतमातनै गाउंप्रभुके
 गणान रांतानिरमलबुधकी जिनकौधरिये
 ध्यान २ मेकदंतगजवदनहै सिद्धरिधकौ

स्योम विघनविनारेवरदिये जदिये आविज्यां
म २ गुंणगाऊंजिनराजके मोमनमैहेकोर
वनागुणीकंदेवकै कैसै करियेहेर ४ अ
पणी अपणी बुधसै जथासगतउनमोन वि
ऊंकरजोडीगाइये प्रनुचरणंचितआन ५
मेरैघटमैआऊप्रनु वसोविराजोराज मेरो
मनकेत्रंसख अगलासरोकाज ६ प्रनु
तेरैपरमादतै ऊमीनरहेकाय दरअणकी
अविलाषहे जिनकोकोरपूराय ७ नाथति
हारेनामसै सदाशुषीकंदेव चाहेचितमा
हाराजकी नवनवअैसीसेव ८ देवइसी

अरदास है रविचैचरणों मोय साहिब सैं या
 न मुख रंजें, ज दंजें मी काय की नाय ॥ नर सु
 र किं नर मेव है, असुर पंषे रूआद पयुवादि
 क म बधाय है पुर मो त म म र जाद ॥ १० ॥ इंचे
 इना गें द्रुम ब र है तिहारौ नां म मूर ज आ देल
 यो न ही पार उं मा रौ यां म ॥ मै प्रनु मे रे साहिबो
 कै मै पा ऊं पार ॥ जंग वासी जीव के प्रनु ते रौ
 आधार ॥ १२ ॥ न व द ध रूप अथ ग हे प उ तां र बि
 ये मोय महिर करी मा हरा ज जी डुक ह क मन
 मुख जोय ॥ ३ ॥ राज गरीब निवा ज हो सरणाई आ
 धार चरण गह्वार की लाज मै प्रनु ॥ ॥

उंचनीचअंतरनही प्रभुजीके दरबार न कहत
दाता रहै संतनके निज सार १५ शिव सुषके
ता प्रभु पूरण वंदित काम गाई आहुं पंजर
नियदिन ली जैनांम १६ स्वचार २२ या ॥ नियदि
न लिये प्रभुनामति हारो उमंग रहै तनमै अति
नारी प्राण पियारे हो अंतर जा मीर खो मर जा
दरु लाज हमारी प्रीत धरी परमेसर जी गुण
गावत कुंजिन के उर धारी मेरे हो नाथ गरीब
निवाज कुंध्यावत है मनमै जग सारी १७ काहे
को सोच करूं माहाराज जोई लिखियो सोई
नोग विये प्रभु कर्म की प्रेरणा नो हिरलै जुं जे

एषा देवतपरचोदाषीथं करजोनि
 सुकविद्रुपोकहेनलोगदम्बुद्विज
 विद्ये १ इत्यर्बुदावजबंदसंमृष्टम् ।
 जिगृह्यतावविजय । श्रीयोधनयरेम् ।
 १८८८ वर्षे श्रीपञ्चद्विदुरज्जेर्ष्वेन्द्रे ।

क

जानें चूकजातघोडेपेसवारऽरु ।
 चूकजातापीतारेवित्रकवि ।

। ओङ्गतर

च

इयासगीगुप्तगावतगिरधारीको कहत
सिवलालभूरवीरकंतीचूकजातचूगल
कतचूकैएकचुगलचूतमारीको १ वाव
तफीमफकीजंगवावतजोवततेणमदा
कमदाकमदाक वायगोलीधराजजो
लेवतमारतचीपचटाकचटाकचटाक
विलागावतबांहजाटापटवाजतजांगप
टाकपटाकपटाक कविगंगकहैविज
याउगैरंगसैए सुषलोजीगटाकगटाक
गटाक २ लि।प।प्रधानसंगरेण॥

सौधमउत्तमनांगमिये प्रभुजीकुंजजैजाकेपा
पटलैसुषसंपतदैजिनकूंनमिये रेमनमोहन
आहिबकैविसबायविनाकिएमैरमिये रे
बंअनेतप्रथीपरहैजगप्रजतहैसबकाजकै
ताई उन्नमंमधमन्नतपलीतवैकोईजायम
मांएकैमाई कोउउपायकरैकरतारनमैअ
ममैअगन्यांनमैसाई नैरैतौएकप्रभुजीविना
जोरैतीनरंआयताआवतनाई २५ परमेसर
होपुरषोतमहोतिरलोनीहोनाथअंगमअपा
रे ध्यानअरूपीहोग्यांनकेनाथदीपैजगजो
ज्यूमांएहजारै परणब्रह्मउंहीपर

विषे गुण है जिन थारे राम कहै सो ईनां मन लौ परमेस
र है सो ईनाथ हमारे धन बाकुर हो माहाराज हमारे मि
रोमि एहि परमात्मजी निहचै सुविचार रटै निज से
वग पावत हे सुषमात्मजी मूलचंद रटै मन धीर ध
री सुनि यै अरदास कंकन मजी वेर ऊ वेर कला
विलला हो करो गुण कौ परकाय मजी ५ दिव्य अष्ट
रदि यो नहि साहिब दां न देउं कहु डबलि हेरी सी
लपालूं सो संतोष न हीत पता पतहुं जै श्री सक्त न
मेरी नाव यै नेट तपाय प्रभु जी के नौ करी है अ
सी संत न केरी मूलचंद कहै कहु कारण नहि वि
चार मै आवै सुकीजिये तेरी ६ संत नहुं प्रभुता

रेअनंतताकैपुंणकौकलनांमकुंलेउ सुरकिं
नरऔरमनुष्यउधारैजेऔप्रभुसुषकौथानह
मेउमोहिलियौमनमेरौप्रभुजीकेअमीमांहरा
जकिऔपमाकैउं तारणहारत्रिकुंजगकेहिवै
नेरीजोलावणकेतिकदेउं ७ तैरैतौनांवअंपा
उतिरैतौकहाप्रभुसुवतयंतांकोचेरौ बांयग्रह
जाकुंलेहोउधारैरैजिनकुंदुकनैनसुंदरौमे
रैतौएकहैएजगमैप्रभुतांमनरंजनआयरौते
रौ तौतिरजावैगीबिहीहमारीअहायकहैजगत
यकमेरौ ८ सेवनसुजनजानननोहिकहाविधां
प्रभुआरतिकेरी जलहायकैचं ।

करजोडकैवीनतीऔमीहेमेरी डखदलिप्रकुं
रहरोप्रनुऔरहरोनवनवकीफेरी नाथनिवा
जियेयेवगयेमुलवंदकहेअरदायजुतेरी २
उहा॥तेरीत्रिभुवननाथजी बिजमतकरैषुया
ल अजरअमरपदभोगवै निहचैहोवैनाल १ प्रे
मधरीपूजाकरुं निसदिनलेउनांम दरअणक
दीदारकौ सुधीरकुंइहकाम २ यवायाईयेवि
ये जिनमेंअरियैकाज इहभवसुषवाइइलाप
रभवमुक्तयमाज ३ गुणयमुद्रजिनराजहै अरु
तिरवैकुंनाव आपतिरैतारैअवर नेहीजैयुना
नाव ४ कानैकीप्रतपालना जूजलकावतिराय

तैयें तार कुनाथजी चरणर कुंलपटाथ ५ स
 वेयां त्रंया ॥ पदपं कजनाथ कै लुनाथो मन
 मेरो राज जैये मधुक मलन कै फूल चित दीनो है
 केतकी गुलाब कै सुवास मस्ताथ र ह्यो कंठ क
 रुने ह्यो जाय न वरो लय जीनो है वने वजायें
 वीणरी जियै कुरंग मुंण बाग दिवै चार पांणी रा
 गर मनीनो है मरण को नयनां हि बोनियै नया
 चो सुषं जैये माहराज की ऊकां मण कहु कीनो है
 हूं तो कुं अनाथ माहराज हो हमार नाथ जैये ही
 उपावियै सुतैये प्रतपालियै माता के उदर मांय
 कीनी प्रतपालनहि नवमाय ऊर्ध्व

हलियै संकट अनंत मलमूत्र की अई है ना पंआ
अरौ तिहारौ हे सुआहिब संआलियै कीने है अनंत
तउ हां कौलमा हाराज जी सै गाउं गुण ते रा नाथ
गर्नवा अटालियै २ नैन नवणा एजा सैनिरिषियै
प्रभु के मुख बेऊं कर जो डसी अआहिब सैनमियै।
सुणियै सिधंत माहाराज के अनंत गुण रसना सै
रहोई अइंद्रिय कुंदमियै पद की प्रदरुणा सै टाली
जै अनंत फेरी रमियै गुणों के संग सै सै दीहगमियै
सुक्रत कर ले ऊपारे सै सी हे हमारी श्रीषमूल चं
दक हे तातै नवमै नां हिनमियै २ बालक अवस्था
वीच आहिब की गमनां हिरमियै अणान संग बोक्

रं कहै है जो बिन वरपाई जंदत रुणी कै रंग नी
नौ न दसा बधाई धन लेवा कूं धाए है बंध ऊय आ
यो तिहुं सो चहे कुटंब के रौ माया कै जाल बीच
नो ह्यै बंधाए है साहिब कूं न ज्यो नाहि कै मै रु
अरे गो कां जे चेतरे अग्नान अंध परवाने आए
है श्री काचो है कुटंब जग बांध न सोचो जाए
जो बिन अथि रहै सु साहिब कूं न जियै रांग दो
ष बो न पारे कूं उर कूं पट बो न त्रि मा घटा यदे
ऊ आल स कूं त जियै मनै विचार लेऊ अंतर
रु विराजे नाथ एक चित धार पारे हर हर एक जि
यै पावै गो परम सुष जावै गो देह डष रस नारदं
ना नाथ क बरु

केसरकंघरघसकिस्तूरीनेलकरहैजीजैप्रथम
पौरचरणंचितदीजियै अगररुसुवायषेवो
दीपकनवनेवजलेवोफूलरुकीमालचाँदआ
रतीकीजियै गुणगावोनाथजीकेयेवाँमेसुधर
होमिथ्याबुधबोमपारेचरणामृतपीजियै एरेम
नमूँमेरेकारुकोविचारकरैवाकुरकीबंदगी
मैंमुक्तपदलीजियै दृग्गानकरजोवैजदआग
लविराजेनाथसबहीकैवीचदेष्टेजोतअतना
रीहै तिर्थंकरदेवकहैजिनमतकेआवधानऔ
रअवतारकहैशिवकेसुजारीहै सुखलमानक
हेपीरमोटीहैपौचजाकीआहिबतौएकजाकंस

मजी सिरपर औ यापनां हि कि ए ही कौ ऊवै
 मोपे मेरौ जो ऊवै तौ न लौ कि ए ही परनां मजी॥
 निमवासर धाउं जै श्री मो कूं यु बुध दी जै जसा
 कं वधारो नाथ या रो सब कां मजी खेतंबर मू
 लचंदरी न ऊय पावे एकी सर एवी
 चराबो मे स्वामिजी लिये
 दासः हबजी कौ
 नय न व
 नही व
 जिन
 एहि

सीसनितमेव ३ भाततातंत्रा तात्रमे प्रलुकु
रं बपरवार इह नवमेरी को करै याह बजी
विनें सार ४ याह बसु गुण नं नार है कै सैं क
ऊं वणाय पर सैं तां पातिक ऊं डै ये वं तां शुष
थाय ५ कुशल तीर कै सै र मै कर्म मोत कौ
राज बगता वरं बंधं ती कजा राता रां शिरता
ज ६ जा कै मूज प्रसिद्ध है श्री जय र न जी सा
र ताहि शिष्य प्र नु गुं ए र है मूल चंद मन धार
७ चंद पाड वसु तत्त्व कौ ए ह्ये बसर जा ए
कार्तिक सुद सैं नम दिने प्र नु का कि यां वषां
ए ८ सै सा गुं ए जिन राज का सुं ऐ न ऐ न

नार इह नव तय वाञ्छितो पर नव सुष अण
२९ इति श्री स्वतां बर मूल चंदकत करुणा प्र
काश संपूर्णः ॥ १ ॥ श्री रक्तः ॥ कवितव
पयः ॥ रिष न अजित जिन राज न जो सं न व अ नि
नेदन सुमत पय म्पार्थ वले चं प्रा प्रनु वंदन सु
बुध नाथ द्यो सुबुध न मुं सीतल श्री हंसा वासु
ज्य अरु विमल अनेत सं व ऊ च उ दंसा धर्म नाथ
अरु संत कुंथ अरि मल न मी जै मन सुवृत्त न मि
नेम पार्थ मा हा वीर न ली जै चौ वीर देवा च ऊं ग
त हरण सुष राय का शव पंथ ये कर जो उ न मी वं
न वर मूल चंदकै मन वसे १ वाच्य मो ना ची रं

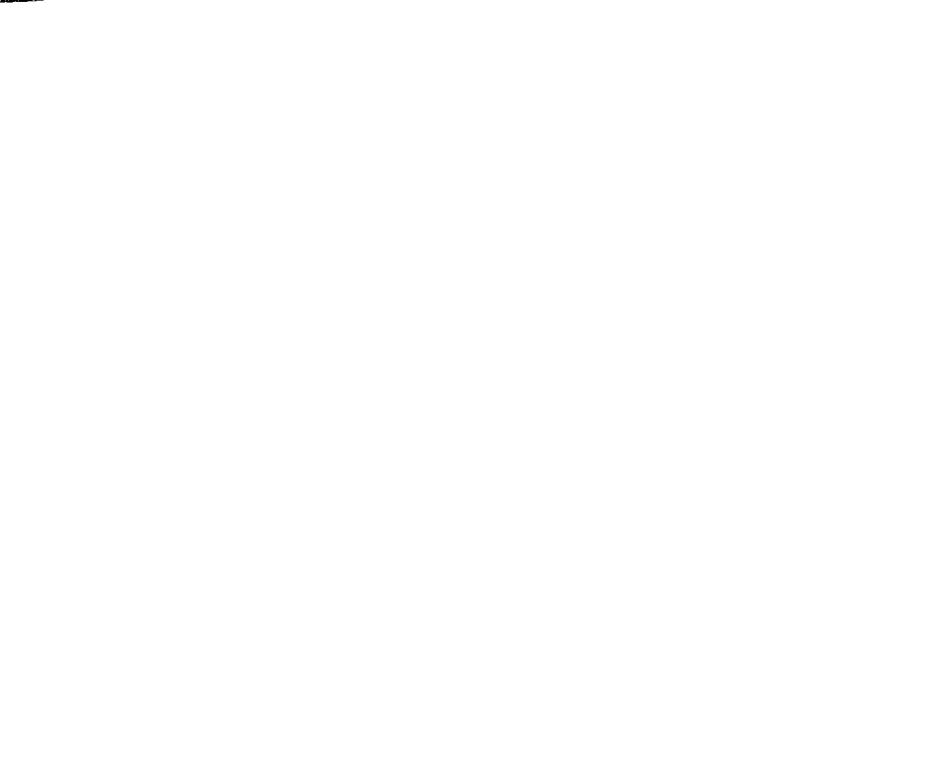
॥ॐ नमो जिया॥ रजकि मूरतरावरी। कसकी मेरेगा
ता। पलकमाय छम किन ईरकी रहन वात वस
रेन दिन कबूत छये परये विहे खलायाने नवा दर
ज्यंवरये। कहे मीरनि दर्षन योतनटा। टीकसकी
जीवनी सुगंध उततहे लहिरारसकी॥१॥ कपटी।
कोधिलालची कामी आतुंया म सोधे सोयेन हीपा
ये सोवे काम पाठि दीष अब किय ऊं दीजे। लीजे रब
कोना म प्राति उनही मेकीजे कहे मीरनि दर्षन रबो म
बछिजे मे छपटी किंसे कहीये जाय मिले सोम
ही कपटी॥२॥ जब लुंजी वसरी रमे गुन कर आतुं
या म। गुन कर तां अब गुन करे ताकोना म गुला म

ताकीये कामवाकीवहकरैहैं बंकरतेरोकाम निम
रउंवेहिनिमरेहे कहैमीरनिर्दोसवनाइतेरीतबलुं।
ओगुनक्षरेनांहकरेतुं।नेकीजबबुंरूपनौरजिन
करो अपनाइछेकबुनांह अपनाआतमरंगमेहे जप
नामनकेमांह जपे रात५ दिनसुरतलगावो आप
नाआपदिकारउसाभेजायसंनारा।कहैमीरनिर्दो।
स उंधसुषदेउंसुपना।षपनाहेजगमांहनहीकबु
दीसेअपना॥४॥मरनाजगमेंमुकरेहे औरमुकर
नहीकीया।तासुंनेकीकीजीयें हांनहारयोहोय हो
उनीमेंलीहूनलाइजाकीजीवनमकलजिहूनेमोना
पाईकहैमीरनिर्दोषरहोसाहिबकेसरणा।लहणा

॥ सवेद्याश्च ॥ अंकबन्नीषणलंकलिष्यो जुप
 राक्रमतौ हणमंतजतीकौ माघगयो मरुषवि
 बैजनजाननहारं पुराणबतीकौ देखै ह्योनल
 कौ जुपराक्रमगर्वहस्यो जुसरगपतीकौ कहवि
 न्यौ मरुषरूपनिधानके एकरती विनं एकरती कौ
 जुमतही ए विवेकविना नरमाजमतं गजदं धण
 होवै कंचननाजनधूलनरै मवमंडमुधारममुं
 पगधोवै बोहितकागउठावनकारनकारमाह
 मिए मूरषरोवै तूं नरदेहडुलेनं बनारसिया
 यन्त्रजोन अकारिजषौवै २ धूमतमातमतंगष
 रेजंजीरजुरेमदअंबबुचाते तीकं उरंगमनो
 गतचंचलपोंनके गोनकुंते वरुजाते जीतस्वेद
 मुषीअविलोकितबाहिररूपषरेन समाते ॥

सा न यो तो का हा उलठी जप ज्ञान की नाथ के रंग
नरा ते ३ उजल कारि जकी जै सदा यु न ध्यान हरी
गुण कं नित गावै ४ जा करै परमेस्वर की पद पंक
ज श्री पत कै चित लावे ताते हरे डम दलि दीना
के ता घर रिधु सदा सिद्ध आन प्रेम धरि नित सेवै
सदा मन माह त मोटो पद रथ पावै ४ मात पिता सु
त बधु मखी जल मित हि उ सुत कां मि एप के ।
सेव कर जम ते गज बाज म हा दल साजर रथ
थनी के उर्गत जाय डूषी विल लाय परै सिर
आय अक लहि जीक पंथ कुपंथ गुरु स मजा
वत और सग सब सार थली के ५ उहा जाषा
लोक मं जा नित जा के हिर दै हत समन सरव
न की प्रगट नेन के हटत १ श्री रक्त ॥

ॐ ह्रीं क्लीं नमः शिवाय नन्दरत्नतयार अलि
 कमलनम्रे बंधियो योकावैका १ एणहार २ अतयने
 हयैरविद्यै नन्दरत्ननयनाय अहिपतनीशुत
 प्रेमसुं चाटतहीनधजांय २ नैनपटकंतालमै अम
 दोन्हांबुंजाय रंगसुरंगीपेवियां मनपैलीमिलजाय ४।
 नटनसीससावतनई बुंटीसुषनकीपोट चुपकरये
 चारीकरत मारीपरतसलोट ५ उहैविलारीदेवतांमिं
 तमिलारीकोंन मनहरलैलौ अतकविन मैहजहरन
 हेलौंन ६



कहे। रामकथा अंधधुंध ॥ आजकल ओर
नये तये नये चिकतेन। चितके हितके धुंगलये
नितके छे उं नैन। वाक्पनाय कयि नायक प्रते
तद्वेदिता। नायक वाक्पनायका प्रते तद्विनि
धारणी रसविरो नायका प्रते तद्विनि
यकारे मजि प्रते तद्विनि मजि नहु पता
मूरधन तिलक सुरक चगमोती मंगनी लपट
रकोर विज्जारी वनाइ है कैकै पिकक कन अ।
जापन अजाप चारी गोवर्द्धन धन मधुर मृदंगन की
गाइ है पात पिंम पिंजरी किलीस पुषकी ने सर
चक्कन वीन पवन नायकान वाइ है। नवना।
निपट प्रपंचनी प्रगट कै कै कंचनी सी आजमे
धमालावन आइ है।

[illegible]

ये बते वायो हाथ आयें उर जारी होत जे में नर नारी
 होत वारे के आयें ते सुपना के हाथी आगे देर
 थाक जात जे में नर थाक जात आप के दवायें ते
 कहुत कवि निहाल में तान के मी हर कते हे वर क
 तन होत है उधरे आंत पायें ते दिन मोन पाप ताते
 चखे विष को मोला पके उतारे आप के सहस्र तनु
 जाये ते ॥ १ ॥ ओके मुष ना मन को ले वो मुष नावन
 को गावन मजार अबरान हो के जो रे की कृत
 प्रहृज देष हृत मयंक मुर्दा प्रे वित्त बडी ह
 पयो वन मरो रे की चुरे की वंमक नक वे मरु मक
 धूरे की धमक ये मं कत नगे रे की । कवकी ।
 उचक पर
 मचक ही मो रे की ॥ २ ॥

कटिकमाने जैसी वे सरसो अंग किधु अंग जो
पदी जिये। के सरसो गत मानु चीर में बिपाय ज
तवेरी ऊँकै संग किधु नैतर सज्जि जिये। सो धे
की लपट माँक करत ऊपट आली जा की अनो
पम बिबिदिष रजि जिये। कहत बुधरा वसव को
मक्षं प्रबोद्ध कै डैसा अलबेल कि पुरो मध
रकी। जिये ॥१॥ जै मै वाचक माँत जल लवर
सुगंध फूल त्वं परदेशी मित्र की पात्री जावत
मूल ॥ एक लसुरंग रंग आ चूषन वसो अंग मो
तन को छारही ये सो हत सुषपायो है तागरन वे।
जी अलबेली प्यारी सी तम में हरे रानी यह वे
जे उतिरात है करन कहै कत मेती रुचि पवित्र
इह मसुनत अवा जग जबा तीयरगत है। ९१

[illegible]

॥ श्रीजितायनमः ॥ रणजेमं ॥ पावापुरमोहवीरजिनेस
 रचाजोचंदणजावां पाठे हिलरंजणप्रहृष्टरमणदेवी
 थंगेमेआणंदपावां परमधुमधुममोहमपेवी पात
 कहरंपजावां १ पाठे गृहधर्मोपहिरक्षीतीया वलिमुख
 कीप्रवणांवां केसरचंदनमृगमदघोली विधिमुं
 अंगीयांरचावां २ पाठे मतरनेदमजाअतिमुंदर
 कारेकेमुकुतकमावां कंचनथालेनरीमुकताक
 ल वितयमुंप्रज्ञेनैवधावां ३ पाठे मंतउभारनज
 गभाधारन ध्यानहेनिसधसवां श्रीजिनचंद्रम
 दजयकारी जिनचरणंवितल्यावां ४ पाठे इतिपह
 रणसारंग ॥ नीकीमूरतिपासजिलंदकी नीं ० हरिहर
 जलाहिकमकुंदेये सूरतऐसीइंदकी १ नीं ० शुद्ध
 श्रीमपुगटकी मोजा ज्योतिजांले जिलंदकी २ नीं ०
 रतनजडितहे नुंऊंऊंमोहे मुखविउपमाचंदकी
 ३ नीं ० रसताआजमफलमेरीभूवना कीनीवामां
 दकी ० नीं ० श्रीधरकहचरणयुग्मेवो दातापरमा।

नंदकीपनीं श्रुतिपदं॥ मिडतीयानमरजीशेकरहेजे
एदेसी॥ डुरसोदंणीछिपासजी येबोदीनदयाल
जी म्हारीवदनाप्रनुजीअवधारजो नितरसुं।
विणकालजी २ म्हां धनवारकरदेसडो धनरो
डीगंमजी म्हां धनहरीयाडीछिजावडी नेटीजेजि
छंय्यामजी २ म्हां जिण २ मुखडमजसुंएपो ए
बेदेकधिदेवजी म्हां हट्टरणेठाहरोलायो धा
रीतहरीशेवजी २ म्हां डुंमुंजेनेसाहिवमित्ये कि
णहिकं मापप्रमाणजी म्हां म्हारेप्रनुस्वाराहे।
म्हारेकीम कल्याणजी ४ म्हां मैदेयवेलाताह
रे निरब्धोक्तोत्तूरजी म्हां निणदित्थीहिजमा
हरे मनमोस्नेबेहजूरजी म्हां ताहरेतोशेवक
घण डुंसाहिवसुविहाणजी म्हां म्हारेतोउंछाज
धणी नम्वेजाणमजाणजी ५ म्हां रूपसेवगनाछे
वानती एकवैलावधारजी म्हां उमवरणेन
छिचकरा देजोवारंवारजी म्हां ७ श्रुतिपदं॥

गणकेखो॥१॥ श्लोक॥ यंकितं जीतं मधुर्घृष्टं मत्स्यक
 मनुनायिकं काकस्वरयिरयिगतं रथथायानविवर्जितं
 तं विष्णुं विरम्येव विधिस्तिष्ठं विषमादृतं व्याकृतं
 लंतालहनेयं गीतदोषाश्च उद्धृष्टं सजाकोटिभ्यमंशो
 त्रं रथोत्रकोटिभ्यमोजपं जपकोटिभ्यमंशमनं उद्धर्मले
 यलीनाश्च ध्यानं ध्यायंति मधमा अधमा हृत्पदं जम्मा
 सजावपि धमा धमा रं वां वा न ज्ञानसंगमोपरपुले श
 तिगुरो नं मृता विद्यायां मयनां मयुयोषितिरतिः लोका
 पवादप्ययं नृक्तिः सृजनि यत्किरात्मदमने संचरः
 मुक्तिषलेः एते ये पुत्र्यंति निमृत्सुणस्त्रे न्मोनस्त्रो
 नमः रं न मुक्तिनिमात्रेण आत्मबोधे दयं विना
 पुषं न निष्ठतां याति वदत्सेव हिमकरा ॥ श्रीपरम
 हंसराय नमः ॥ सक्त्या देवलोके रविशशि नवने वं
 तराणां निकाये

काणबिमाने पातालेपलगेदैः स्फुटमणिकरले
धस्त्याशंधकारे श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिव्य
महंतत्रचैत्यानुवन्दे वैताण्पेमेरुमृंजेरुविकनक
वरे ऊदलेहस्तिदंते वन्दारेकूटनंदीश्वरकनक
गिरीनेषधनीतवंते चैत्रेशैले विचित्रेयमकगिर
वरे चित्रवालेहिमाद्रौ श्री०२ श्रीशैले मंअमृंजे
विमलगिरवरे अर्बुदपावकेवा सम्यतेतारकेवा
ऊलिगिरिप्रिषरे श्रापदेस्वर्णशैले अह्माशैचै
जायंते विपुलगिरवरे गुजरिशोहिणद्रौ श्री०३ आ
यते मेदपाटे दत्ततटमुगटे चित्रकोटे त्रिकूटे ला
टेनाटे चघाटे बिरपथनतटे देवकूटे विराटे कण
टेहेमकूटे विकटतरकटे विक्रकूटे वनोटे ४ श्री
श्रीमाले मालवेवामलयनिनिषले मेषले नेषले
वा नेपाले नाहले वाकवलयतिलकमिहले ने
षले वा माहाले कीमले वा विगलितमलिले जं

तेषां तमा ले ५ श्री ० चंपायां चंद मुह्यंग जपुर मधु
 रापत्तने चो ज्ञायान्ते कोमायां कोयलायां कनक
 उरयरे देवगिर्य चिकामां नायकपेराजगे हे द्यमपुर
 नगरे न दृलेतां मलधसं ५ श्री ० अंगे वंगे तिलंगे सुग
 तिजनपदे मप्रियांगे तिलंगे जो मे चो मे धुरिं देवरतर
 इव मे उल्लियां ले च पुं दे अर्धे मा दे पु ले दे इ विल कले
 लये कन्यकु जे पुरा दे ७ श्री ० स्वर्ग मृते तरि प्ये गिरा
 मिषर दे स्वर्ग तनिर तरि शैलां के नाग लो के जल
 निधि पुलने नूरि हाणां निकं जे । ग्रामे र ले वने वा स्व
 लजल विषमे डग मिधे त्रिसंधं ८ श्री ० श्री मत्त मे रो ।
 कले हौ रुचकन कवरे शां लम ले जे बू वृक्षे वृक्षार्वे
 इ वृक्षे रति कर रचिते कुंज ले मानुषांगे इ द्वाकारे जि
 नाशे दधि मुष मिषरे अंतरि स्वर्ग लोके ज्योतिः लो ।
 कैपि वे दे चुवन महित ले यानि ते वै लयानि ९ श्री ०
 १० श्री जैन चैत्यं त्रिचुवन मत्तिसं नं कि ना जां त्रिसं

ध्मं प्रोद्यत्कल्याणहेतोकलिमलहरणं जेजपंतिव
शिष्टं तेषां प्रातीर्थयात्राफलमनुलुलं जायते
मानवानां कार्यमिदं स्थित्योचैः प्रकृतप्रततेचित्त
मानेदकारैः श्रीमहाथिंकराणां ० इति श्रीतीर्थमाला
॥ मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्चनकारो नादिगुरुश्चतु
त्यादिलघुर्गुरुः जोगुरुमध्यगतोरलमध्यः योतगु
रुः कथितोतलघुस्तः १ मेरुमिः श्रियमातनो
तियजलं योरमं रवद्विर्भूतिं योवायुः परदेशद्वर
गमनंतयोमाश्रमं फलं जस्यैरुजमादसति
विबलं जेदुयं शोनिमलं नोनाकः युरवममुतं प्र
ऊरुते प्राक्षगलिनो फलं ॥ २ ॥ प्रथमोत्रैरवीरा
गः द्वितीयोमालकोयकः तृतीयरागहिंसी उच
उर्ध्वदीपकश्चाथा पंचमरागश्रीरागः षष्ठोमेघम
ल्लारक एंकराणेवधुर्पव हुत्राष्टप्रकाशित्ति ॥ २

॥ रामकलिगोरीललित सिंधुवरीगंधार बडाबिबाला
नरवह जेरउकीवरनारि २ कुमदकराबुआमा
वरी दोनीनिंवपलाश मादूमालवकउयकि एबह
विंठविलाय ३ विद्यावलबं हंमिनी कनटीका
ल्योण केदारउविनायेको नारिहिंदेलइपानि ४ वं
गजनीवधारविंद वयराहीमध्वार सहउचरसवि
हगदउ दपगप्रानआधार ५ मालीगउउगुनक
रि दुंरुं पंचमनाम मधमाधवीधनामरी मेघरा
गटहनाम ६ नटनायणगुजरी देशावश्वरना
ग आनीरामारंगवसंत वामनाग आराम ७ शति
आरामआगरबहरांग ८ क्षीमरागणीसमासोयम्
परिप्लेचितनागे काकः कुंजोदकंपिवति स्वाक्षीनेव
कजत्रे पूर्वः परपरेष्वरमति ९ युनाहितस्यम्यादा
त स्वर्ग्यालजितायुष्मद्वाह्यामेकवितनीता वृण
नृगुलंतिसकरा १० शति-युनाप्पितमृमिति, वैष्णु २

॥ छप्पयः ॥ प्रणवत्रिविधिजेनपाय तापउरपाप
 हरततन गहनगमतजिहगलिन सुमनचजकरन
 अमरयम दलिदगहनडखदमतहरनतमजिहउ
 रषगह कमवदलनशगकूर आननमउमचर।
 अगह सुरखयरनकरनमंतनसुजयचरनयु
 गलजिनवस्वचित नयहरनअष्टमनतजत्रम
 न कोष्टीमलिनरेणहसुकित १ इहा। रेणसुकित
 जलजलणहर तस्करपिलऊताप वनहरेण
 अहिरिणअवधि जिनवरकरऊरजाप १ छप्प
 यः कठिनरोगतनकलितचलितमकननह
 षिनचित सीसखलउषयहत पीककठमालर
 गतपित्त कोष्टगलितहियऊऊ सुकतनउरप
 रमासीय शोफजलोदरमीत धरनबिसउरम
 ऊध्मीय तनमिथलगलितऊयऊधिरतप
 विवधवातगंजनगबलन तिहेवारजपतवामा
 सुतन मदतगमतरीगहमलिन १ गुरिउधधि

गंजीर वनकधनपोतलोन्नवय सकलनरतधनमय
 न करनमंगलकहपोतकम्य चउत्तमकतपरस्वपल
 विभुलतिहेवाउसुवज्जिय गज्जियउदधिगंजीरपोत
 मऊन्नमरसुंपज्जिय धनघोरमयनजलधरधररऊ
 रस्वपलवादनऊरे तिहवारजपतवाप्रासुतन नि
 विधपोतजलनिधितरे रावानलवनदहलै लप
 टकिऊंतरवरजगह ऊपटस्वपलखगकपत दप।
 *टहरीतरुअदगाह नमतमृगासुरनगत बधमृ
 गरजगजनब्रह्म चीताफंफ हवुकत करतजीयब
 ऊकरककह मरसुक्ततनभतजलधलसुप्यल
 ऊथलघहदशविकरिय तिहवारैकपतघहसुऊ
 लकरियउं करियदेषवनहिरन इगविकरालवप
 नदह पुंठकेरवपकज गुंजहथलधरपटगह गण
 णजेमयनगगनमयनपोरसकरम्यज्जिय जरडा
 फाडजबाड नरउदेमृगषगनज्जिय तिहवारकाल
 साफणवुरतनरहवाटमूलतनिपट तिहवारजप

ह

कै रनीत वार हो विकट ४ वन अरेण दिन वाट ऊषल
 धन तरु अस्वंगिष्ट पल कने जौर जल पल लगह
 कत हां वीर युग जीय चपल सधन धन चमक ओम
 कं काच वजीय हिय होत गिथ ल कर सुकन क
 त स्करवल विऊं अरत कह तिहवा ७ हाक होत त
 रह कह ५ भैंगल मरु कर मरु रत ५ ग विकट अस्व
 जीय पहां मरु कर मरु रत ५ ग विकट अस्व
 दंड मल जुज दंड पेषत न गिर वर पिछह किछ
 तरु पर फुकत करत गल विकट सुक्कि लह ति
 दष नर नक्षत्र चपल तिह करन कोन करुन कह
 नः तिहवा ७ सुं मल न नय हट्य रत ५ प्रबल व्या
 ल विष सुं जः गुं ज कुल अरु सुं अगह अदिग
 ५ गत प अकर मकर करु कित मगह चपल
 हुत न चपल धमल जिहै तरवर धु जाह ज्वलत
 लजल जंत गुहिरा मां सुर गुं जाह कर को ध ५
 नर पर विकल अदिग वाट मजाह अरे तिहवा ७
 ७ मंत मंत अहिर हरे ७ अमर जुह ५ अमर

उदधननालसुगङ्गाय मङ्गायमुनहस्यधीर विक
 टरिणतालसुवङ्गाय धुङ्गायपरहरधरन षडगकर
 तनवलषहृह बुहृहपरलोहबीकत ननकवहृध
 रमुनहृह मिलघोरसघनपंकपलंभवहृवचहृके
 मनरघटविकट तिहृवा नमतहोत तनशुषनिकट
 टकलया नमतहोत शुषनिकट विकटवसुनीता
 निवारनः तारननिजजिनसंत संतकारनंजसुष
 मारन प्रणवतेवीमपास आसंवासासुतंअम
 हृ अश्वमेनकलइंडः जपतनहृवापतजमहा
 शुषदेनप्रबलनयनिबलयवः साकुलमुनजिन
 वरप्रवन मुषमदाअविजैअसनः करलकपा
 लुजैविनकवन ८ इतिश्रीपाश्वनाथजीछंदमंशुण शै=
 हृहृ॥ आद्युगाधृश्चिरी अनहृदयवहृथाहः सं अ=
 तांऊंतमिलआमणी विरहवनइवाहृविपुराविनुव
 नंतारणी जगमेकलाउजासः परातषपरवाएरवे
 आइएरणआसं कविः आसपरअंबाय शै

वयुग्मवरण्यधारेः कंटकनांजकपालः तहतस्यंतां
निजतारैः साचहियविमवाय ध्मंननुमनिरमलधारे
वाटघाटविकराल विषमविमहयनिवारैः निजविर
दमायगमित्येनही अकललारनहुजाइये करकपा
संतनिजकालिका आइसादेऽसाइये १॥ सादह
आवैसोमणी वीरहृष्टिवाहुरेगग योतियुगदेजाल
पा तपतउहारितेग ४ गंगप्रवाहकवियांगुणी देणी
सुखमदेव अलघुमतीनुजनहलषे नगतांकोटि
जव ५ योगलजोतअगमजगः नांजलमोकनगत
स्थितवेनिहरीऊवैः सत्रांदोटसगतः ५ छंदत्रोटक
। सत्रांदोटसवालीयरवगमसदः हटतेजनुजालिय
वप्पहुदा नवरंगनवेरतध्मयनराः पलपिंदवक्के
षलऐनपरा ५ अणपारप्रवाहअगममअषां प
रबालियमेवगधुरपषां अमनुतजतीमिध्वत्रा
लअषिः रगतालीयजगविरहरषे २ घनचंदन
केसरधूपघणवरणलियसगतरंगवण वपरं

गञ्जसुविश्रपणं जम्भजावकस्रोहतरंगजलं क
प्रकंचनजेहउतंगकणं घणलटीयधुधरघोरघणं ४
रूपिंदयकीमलकेलदलं बहुदेषतनजडरंगवलां
बहुपिंदयवालीयरंगवलं नजरतहिंगुलसुवटनलं
कदलीभजसुंदयजंघकहं लडलबिरेयमओपम
लहा घणधूरनितंबयमंमघणं नलतिध्रवकेहर
लंकनलं तहविवलओपतवेटतही जमुनाजलगां
गषलकजही म्यतमत्तवकबिसुघाटमहा कंचजे
मकपोतसुकवकही ७ अकलेकवदनमयंकअषां
चरतालायहदकराचषां नरचूंहरत्रमरडुंजन
ली अदभूतधनुषचूकटअलीनललीसमवेण
चयलनलं मकरालीयमांगनरीसमलं कबअल
कवामिगरंगकबीः धरकुंमलकांनमजोतधूबै ८
कबचीरसुचंगसरंनफबी नवनयदधिसुतपोयन
बी जडकंचुक्कजपरनगजदे अषीयत्तहुजपरदुड
अडे १० गलहारधमिगिरगंगभूर लहसोह

तमोतिलरा जगमगीयजोतजमावजगे लपटेन
नतारनवृंदजगे १५ वपयौवनवेसमरंगवणी कणी
यावलसोनतजेमकणीः मदमल्लसवालियजोर
महा चरवाचरणेलणचूंफवहा १६ वरवाचनवीर
महाकवकैः बणलटीय दोसटजोगबकैः नरप
जाईमदसमृद्धनरेः कलमज्जकंकातीयकेलकरै
१७ मतवाजणमदसुगंधमहे वरनाइवनीरज्जुंम
द्वहै घणनेवजवाचरमंसघणः मद७परनुक्
जसुंधमण १८ सहदोसवियोगणवीरसबैः हक
हककरंतहऊकहबैः फरगटकरंतनीरतफजीः
कहजैरवनाचुतमोरकली १९ इहा॥ मोरकली
नाचतमहाः जोगणजाजिजोत दोसविजोगण
वीरचहः इलिमकहोतउद्योत २० सुरनाजेआ
ऐसकल महमायंदियमामः अपरचितकहै
आपमुख त्रिपुराकीपेतांम २१ आकणदेतांष
जसकलः पपरातीषगहब वंकदगअरु

विकटवप मारणोदितं मन्त्र १८ भूमिलोचनधरक्षादवी।
 नाह्युनदसन्तूर वेषसुराणीपराग कर्त्तुमृकटं
 कर्त्तुमृकटं १८ उद्वेगोत्कटं ॥ कर्त्तुमृकटं कर्त्तुमृकटं ॥ ५८
 दैत्यपरागलस्रजधरी चकविरकायराह्यवणेः वी
 सहयश्चसुरस्रजधरी २० यदुत्थाट्टरगह्योः ॥
 यं हे गयधूमरवा जयराजगहे अनहदस्रजधरी
 कीज्यो नृकटालचमूं अगदितनगेः २१ ब्रह्माज
 त्रैलोक्यनाथगहे धरहाकथउद्वेगोत्कटं २२ घणनाज
 अगजगगनधुरैः जमनीममहाबलनद्विजुरैः २३
 चमासकर्मतकिलकनवैः रहचकविकटसदेवी।
 त्वेः एक एक कलहलद्वेसहकै वहजोध्वरावरं
 गंधकैः २४ वपरिंठषडहडरद्वजे गरलैघणघोल
 करीमगजैः उरउवतकालविहंगउडे पर्यांकनिष्ठ
 ज्ञापतंगपडे २५ गगनाटनिराद्विगगवहे गरजंत।
 मयंगलमोणगहे वकजाजबाद्वे २६

मंमधपात्रिनागधडा २५ ततकारत्रिपुरतस्सुलतकै
धधकारनवांतीयदेसधकैः षगषेलस्त्रिंजअथगप
पेः कटनीअउमाकरीमंगकपै २६ कलंक्कतरबीतंस
सज्जकबाण वहेतिरबक्कुबुगएजवाण वरविकहुअ
वधवीमवणेः हहहयत्रिपुरतदेसहणेः २७ मल्लाय
उबल्लीयकचषडा वकलगवीयतविहुंमवडा ह
यहिंमहणकीयकुहहकां धमरोलधमक्कपमंतधकां
२८ करधूमरलोचनहक्ककहैः गरजावहविज्जल
वागगहै मच्चरकरमेजत्रिनागहै मतवालछे
राकअथगमहै २९ नषराज्जुनहुजिकेनिकरा
वहहयजमेजप्रहां विकरा रणतालवअंतजवे
तरमे नमंऊंफपतांज्जुं दीप्लेमे ३० गटकालियेदे
सकरेगटका बहग्रीणमंमनैरेबटका नडंनंज
तनाज्जुज्जुज्जुवी तरवारऊडाफडजायतवी ३१
पुडपीट्युपिहहयतपडै अरलोटरैतमेउठअ
मेः रणजेममतीराईमंमरडैः करहककोलाहज्जो

तर्कहै ३२ मचनाइवमायमैमलासदां ननऊंतवलकी
 नीरनदां मचघोरछंभारअथगामचै. महुमकवजा
 तदेववहै ३३ घटमोहमहानमनघटा; पलकंगस
 गिरकरंतयटा गलफाहैजयलबयलगलै मषराल
 ३४ तजबगामहलि ३४ चमकैघेनदांमणषगचला वा
 ३५ वाहतलोहविकटबला गजनारथगाहअथाहसु
 ३६ रे रागमफ असुरकाजलरुडे: ३७ जयबधनगना
 मयोगिछुटे घणचधियलोहदृगधुटे करसायऊ
 ३८ रारअमीमऊडै पगअप्रविकटकुलदृपहै ३९ पा
 ४० उमगलयाटवोक्षरपडै धक २ छटतहस्रीलधडै
 ४१ फटकिंफरजेमकपायफटै: घणतपसुरंपतदेस
 ४२ घटै ३१ करहकीयनारदृत्सकरै बिलकारतषेत
 ४३ रपालधरे पथरे अमराजसदेतपडै नषकोअ
 ४४ रजोगणपत्रनरै ४५ करकोहजोगणनृत्सकरै प
 ४६ मरेजममातसमुद्धरै ब्रलवाचविरदहवेदवा
 ४७ कै: धरदृत्स अगमपलाधकै ४८ इलसिंननि।

मंनवजोधयषां नमषपरघालकरंतनषां रतरा
तबीजअबीजरषे चरवापुंरुपुंरुचकवषे ४०
घणअसुरनांजकपाटघडाः दहविदमनषमरुं
रुदडा अमराजउथेलअलगअरा धणयांणी
सुरपतअप्यधरा ४१ प्रतपालहमंतकरेअपणाः
करकोरुकत्सांणनहीकमणाः उषघाटदरदहदुर
दहेः गणमंतउरांमजरंगगहे ४२ कलया॥ गह
कमंतसुरांजी काजयाफलकंकाली धूमरजे
चुतक्षन त्रिपटरिणतेणताली चाउत्रीमूत्रवां
पुंरुः उष्टधरअसुरांजलीयाः मंतनिवाजणमुम
तमांणसुररंगंमिलियाः सुषद्यणसदासंतो।
अरम धालियांणीनितध्याइये करजोरुपदम
विजयकहे प्रबलबुद्धिरिदपाइये ४३ इतिश्री
माताजीरोबंदमंरुमि।लिसुजाबविजयेना॥
श्रीकः जीवंउमेशात्रुगणासदेव जेषांप्रशस्तेनवि
विदालोहं यदरुमांनजतेविकार तदरुमांप्रति।

बोधयंति १ चक्षुःमां हस्यते विद्वान् दंतो दृष्टान् मध्य
 मा अथ मा अट्ट हस्येन न हस्यंति मुनिश्चराः ४ जो
 जामेनिमदिन रहे सोता मे परवीन गजमुख सरि
 ता ले चले अनमुख चाले मीन ५ विग्रह इच्छंति तताः
 वेद्यश्च व्याधिपीडिता लोकाः पृथुकव्यकुला विप्राः
 द्वैतमुनिहं च निर्यायाः ६ आदर के नू बे पार के पा
 यदार उर्जन के उषरा ई मज्जन के पार है चाहे वाने
 चेरे न चाहे ता के बाती शाले चत्तुर के चक्र ठर प्रीत
 पर पार है चत्तुर के चाकर सुख मूरत के न फर व्या
 चीनी की वातन के रश्मि करि कुंवार है कहत करी मह
 मरु घट के दवा गीर मुं ब के जमाई ऐसी के किरता
 रहे १ आदर के नू बे निवुर मूर हतरू वै हं स जग के नि
 बुं क फिरे मन भु जे है सता कुं आमी मदेत मू ब को न
 नां मजेत जिन सुं गरज नां ह्यो तो मन म ले है वर है ॥
 तो आपन ऊँ

तो मुनि लोक न ले है कहा एक देख गउ कहा एक
रां गराउ एक घर मुंदे तो हजार घर उ ले है २ फले फले
न वेत यद्यपि धन व सै सुधा मूरष ददय अचेत जोग
सुमिले विरंचि सत १ यस्पनास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं
तस्य करोति किं लोचना न्यां विहीनस्य दर्पणं किं क
रिष्यसि १ कविता ॥ देवे अ न देवे उष दान ए
शुष दान न्यूक तन अं मू मुष धेय वोत रे पस्यो पा
नि पां न तो जन स ज्ञान गुरु जन नू ले देव उ जन ले
क उर तष रे पस्यो जगो को न पा प क ल पर त न
प ल एं क इ र ग यो ने हु न यो ने हु नी रे पस्यो हो तो
तो अ ज्ञान तो न ज्ञान तो ए ति मथा ए रे जी य ज
न त्पारे ज्ञान वो ग रे पस्यो १ धी र ज मो च न लो च
न लो ल वि लो क के लो क की लो क वि बू टी रु द ग
ए शु त पां न के के अ व अं ष अ ने क वि ने ष की रु
टी डो रु द र्द मि उ ता स व कां मु म नो र थ के र थ

की गंतव्य की ओन करे करता एक बार व्यो चित
 योजि हां वार विधूरी २ एक हां व्यो चित चाहिये
 उर लो बी च द ग को परैं बोहा को मान क मो त न।
 वे च के प्यारे को र क हा पर धा व नो व को कहें वा
 ऊर कां मन ही सब को वहां लाष छे एक प्रदीन है
 ना की शीत क हा कर वै में लुगे कर के इ क उर नि
 ना व नो बां को २ व द न प्र ना क हो क व न क व न
 ज पि ता के हा वे व द यो ग स न क व न ध के ग ७
 क व न छ हा वे ट प द व्य को क हा नो प्र रु क म क हो
 क व न पर धे क हा तं ड ल कु क ह त हो त क हा म य न
 उर में व्यो द व्य के अंत पर हर व्य पर व्य न।
 व र ण म क ध्या व ता क विला ल क है मंग ल वृ
 न न यो पा म जी ए व ता २ एक म में म व को प त
 ही नि ज पी हर ज्ञान की मुख लिये बा ह न मिं ध
 ग डि उ म या अव ला ष पि ता मि ल जे

अग जानन आपने के या पयपान दायो न स्नेह
ये न व जा कह मित्र युजो न धुना संघ व लो गज
द्वेष पाणि न सके लव द सु नि अ प्राण को न र स
अ को भव द प क ह रु न ग द्ये जी न वी स वा
वृत्त न वी न प क रु सु संपत्ति को स वा द सी स स
वृत्त न वी न प क रु सु संपत्ति को स वा द सी स स
रे हे हे कि स वा द नो नि रा ग पा स ग ते ते अ व
स वा द क क त के व व ए स वाने को स वा द क क
उर न के हे न हे न प तां ला प ट उ ढ प र स्यो ल
कं क रं जा न कि रं द क क द प टा क मारी छि न
की व रि हि व र स न न न न न न न न न न न न न न
अ म ध न वी जी स प क रु वी त त को कि
अ स न न न न न न न न न न न न न न न न न न
रा स का उ क स त र न क हे क वी ज त र द क
अ स न न न न न न न न न न न न न न न न न न

* दहिकेष्ट शालत बयान दीव प रेणी मिरा कया मानरी ५ जण जाण
 होय नार * २ *
 करकी १ पाइ हें दूर तत्ता जा हरन करगा त आली
 तेरे ताइ देष्पां की उके सेधी रथ रेणी देव की रू हार
 प्यारा दया ऊँ न आवे तोय मानव के मारे तेरो कौन
 काज मरेगे कहे कवि बुध वंतराय स्वराप मार ली
 जे वेर ऊँ ऊँ कल जे वेर ऊँ के देष्पां की उ पे दसा
 मरेगे ॥ १ ॥ या मुष पाणी पांगी ये ता मुष पाणी होय
 पाणी पाणी बाहिरो पायन मके कोय १ नेण के रीती
 लगति किण हिलषी नहि जाय लख लोक ऊँ ने द
 कर मग्ने हो पे जाय २ जे सैन नां हुने हो र ए ये जे
 सी नां हुनी धुब वडे घास कट जात है धो बस
 वकी ब १ मने दया ॥ मूरख ऊँ हिन वात दू श्री पु
 रदा मुष मां हि सुभार मदीनी काल रमै जल
 ज्यो वर वै हर धेन ही नू अने हापी बो ग्यान विना

अतः यौतनमोषतस्त्रवितांशं गरांमकोकी
बो ज्योबधिराकनेवीनवीजैद्रिगहीनकैआ
गेज्योनाटनटीबो॥१॥ बप्पया॥ परओगनप
धरेधरेगुनवंतगुनमोई चित्तकोमलनितर
ऊतजाकैनहीकोई सत्पवचनमुष्कहै -
पगुनआपनबोले सुगुणवचनपरतीत नि
सथेकबेनहोले बीलिसुवेनपरनिष्ठसुन
हवैतसबशुषकरै कहैबंदवमतजगफ
मे एंसुनावमजानधरे ॥ सरनांवजेसुतो
जाजलगलोपेनही बोधांऊपरबांण
नेगमियेनही ॥ गदषटकेकाकरो टणो
टकेनेंण वचनषटकेवावरो गयोषटके
शेण

॥ ननजालीवाली निमा चटकाली धुनिकान रि
 तपाली आली ५ नंत अयेवनमाजीन १ कोचाहृतहे
 विठुरवी कल्पवृक्षकोसाथ सज्जन विठुरन फिर मि
 लन अलोढकके हाथ १ वीळडतां मयलां थकी था
 स्मयल अंदोह परमेसर पाडेरे धे वालांत लण वि।
 ओह २ नोर वोरंतर वारेति मनेत्रं तुषार नरेश एतावां
 लेजिमवले वालणहार विशेष ३ मेजां लो घनवर।
 समी दुंगर जासीरे लचांच विष्णुले कागले चूंथी।
 नागरवेल १ संतश्चंद्रश्च विरक्तचित्ता विप्राः कृषि
 शां अपिराजकीया किं किं किमिच्छंति तथेव यं वै नैष्ठं।
 तिकिं माधवराघयानं १ कः खेनाति हती निमा चरपतिः
 केनं बुधो मद्यितः कः कीदृशं तमणी विलासगमनं कीना
 मराज्ञे प्रियः किं पत्रं नृपतेः किं

त मद्प्रसीत्तरमधमाक्षरपट्टं दत्तेन वाशीर्विव ॥ हे अंवे
गदनिगमं गदमधेन ह्यवेयणा किं वि उती एह सुभावे ॥
वेधेतस्मवेयणा होई ॥ विदितं ननु कंदगते हृदयं दयि
ताक्षरबुं बन जुष्टश्च वनिताकरता मर्या विहृतः पति
तपति तदुतरोत्तति ॥ अपित्यक्ता भिकृक्करी पामरैः
पेक्यकया अलंखेदेन नृपाला किं नयं विमलतले ॥
दिग्गजरक्तवृटंतकटंब सुरतवउरचितप्रीत परतर्ग
वडर्जनहीये दईनईहरीत ॥ अनुपमपंथितको
वचन ओम्सरविननसुहात राजसीतविनष्ट
गनिको तिलतपयस्मिन्जात ॥ येन पयो ही ॥
जानिये विगरीलेत सुधारयस्य वृणकी हारमे
नांबूकोट्यहार ॥ यो पावेबुध ऊपजे यो पहि
लाहिज हीय कारज सुधरे आपणे दुर्जनह
येन कोय ॥ कविता ॥ अहिपयाजमृग

जकहरगिरमृगअरुणवर कमलअलिल
चुंगीमृतालगजहिगपुरालमिर अलषम
धवषवदनाश्रिंहकचगवनवलगिय।
याललितनीवलउदितअंतरगतनगिय।
वृषमानउदितअधिकाइइह कालबनक
हियैवरन सतपुरसमानबंमननयेगम
नहरअथवामरन॥ मधुरवचनतेजातमे
उत्तमजनअनिमान ततकभीतजलके
मिले जेयैइधुपानि १ उष्टनलोमेउष्टता
केमेकुंमिषदेत भोएकुंमोवेरके काजरही
तनयेत २ जिहअमंगइबनलगे तजिये।
ताकोआथ महरामानतहैजगत इधुक
लिख्य १

अतस्मिन्मरणनञ्जितये देवो ज्म्वनराय।
अधि२बेदीये वां कैतेववजाय ४ उद्यमक
बुधनबन्धिये परञ्चायकै मोद गागरकै
अंफोरियै उद्योदिषपयोद ५ कारज।
धरेहोतहे काहे होतअधीर अमेपा।
यतरवरफले केतोमोवोनीर ६ मेयो
बोरोहोतलो जाम्मोगरजअराय कीजे
कहापयोधुर्क जातेप्पाअनजाय ७।
कहियेवातप्रमानकी जातेयुधरेका
ज फीकोथोरेज्म्वनते अधिकोषारीन
जण कतप्रेमकीराषीये अपनैमन

हिंसाहिं जेमेबायाकूपकी बाहिरनिकशे।
 नाहिं नजिकरतजागेविजंब विजंबन।
 सुरेविकार सुवनवतावतदिनजगे जाहत
 नलगेवार १० विनयतवायनजागही उलेन
 रकाशत अंबरअंबरशतके जुंझूकीअं
 त११ फूटकहैओबोलीये साचबराबरेहो
 य जुंझूरीतरनोतपर चंदवतावेकोय १२
 अंतरअंगुरीआरकी साचफूतपेहोय सब
 मानेदेवीकहे सुनीनमानेकोय १३ निवहैओ
 दकीजाये पनअपनेउनमानेकेयेहोतगरा
 बपेराजाकोओहिन १४ डेरकहतेहोतहेका

रजमिदनिदान चढधनुषकृतांचले किनां
चजाएवांत १५ होयेहुष्टकेवदतते मधुरन
निकयैवात जैयैकरवी।वेजतै कोमाठी
फलषात १६ टूटेवचनमिलापमैं कहत
तरुअंग वीनवजतज्योतारके टूटेरहत
नअंग १७ पंडितअरु वनितालती ओ
नितआश्रयपाय हेमानिकबऊमोल
को हेमजटितबिबबाय १८ आयांआ
रतांकरे पाबिजेतमनाय घरआयेहुज
न३६ वाईहुजनजाय १९ अपनेअमय
पर सबकोआहरहोय जोजनपारोचूष
मैं तियमैंपारोतोय २० सबसुआजिहोयके

कबूहनकरिये वात सुधरे काजप्रानफला
 किरिगरीवात २१ सज्जनके प्रायवचनते मन
 मंतापमिटजाय तेमें चंछनतीरते तापहातन।
 कोजाय २२ प्रलुकोंविंतासबनकी आप।
 ऊकरीयेनां हि जनमअगाउन्नरते हे हृध्मा
 तथनमांछिय सज्जनमोई जानिये रहे विप
 तकेर्मग तनबायाज्मंधूपमें रहे साधकके २३
 उबैनरकेपेटमें रहेनमोटीवात आधयेर
 के पात्रमें कैये अरसमात २४ गूढमंत्रगिर
 वेविना कोनकरासकैत धातपात्रविनहेम।
 के वाघनहृधरहेन २५ कबकृप्रीतनजोहि
 ये जोरतोरीयेनां हि जोतोरेजो २६

परतगुनमांहि २७ उबेनरकेविशमें प्रेमन
स्योजाय जैयेंयागरकोमलिल गागरमैना
समाय २८ गुनिहोयश्रमकष्टकरि जहेरा
दरबार वैधबंधमुकतायेहे तउउरछर
र २९ अगमपंथहे प्रेमको जहांवकराई
नांहि गोपनकेपावेफिरे त्रिभुवनपतिवनमां
हि ३० कबहुंफूटीवातको जेकरिहेपष
पात फूटेअंगफूटीपरत फिरपीबेपिबतां
न ३१ विगारनहारीवसतको कहोसुधारे
कोन नारेपय ५ उरायकें मिसरीजोरे
सुनियेंसबहीकीकही करियेंसुहित
ट सखबलोकराजीरहेसोनकरीउपचार
जनमतहीपावतनही जलावुरिकोऊवातः

ब्रूकतरपाईयेँ सौं सौं यमकतजात २४ प्यारी।
 अनप्यारी जगें यमं पायमबवात २५ पसुहावे
 श्रीतमें श्राधममें नसुहात २५ यरस्वतिकेर्न
 मारका बरी अमरबवात ज्योवरचेँ सौं सौं व
 धे विनषरचेघटजात २६ विरहपीर व्याकल
 यमिं आयोपीतमगीह जिमिं आवतनागतेँ अ
 गजगीपरमेह २७ देवनर्क सुंदरजगें उरमैंक।
 पटविषाद ईशयनकेँ फलनयम नंतरमटक।
 यवा २८ एक २९ अषेरपठे जोनेयं धविचार
 पगनि ३० चालतां छुहचेंकोअहजर ३१ जलेबुमै
 ऊँ सोकटत उपगरी उपगार तमवरबायाकर
 तहे नीकजंवनविचार ४०१ एक २ सुलगरहे

अनोदकसनबंध-चोलीसंवनजूर-चो ज
गतजंजीराबंध ४१ करियेंअनासुहावतो
मुषतेंवचनप्रकाश विनयप्रजेंप्रिसुपाल
कें वचनतनयोविनाय ४२ तनधनऊट
लाजकें जतनकरतजेधीर टकरकेगिर
तयें मुँहफेरतनहीधीर ४३ कहोकहोवि
कीवधि-नृजेपरमप्रवीन मूरषछैंसंप
६६ पंढितसंयतिहोन ४४ बहसंपतकि
कांपकी जनकाकपेलेय नावकमावे
करि विलयेंउरऊकीय ४५ योनिवाह्य
जगतकी रसरिसहेतहेत एक२पेंलेत
एक२पेंदेत ४६ अजेबुराहतेंफरें रांभोवा
योह जानतहेपेंडष्टकें ओगुनकहेन

देवतहेजगजातहे तरुममतासुंमेतजा
ततहीयाजगतकी देवतमूलीयेन
निसादिनषटकतततकतिनु परेनु।
आंधनिमोहि तिनमिंजगतगणिय जे
नहषटकतजाहि५५ जिहंततेही नि
हंतत चरतरुनआय जिहंतक
दोरीमंकी कोरीनचरुजाय ५६ हुन
मनकेकरपुजिये अदरुजिहंत
कार जेजिहंतपुजिये जेजिहंतपुजिये
विस्तार५७ अदितिनहिहंतपुजिये नोन
एकजिहंतपुजिये अदितिनहिहंतपुजिये
चाठकहंतपुजिये ५८ अदितिनहिहंतपुजिये

चारियैं होय जुलिष्यो नम्रीब षल गुल
काचकथीर्यो घूर तरली गरीब ५३
प्याजोगसब मिलत है जो विधलिष्यो
रूर षल गुल जोग गवारिनी रंन (पां
घूर ५४ तीतन गरवेरु नम्री युज
जिएण तीय लेगेर अपकरी की तोत
अहज की होय ५५ रसियां सुं रसिया मिले
किवलंति हां गुण गोत होयेन
कहणी नवे होत ५६ में जां न्यो ज्यें प्रजित
हेतब मै कीयी जसंग एकवार कै
वनें उरगये रंग पतंग ५७

श्रीं रसिकविद्या बलबुध्ननदरिय मृ
रषविनोदविकथावचन सुनसुनाउजग
वसिकरिय २ जाचकलघुपदजदे
उरकलंकपद लेलीडरजसलहे अयन।
जालचीजहेंगद उल्लतलेहे निपातउष्टपरा।
दोषलहेतक कमनविकलतालहे लहेंसं
मेंजुरहेचकि अपमानलहे निरधनपुरुष
झारीबकसंकटलहे जोकहेसहजकर
कसवचनसोजगिअप्रियतालहे ४ मि
थिलमूलदिठकोरेकुलवुंटेजलसिंचे ऊ
रधमारनवाइं नूप्रिगतऊरधसिंचे जेम

लीनपुर जाहि टेकदेतिन्हें है सुधार
 कृमांकटक गलित पत्र बाहिर सुनि मार
 जघुष्ट कौरे जे दै युगल वाडियं वारे फल
 जे भे माली ममान जो हप चउर सो विलये
 संपति अये ५ मूढत पश्वी मय कती डु।
 हमानी रहस्य नर नर नायक आलसी
 विप्र लखन वंत रूप न कर धरमी अह
 पुता उवे दपावी अधर मर त पराधीन।
 सुवि वंत हमि पालक निर देख हत रो
 गी दरिद्र पीडित दुख बहना।...
 ध्वित एते विहं बस्य मार माहि

ऊंशिः कारनित दु प्रातधर्म चिंतवे सद्गज।
हितमंत्रविचारै चरचलाश्चक्रं ओरदेश।
पुरप्रजाम्भरि रागदेषहियगोप
मृत्तममब्जलिं म्भितोरपहिचांनकठिन
कीमलगुनबोले निजजतनकोटैसंवेर
न न्यायमित्रअरियमणिणें रनमहि
कहियमंचरे सोनरिंदरिषुदलहने १ छ
पनबुद्धिज्महने कीपादिप्रतिविबोर
“हंनविधंयेयस्य द्धुधामयदितोरें
सनधनस्यैयकैरें विपदथिरता पदतार
मोहमरोरेज्ञान विषयसुनध्मानविमारे
अन्तिमानविबेदेविनयगुन पिसुनक।

का

मंदनप्रयत्नमुख प्रतिमंदनकविक ।
आधुमंदनयमाधिशेष जुजबलयमस्त
मंदनरुजा गृहपतिमंदनविपुलधन
नमिधंतुरुचिसंतकहं कायामंदनलव
नधन १० ग्यानवंतहतगहेनिधनपरिवार
वधवे विधवाकटेगुमानधनीसेवकहो
इध्मावे दृष्टनयमकैधर्मनास्तिरतात्र
प्रमानै पंडितकिरियाहीनराऊर बुद्धिप्र
वाने कुलवंतपुरुषकुलविधितजेव
धुतमानेबंधुहितयत्नायधारिधनसंग
हेएजगमैमूरषवदित॥११॥ सं१८८६
पोषवदि१ ति१ गुलाबविजयेन॥ श्रीः

[illegible]

राक्षसोपि नृपतिः परिसंकनीया अंकग
तापितमणिपरिरक्षणीया शास्त्रेनृपेव
युवतोवक्तुः स्थिरत्वम् १ दगाबाजह
णोनमे चोतेचोरकबाण वीरतत्त
२ शतोनमे बोलिवचनप्रमाण ॥

॥ अथ सुकमांतहकीम सुत्रकुंत
यद्वतकरतादे ॥ सुब्रा । परदांतीका
चहनकुंण । कल्यामारसके अरु
नमारे । १ । सुब्रा । नलाइकुंण । कल्या
आगला । बुरा होयलो आप बुराई

नांकरे। २॥ सुब्राजीवतव्यमेव ह्यथको
ण। कल्याणलाइकरयके। अयनां।
करीये। ३॥ सुब्राकिलनेकुवम।
मानये। कल्याइतराकुवम। पहि
जातोश्रीपरमेश्वरकोः हजोयया
नकोः तीजोमातापिताको। ४॥ सु
ब्रामोतसुं वुराक्या। कल्यादलिप
५॥ सुब्राकोणवातः लोगां कुंष
रावकरेः कल्याअन .

बो॥ अथवाक्त्रमियाषकोजरवो॥ ५॥
उब्रा॥ उवारिक्कणवातसुं होय॥ कल्या
कलहसुं॥ अथवाफियादसुं॥ ७॥
उब्रा॥ फिकरकोनवातये होय॥ क
ल्या॥ अकेजाइये॥ ८॥ उब्रा॥ कुबुध
कीनियांलीकोणः कल्यावियरमी॥ ९॥
उब्रा॥ बुद्धिताइकोनकोटे॥ कल्या
लातव॥ १०॥ उब्रा॥ येयारैमेजली
वक्ककोणः कल्या॥ विनामतलवसुं
नरमाइ॥ ११॥ उब्रा॥ मयलतक्कण

कुंडलीयें। कल्याजिनमें तीन गुण
 यः वेहलीधर्मात्मा॥ १॥ दुजे न लेन
 मंगी २ तीजेय कल गुण मंडल
 उबारा जाऊण कुंडल रारोषें। कल्या
 अकलीकों। अरु फूटें। अरु
 चुगलकों। अथवा नवीवात वना वि
 त्तों॥ १॥ उबारा जलाई कोण वा
 तये हाथ आवे। पहिली विना ला
 आरु देण। दुजे देणें विना न



तीजेविनापुतलबहरकिरीकाकां
मकरणा॥१४॥ उब्राङ्गणवातद्वय
रेविनांतवणे। कल्यादिलतवंतको॥
प्रमलंतः पहिलीवाणकः दावबे।
जः अथवाधरमात्माधर्मः ॥ उब्रा
कोणवातजासुंप्पारकीयोवाहि।
ये। कल्यातीनवातापहिलीनीतप्रे
अनीतनकीजे। इजेकोलठीकर
षणः २ तजिंअबयेप्रिताबोलण
३॥१५॥ उब्राविद्यायीवेतीक्या

एः कल्याणहोमः ॥ १५ ॥
 अथै॥ १॥ सुब्राह्मणः ॥
 बोटे होय तो निउ ॥ १६ ॥
 ब्रह्मब्रह्मैवेति ॥ १७ ॥
 बुद्धि वंत ॥ १८ ॥
 नैराणी कौणवा ॥ १९ ॥
 रुद्राण करण ॥ २० ॥
 ए आगल गवण वांते ॥ २१ ॥
 कल्याण का विना ॥ २२ ॥
 एः २१ ॥ सु ॥ २३ ॥

नां प्रजो कदेहि निगिन ही कल्याणव
प्रो ॥ २२ ॥ पुत्रावह कम्वा इ कोण
निदान मीठी । कल्याधीरज ॥ २३ ॥ पु
त्रावह वात कोणः कदेही पुरां पित
होयः कल्या कीरत अथवा जम् ॥ २४ ॥
पुत्रावह कां प्र कोण जो म्ब हा ह्मं ।
प्यारो लागेः कल्या इन्दी म्बो व स होणे वे
॥ २५ ॥ पुत्रावह कोण रोग जि म्ब का
इला जन होयः कल्या वे अ क ल की
२६ ॥ पुत्रावह कोण बला इ जि म्ब

श्रौं। आदमीनाजेनहीः कछालग
 तगीः ७॥ पुढ्यावह्कोणनिकं।
 चाईनीचतेनीनीचकछागुमाना
 २७॥ पुढ्यावमतकोणजोपरद।
 अथवांमेहरिमोनापावे। कछा।
 मतशीलमीठाबोलणा॥

जिन

५॥ पुढ्यावह्कोण

कछा

कल्यावचनवद्रांके ॥३०॥ पुष्टाव
ह्वैकोणवातमै। आषरजियमेनल
श्नहीकल्यागरीबऊपरजोरावरी।
करणीः ३१॥ सुकमानहकीप्रअप
नेपुत्रऊनयहतकरैहे। पुत्रपेहि
जातोश्रीपरमेश्वरकुंपहिचोनोंय
वजीवआपणीआत्माकरप्रानी
३२॥ युषउषचूषटषायवकीजा
नोः पारकोधनयुवण्डिगलबराव
रकरप्रानीः एतीनलक्षणपुरुष

मिंहियः परञ्चस्त्रीमातामहानकट
जोलेओजोलेओपरमेश्वरजोलेओः
जोकांप्रकरोमीनमीहृतमाफक
करोः उरथोनाबोलीः उरलोकां
कोतोलयमजोः सबकाअंतक
रणपहिचोतोः अपणप्रनकीवा
तकिंणीसुनकहणः मित्रः तोटेः
लाहेः अटकलीः वेअकलीसु
ऊबुधिसुंदरहणः बलगुल
ः हचांतोः एककांपसुधारेः ।

एकविंशतिश्रीपद्मिनीतनाः प्रस
तस्यानांशुं करोः अस्त्रीकोत्तरे
नद्वेष्टः वातवर्णायकरकलाक
रोमतिः पिताकीर्तिकरोः उर
जाकेधरजावोतोहाथजीन
टीविकांणेरारोः आदमीशुंमि
त्राश्च करोतोपारषकरकरोः वि
नांपारषमित्राश्च करतां
जिः कपडादिपवित्रारोः बेट
कुंपदवीः अद्वलमिषावोः।

बेटकीयंगति कुयंगति ॥ १ ॥

परषोः निजरराषोः जीमतां ॥ २ ॥

कुयंगसीषिः बेटकेलक्षः ॥ ३ ॥

बिजहांतां ईगाफलमतारा ॥ ४ ॥

रमपरलोकके वारुणोयिषः ॥ ५ ॥

धरप्रकरोः इत्यइयलोकके ॥ ६ ॥

स्तंकरोः मोजापावपीय ॥ ७ ॥

नावेपगपहरो जीमलेषः ॥ ८ ॥

लेलुतारो पहिलीनावीपगः ॥ ९ ॥

लोकोमपुंरमावोऽजि ॥ १० ॥

आआहमी होयतियऊं तिया कुर
मावोः ऊर रातऊं आसतें बीजोः हि
नऊं चारतरफ जोय कर बीजोः
एथो मा बीजियोंः जीवात आपऊं
न जीन लगी सो आग लेऊं जीन बी
न लगीः कां म बुद्ध सुं मय लत सुं
जिः बालक सुं मित्राइन कीजैः कि
सी की बेरायत पर विज्ञ नरा बीजैः
षरा पर ये वा कीरी टीऊ पर वितरा
बीजैः लूँ मरुतं न लाइन कीजैः

विगरेकां प्रकियां कां प्रकियां इत्य
मकेन हीः वपां सुं वपा वचन क ही।
येन हीः काङ्को आयंगो की जैन
हीः आयवाले कुं निरायं की जैन
हीः परघर विनां पुतल बजाव
णान हीः बीतिल मा इत्याद की
जैन हीः आपणी वरुण उर की
वरुण सुं मिता इत्येन हीः महरी म
रुद विवद तपण की जैन हीः अ

पणामालशत्रुमित्रहिनदिवाइयै
काङ्ककीनिंदानकीजेः रातउद्याडा
नसूइयैः सूरजऊंगेतेसूवेन
जुवाआदिदेविसनीकीसंगत
सीजेनहीः मोदीकरणेऊवेतो।
दिनआथप्रतेकीजेनहीः न
बेपव्यापारपहिलीमांगीयोघो
घणोवेचीयैः नफेहेतो
बुवेचीयैः उरलमाइतोफांन

रैमैनघातीयैः बायाभूदयैः एमा
कोमनकीजै जितमैआपषुवारहे
यः गुमानबोहीयैः कोमपेवांमाफ
ककीजैः उरयबकीइजितराषी
यैः आपणीइजितरहेः उरकोइ
कीहिमायतऊयजेनहीः जीप्पां
ऊपरलूणकीबख्खषाइयैः जो
जनआदरविनांजीप्रीयेनहीः जी
प्रतांपाणीपिजैः रातेट्टषाराषीयेन
ह

टवाराषेतोरीगऊपजे: अपणा
वबिपाइये कि श्री कंदिषा इये न
ही: बेटामुं पिणबिपाइये: नहीतर
बेटाप्रशुहोयजावे: ऊंनरसीवे
नही: इवदेषनिजरऊंचीराषे:
ऊंमंगतसीषे: जिणवास्तेइव
कमावाकीराषवाकीपोह्वहेय
तबपुत्रकंइवदेषाइये: जदि
नददजे: लुकमानहकीमअ
पणाबेटामुंकहताहे: बेटामु।

णिः कल्युग आवतौहे इमजीव
 केरषवारैसुणः याचः शीलः ऊ
 नरः इयः उद्यमः प्रीताबोलण
 शत्रूमित्रकामनपहिवाननाः इ
 तैतै अपणें जीवकेरषवौरेहेः ए
 नसीहत्तलुकमानहकीप्रअप
 णबेटासुंकहिजोनसीहत्त
 फककांपकरसीयो
 जीतहोयः

नही तायां ज्येष्ठान् जिय

॥यवश्यै॥॥वरषारुतुआयअवा
नअषीकह्योपीतमगोनकीयोअवह
सुनप्यारीअवेतयीहोयरहीय्यऊकै
नहवाल्नयोरीदईविरहानलजाल
उकिउरतैतनकैतपेतनईरीतनईबि
रकेगोनगयोउनकोअंगनोवरषाअ
वीचहीसूकगई॥॥धनदेजीवऊंर
बीयें जीवदेरबीयेंलाजः प्राणताजदे
यदीजीयें एकप्रेमकेकाज॥॥मूरता
मेरेमेत्रकीचजरहतहेविशकहान
योअंतरपण्यो मननिलआवेनिर

विरहो जाघटवयलहे ताघटकेया
 मांय इतनोहिउबन्धोबकुंत हाफच
 मञ्जुआय १

१	५	७	१०	१३	१५	२३	२०	
४	११	८	१५	२२	१८	५४	३७	
७	२	५	१२	८	१४	२१	२४	
२८	५१	५५	४५	२५	३५	१८	५७	
५७	४४	३७	५०	५५	४२	२५	३४	
५२	२८	४५	४७	३५	३५	५२	४१	
४७	५८	३१	५४	४५	५०	३३	३८	
३०	५३	४८	५५	३२	३७	४०	५१	

पतापलकनवीर्यं चीतायं छिना।
रातः श्मकरतां कुमयाकरोतो प्रापत
हारिवात १ जिहां २ अधिकसनेह ति
हां २ दुषब्धेचो गुणे ॥ एहो ओषध एह
मूलसनेहन की जीये २ ॥ समजण
हारसुजांण नरअवसत्तूके नही ॥ ५
सररो ५ वसांण रहे उं मटलगराजिया २
सबिनसमयो घुटसकी सदान एकी सा
र तिण धूबे पाहण तिरे ५ पनि स्वाहर ४
समेन दूके सुघरन र कक्क हत है दूक
चउरन के षटके सघ स मे दूक की दूक १

॥ विजिया कुं भगय निजोय कांये नाना ।
 नैमै पुता व के नीरु मै निराय धेय ली जीये
 कि मर कि रुत रि मिश्रि पताया लुंग मोहा ।
 जाय फलं नागर वे लट य सी जीये । चंदन
 दोधोरा कबोटा म करं ने का कं व न का
 प्याजा नर पारिय हित पी जीये विजि ।
 माघोटर मार २ चानी धां न वार २ ये क
 र पे वार २ पी जीये १ मार तं हि बर बिड
 म मांग ल हे ट र त हे ज ब ले त प रो इ ।
 जोल म हे ड ग ता के य बी निर भे बि ब उ
 र मो जा त म रो इ । मान य को रु र नो ह प

स्यो उमरां मऊं की मरुनो हकरो इ जह
निहारत होय कर मारत नैन कि धुंतर बा
र मीरो इ १ सांवन मास नयो चिरं वा
कल हत २ अपनिरुत पें। वंचत ना।
रिकें हाथं सस्त्री। तब कात वनाय कि।
योगतये। बिपियारें गटेज की आंच स
ही धो बिया फिट कार स हि सि कं डे इ
तनो उष पाय नयो कपरा तब कछूं न बि
लो ल करे ऊच पे। ३॥ हरि नो म हरी या
इ पाव स रुत आ इ दोर दोर दोर दो
ले सोर म न्यो वन में धं हटा ग हरं नि।

नमो गुरुपदोपासी-त्रपलांकेवमक २८
 ॥ २८ ॥ हे जीवकी कृताकी कृकसुन
 कृककुंतीतनेमें सांवनकी है नमनना
 वनकेमें वसुंकांक २५ ॥ तर्जुं इकेली
 व्याचुवनमें ४॥ जैये जलकंकमल
 जोहेकमलकं नमरवाहे प्रीनजोय
 जवाहे प्रीतावाहे रांमकुं ॥ ५ ॥
 कनैयावाहे पावयकुं परिप्याद
 पतंगवाहे कांमनिजोकांमकुं ॥ गिरव
 रकुं मोरवाहे वंदकुं ॥

रुक्मं नमस्वाहे परदेशीजोनां प्रज्ज। ज
वजं येत नवाहे स्वरुक्मं जोरणवाहे एये
मरोमनवाहे श्रीदेवेन्द्र स्वरुक्मं १ कवितः
जिंयकोवरइया कहजांने वातराजकी धा
यके कटइया कहजांने करपांनमे घोरे
कीधसइया कहजांने तरबांधगंधेको।
जदइया कहजांने सुरगपांनमे हलको
हकइया कहजांने दरयांधवालीको उ
हिइया कहजांने फूलपांनमे कुजसु
वहियतो जानत अनेकविधनीवकह

॥ कवितः ॥ जईयै जापा मजा कै माननां चमई कबु व
 षत विवार मबनांत मरुनो परै गुनै कीडुकांत अष
 दिक विन कौन नैत कामजू कदै तासौ प्रांत गहनों
 परै काम बग सीस पै न देत बग सीस कब
 कं रावै विन जादूर हनो परै संपत घटै सुखी छीत न
 ओ के शोदा मव मै रचुती यन मै चवुर कहुनो परै ॥
 मांन विन जै ब्यंजू कै लदा जोग मंनूत जै मांन म
 त्व दत धरुने गआ कदै मांन विन जर जो धन कै
 वा फंकं दसा जै मांन विन जी मै जो विदल कौ सा
 हो मांन विन राज गजराज मब बाव जै मै मांन
 तयार कूची नौ व मै पा कदै जब लग रहै देरुत
 जग हम नै बीचार लही मांन विन का कू मै मील बी
 हीत जा कदै ॥ २॥ साषी मष्ट बकत युधि
 किमिटेन सगा संगत मं युधरे नही ताके व मे ५

माणस्यिवद्वीजली बांधीतयेसुंदेहयू।
 किपिणमूकेनही। उन्नमतणमनेह। २। उज
 सिएनसुहाय। अमृतपीवीमानविष्ण। जो।
 विषदित्तुलाय। मांनयहितमरवुंनलुं २
 प्रचुतकींमवकीनजे। प्रचुर्ऊनजेनकोयः
 तजिप्रचुताप्रचुर्ऊनजे। प्रचुताघशहोय
 पशऊयसहअंतरोसुरहीयप्यांजोय ५
 कषमषायोपयऊवे। पयपिर्यादिसहो
 य १ सुजासितेनगीतेन। युवतीनांचली।
 लया। मनोननिद्यतेयय्या। मयोशीष्वा
 पसु २ चिंताक्रीधकवणगुणजिणशनकी
 जोहोय। मत्तआदरमंतोषधरा। लिष्पोन। म्हेकोय-

जाणसुजाणजोमिले। तोउपजेमनरीक
 णंजाण्पासुंगीवनी उदार २ द्विज १ यकूरमी॥
 विअऊकहे तेहथीमिगिह्व प्रवीवातस्य
 णंतणी आवीकहेमनसुध २ सत्ताविगा॥
 मणगुणगमण। उगुनकै नंदार जेबलापुष
 जालेनही तबजगेनलेगिंवार ३ जेप्रिहेत
 लिखितमेंतेप्रिउपजतबुध हेलेहारेहिरि
 वये प्रिटतजातसबबुध ४ श्रीक॥ ननेस
 हांयनिवराजग्राही विदेशगमनेकबनार
 ही एकंधनं सर्वधनं प्रधानं विद्याधर्म
 वावहेलि १ उत्तमआदरीयां ह।
 उन्नगेनही हरजिमधसूरंग

धवनायादि=

सर्वत्रतच्चित्रैर्मा^८ कंश्चुंबतिऊलडस
वो मे^९पाधरपछवंपनोझप्रपि चारु
मरुचै^{१०} मेरुक नटविटनिष्ठीवैनशरा
वें^{११} तंलमहस्वंपादिसं कलीनलं
विवेहेजा यावज्जालतिनांगेषु हंतेपं
देशगाजकः^{१२} उमत्रप्रेमसंरंजा हा
जंतेयछाता तत्रप्रसूहमाधवं^{१३} अ
हृदयिखलुकातरः^{१४} कंकमपंक
कलंकितदेहं गोरपयोभस्कंपितह
रु^{१५} रहरणसद्यमा कंवेवशी
कुरुतेनुविरामा^{१६} नूनंहितेकविब

शृङ्गारण

जाणसुजाणजोमिले। तोउपजेमनरीज
 णंजोएपासुंगीवमी उदार २ विज १ सक्करमी॥
 विस्रऊकहे तेहथीमिठिइध मावी
 णंतणी आवीकहेमनसुध २ सत्ताविगा॥
 ऋणगुणगमण। उगुनकै नंमार जेबलो
 बीलेनही तबजगेनलेगिंवार ३ जेप्रिहत
 लिखितमेंतेप्रिउपजतसुध होणहएछि
 वये मिटतजातसबकुध ४ लोक॥ नयेप्र
 हांयानिवराजयाही विदेशगमने
 ही एकंधनं सर्वधनं प्रधानं विद्याधनं जे
 पावहीति ५ उत्तमआदरीयां ह। उत्तमने
 उन्नगेनही हरजिमधन्यरां ह रावेपिण
 चनही २

छन्दोवादि-

सर्वत्रतस्त्रिमां कंश्चुवतिऊलउर
षो देयाधुस्पष्टवमनोशमपि चारु
नरुचैः देवक नटविटनिष्टीवनशरा
वेंडु तदमहस्वपां प्रितं कवीनल
विवेदेन यावज्जीवतिनां गेषु हतेपं
विष्णुगडक १० उमत्रप्रेमयुं तं रा हा
१० देयछाता तत्रमसूहमाधुवं अ
हृणिकुलुकातर ११ कंकमपंक
कलंकितछेद गोरपयो भरकंपितह
१२ सरहैयसलक्ष्म कंदवश
१२ स्वहितेकविद

पुस्तकालय
नं०

राविपरीतबोधं येनित्यमाज्जखलां
 तिकाभिनीत्यः यान्निर्विलो जतन्तारका
 दृष्टिपातेः शक्राद्योपिविजिज्ञासा
 लाः कथंता २२ धिक्कममं दमयः क
 कवेः कवि^{कविता}त्वं यः स्त्रीमुखं व^{२१}त्तिनश्च^{२३}
 प्रमंकरेति चूनावीक्षणक अहं विलो
 कितानि कोपप्रसादहसितानि कुतः श
 लांके २२ उरसि निपतितानां^{२४} कथंमि
 ध्नकानां पुकचित्तनयनानां किंचिदु^{२५}
 लितानां उपरिसुरतस्वेष्टस्विनैर्गंग^{२६}
 लीना मधरमधुवधूनां पुण्यदंताश्च^{२७}

क
 वि
 ५

विलासिनी

योजन

ऊँ छविया ॥ याच कहन कीटिवहे जि केन बो
 ले पद कहना सोय न्युष कहे पणेन ही प
 र पद पुणेन ही ॥ रघेन ही रावरं क की बात
 बात यि द्वा त नात हे बिनायंक की कहे ही
 न पद वेय सुनि जे रा द्वायेण की हरय मरन
 कहे नु द्वा द्वायेण चंक हणका ॥ हम तो फु
 लफ की रहे निरगुण रूप नियंक अपने
 दिज सात्व एक हे कोन राव कण रेक दो
 नै रहे ॥ सप्रक मन याच कहत ऊँ चूँ ना
 ऊँ कम वियं नै रऊ कम वहत ऊँ ॥ ५
 धन पद वेय ॥ जऊं ही पद पत ही रा

लख लखीन धन फल फकी रा २॥

ज्मानकटारीकमरमें। यब छथयमये
रा। धीरजहँदीजलकर कीयाकातऊँजे
र कीया० पकमकर गरदनमाया। मार
दूरमगदूरजातयँयांमयुधाया। कहे
दीनदरवेश। आपकीरहयअटारी। यब
छथयमयेरा। कमरमें ज्मानकटारी।
झुटांवूरीजहोतेहेजानतयकलाजह
न मेंदेवरीकीईजतगईगए। रावलकेभील
गए० जेद्वन्नीषलदीनो। यबछिऊटंबप
रिवार नाशरावणकोकीनोकहे। रिवार
कविरायलंककाछकेयेहूँटे पड़ेइयमा।

हैयगएयारयगएगएपुरोनेवाव जीधर
हेजंबुकएहे यमुंआषिवनराय यमुंयार
विमंयुधनहोइ र्बाननमतिहीण अंया
आंगलीकईकबोई कहेगिरधरक विरा
य। मनोमनंवांयूंयंया घटजावोअबअ
प्पनेनहोयारयंनहा हैया ५॥ हेरी॥आ
स्यामकैअंगलभुगा कजंगलगेती लगेटेरं
कलपावितबिततरकुगा घरमासुजगेतीज
मी न्या० कीतसगेकुलनेमरुगेरी लजत
गेतेभुगे दमकताथइरंजतहुंभकुये
रंतीपंदगीतीदगेरी हेरी॥ ५॥ २॥ इति॥

॥ कवितः ॥ कछंग एकरणीनयुग।
जीतल ए फजरक्षके वेरनामवाक्षके
रहगए कछंग ए विक्रमसूरजजेन
क्षके परधषकापन विरहजंयहगए
कछंग ए राजाजीतचवधे विद्यानिध
न कवियन कीरत मुषक्षमे कछंगए
रहगए छपणकंगाल इययुगमाक
मरगए सरमसरवेसरमरहगए

॥ श्रीकै॥ सकलकलुषं शीतेनाघेर्बलेन च
 लोडुरं अवलविहगस्त्रिदोपकेबद्धस्तन-
 पर॥ कृपणतनुगः स्तल्यदोचं छिन्न-
 कृतघ्नराष्ट्रस्य जतिप्रकृतिं दुष्टैर्देव-
 कारनामैरपि ॥ १॥ विषाः स्त्रिदोपके-
 हानकथयता ताडुमा एव ते च
 दानारजकोददातिवस्तिना ज-
 हीत्वा निशीः कोददोपरकाल-
 दरणे सर्वपिदकाजनाः संक्षिप्तः

वितहेसखिविषकमीन्यायेनजीवाम्य
हं॥१॥योत्वंचास्यसिमूर्खत्वं ग्रामेव
सतिसर्वदा अन्यविद्यागमेनास्ति
पूर्वाधरीतेविनश्यति॥२॥हृद्यजिके
रसजणा अरिगंजणातेहृद्य हृद्यजहा
थाऊपरे बीजाहृद्यऽहृद्यं गाथा॥३॥वनं
रायपयावी मलितिसगाहाणमुदरी
यणं तसद्वणेनग हीयाउ पश्चाउत्त
हृद्यं२ करजज्यांरा म्रिज्जसि ज्यांरा
सजबेज जंगलधृतनजनमसि हाक
बहिलियावेहल२ उलबित्याप्पिए

घर घर धरे द्युर्ग नि कलेवे हरे मिल
 न्क करी नर कर्क गोर घर बाप्यो जे घर
 मिले ही घर बाप्यो न चित घर बाप्यो घर
 फिरे ते घर मत बाप्यो कंत २ य ३॥ हय व
 र की हय जां ने क परा की हय जां ने सग
 पन नी राध जां ने महि लें को मानवो राग।
 तो बती सजां ने लखन बती सजां ने न्या।
 दफु निवे रजां ने अरथ हकी आनवो।
 सुबी कस बोहि जां ने दृप वतुराई जां ने
 ओर विध सबे जां ने राजरी तर हवी इत
 नो जाणो तो कहन यो उरबी जन रुध

२६

नाथ जां न्या विन बुजे
 सब जां नवो २

॥ अथ अर्चुसचलबंद ॥ ७८ ॥ ॥ उत्रगवरी
ममं प्रथम मारददेयसुमत्र अकल
ममपोईश्वरी कोरेटालकुमत्र आपका
बोईश्वरी सुधबुधदेमवाय गुणअरब
दरागावसुं जिएतिणआगलजाय २
अवलजगदअरबदह्मो जोलोमकुं
मंमार तेतीमक्रोददेवततवेपगश्नवे
पार २ वनंमतिवाषाणजे मारअतरि
जांत दीवअमोलकदेहरा ह्वकोरणी

घांत ४ अर्बुमाताईश्वरी वर्येपाहां।
मांवीच पुत्रनेरवदेयपाषती पकमिहं
णवयीम् ५ तीनलोकमेंताहरी लोपेनह
कोइलीह महिषासुरतेमारीयो वलक
रअहीयोमीह ६ बंछजातदेडकी॥ वल
करती।मीहपिलोलेमगतीहोयअमवी
रांहुंहली छनमिलियांदेतपरबबसु
वा पलेनरहकिणरीपाली ईश्वरमीम्
वाडियाअसुरांदेटरमंता रनेप्पीअ
मरापुरम्वगलिसोगअर्बुअर्बुअर्बु

मेंमिबजीइयदी१ दीवीअतिषांतअ
मोलकदेहरातवेजगोदीधलीतठेचं
दणबडकावकेसरंवाढेअविडनियों
जातउते महकेंअतिकमलमोनती
मूरतगिरंदनेटजेघदी२ अमरापुरी
रमियानेवालमसरिषारवतअनु।
लीबलपोरमइमडा बरिलिणवाज
रातमेंबांधीतवांजीमहणमंततिमडा।
उणसरीषापुरमवसेउणजागारा
कामजलियोंनिदी३ अमरापुरम

इसमि प्रिवनाथ अचरितः

ममारजिणरद्वकीया रागीत

पज्योरोवण देराजंका ॥ ६ ॥

गूठी उवेर जावे ईश्वर का

किसकी ४ अनरा नव

ऊण जायगा ऊं ह मा

गोपुषवेसर वेश्वर गंतम

रनामर्जु इमम

जायण पुरा मिर्जु न

बंधवांधेपकोपायतांवारि अंजंकर
जमवाच्याया जालेप्रिवनाथामेजिय
जमराष्टूटउवांरापिंमवाया नक्षते
जपालअनेम्राहविमलेकीयाबंधज
फीरकफीअम० हुनपीतजाववीनि
याजेनरपिंमरापापजगयापरा गरुथ
नेहंनरजकनेगायांषरेहेतुं दीया
षरा उणनायांप्रायबितकटेउतमेके
कायालेवानेरवर्जफइमि १

जि एमं जे गिं द अतीत जटाला के दवेव
ह्यसा हुकरे आपन हटसा क बाहिर
नहि आये ध्यान ग्यान जय जाप धरे पछि
संवीच सब दस्युं पुरे चढेन मके पंथी
हिं (॥) अ० चंपेला अने केतकी वं पा
थी बाप उमरायण दमि बीजो राजे बु
दे वं डा वं ऊला ज्यो जे सो जिहं वला जि
मि आवे त्रा जाय के ल अति जाकी त
विपुला बीऊ वेति मही ५०

पयोधरवृत्तिरिति हि हरेः ॥ १ ॥
 अथ हरेः पदवत्तत्त्वम् ॥ २ ॥
 दण्डयि त्रयवच्च निः ॥ ३ ॥
 अतः पञ्च त्रियगिरयोपि नास्ति ॥
 शः अतिरिक्तं छववत्ता ॥ ४ ॥
 कः इति तयत् ॥ ५ ॥ नापृतं न विरक्तं ॥
 रिक्तं मुक्तं नितं वेत्ता ॥ सेवापृतवत्ता ॥
 ता विरक्ता विषवच्चरी ॥ ६ ॥
 अवितांता कटाक्षाः ॥
 विरक्ताश्च ह्यस्याः ॥
 अन्ताः त्रियम् ॥

वर्धितं च स्त्रीणां मेतेषु षण्णां आयुश्च
५ स्मृतं नवतितापाय दृष्टव्यं नृणां
नो ^{स्मृता} स्पृष्टं नवतिगोष्ठयं सानाप्रदं चितं
कथम् ५ कामिनीकायकांतरे लज्जप
र्वतङ्गगतिं प्राप्स्यं चरणनः पांथ। तं नमो
स्मरतश्चकार ॥ ^५ इष्टमेषु किं पुत्रं मंष्टु ग
दृशः प्रेमप्रमलं मुखं घ्रातमेषु किं
तदस्य ^{मुखस्य} पवनः श्लाघामेषु किं तद्वचः किं
स्वाद्येष्टु तदेषु पल्लवस्यः स्पर्शमेषु किं
तदनुः ^{स्वाद्येष्टु तदेषु} श्लेषमेषु किं तद्वयोवने सुदृष्ट्ये

पुष्पि जराजमुखी मृगुराजकट
जविजाजविराजत निचकट यदि
राप्रजिह्वलदयेवमति कंजपकट
पञ्चयमाभियुग् १६ तिरुसू ॥

गिरुं पालिनी तीक्ष्णैः तापोतरवरतद्व
उण्डु विधेयं तं रा त्रे उभारे पस्मि

॥ हलो मौरवो ॥ बोलो वतं जे बोल अमिययं
माणज्वरे माणयताकै मोल जिणं शुक्र
जेतं ॥ १ ॥ काते वसंत समये वद किंतु स
किं वीयतं वीरहिता मुराः किमेति किं कृतं
मधुकय मधुपानमसाः कीदृग्वनं मृगगणः

त्वरितं तजेयुः १६ वविक